भास्कर 1/11/25 पेज 16

कार्यक्रम • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के प्रशासनिक भवन में आयोजन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का उद्देश्य अखंडता और ईमानदारी की संस्कृति को बढ़ावा देना : कुलपति

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के प्रशासनिक भवन में सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के अवसर पर सतर्कता जागरुकता सप्ताह 2025 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में मौजूद वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ पी एस पाण्डेय ने कहा कि सतर्कता जागरूकता सप्ताह का उद्देश्य अखंडता और ईमानदारी की संस्कृति को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सतर्कता केवल सरकार का कर्तव्य नहीं है बल्कि सभी नागरिकों और कर्मचारियों की भी सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर हम सबको भ्रष्टाचार के दानव से देश को मुक्त कराने के लिए दृढ़ संकल्प लेना चाहिए तभी देश 2047 तक विकसित राष्ट्र के संकल्प को पूरा कर सकेगा। कुलपति ने सभी उपस्थित कर्मचारियों को सतर्कता को लेकर सामूहिक शपथ भी दिलवाई। केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा निर्धारित इस वर्ष के कार्यक्रम का विषय सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारी पर था। इस विषय व थीम पर 27 अक्टूबर से 02 नवम्बर तक विश्वविद्यालय में सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन किया जा रहा हैं। कार्यक्रम को विश्वविद्यालय के सभी इकाइयों में भी आयोजित किया गया और संबंधित कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का आयोजन मुख्य सतर्कता पदाधिकारी डॉ. एस के साहु की अध्यक्षता में एवं सतर्कता इकाई की ओर से मनीष कुमार शर्मा एवं ज्योतिष कुमार चन्द्रवंशी द्वारा किया गया। मौके पर कुलसचिव डॉ. पीके प्रणव, निदेशक अनुसंधान डॉ.ए के सिंह, डॉ. आर के झा, डॉ. उमा कान्त बहेरा, डॉ. रमन त्रिवेदी, डॉ. आर एम शर्मा, डॉ. पी के झा, डॉ. एस के साहु, डॉ.सतीश कुमार सिंह, डॉ. रविश चन्द्रा समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी मौजूद थे।

शपथ लेते विवि के वैज्ञानिक व कर्मी।

भास्कर 1/11/25 पेज 16

वैज्ञानिक, कर्मी व छात्रों ने मनाया एकता दिवस

राष्ट्रीय एकता दिवस पर कार्यक्रम में शामिल वैज्ञानिक व कर्मी।

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा स्थित आधार विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में शुक्रवार को वैज्ञानिक, शिक्षकेतर कर्मचारी, संविदा कर्मी, दैनिक वेतन भोगी एवं छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया। इसकी अध्यक्षता डीन डॉ.अमरेश चंद्रा ने की। इस कार्यक्रम में कर्मियों ने शपथ ग्रहण भी किया तथा महाविद्यालय के अधिष्ठाता ने एक व्याख्यान दिया। इस अवसर पर कोऑर्डिनेटर डॉ.महेश कुमार द्वारा भी एक वक्तव्य दिया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ.कुमारी अंजनी ने किया।मौके पर महाविद्यालय के सभी वैज्ञानिक, कर्मचारी, छात्र-छात्राएं आदि मौजूद थे।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 4 नवंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में मौथा चक्रवाती तूफान के प्रभाव से बादल छाए रहेंगे। इस दौरान अधिकतर स्थानों पर हल्की तथा कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। दो दिनों बाद दोपहर से मौसम में सुधार होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
01 नवंबर	24.0	20.0
02 नवंबर	24.0	20.2
दरभंगा		
01 नवंबर	24.0	20.2
02 नवंबर	24.3	20.2
पटना		
01 नवंबर	26.8	22.5
02 नवंबर	26.8	22.5

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 01-11-2025

उत्तर बिहार में आज भर रहेगा मोंथा का प्रभाव

संस, जागरण, पूसा : उत्तर बिहार में अगले 24 घंटे के बाद मोंथा तूफान से निजात मिलने की संभावना है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने बताया कि चक्रवाती तूफान का प्रभाव शनिवार दोपहर तक रहने की संभावना है। इस दौरान हल्की से मध्यम वर्षा उत्तर बिहार के विभिन्न जिले में होगी। 7 से 10 किलोमीटर की रफ्तार से पूरबा हवा एवं 4 नवंबर से पछिया हवा चार से पांच किलोमीटर की रफ्तार से चलने की संभावना है। मौसम पूर्वानुमान के चार दिन की अवधि में अधिकतम तापमान 25 से 28 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान 21 से 23 डिग्री के बीच रहने की संभावना है।

मौसम विभाग की ओर से शुक्रवार का अधिकतम तापमान 22.6 एवं न्यूनतम तापमान 20.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। अधिकतम तापमान सामान्य से आठ डिग्री एवं न्यूनतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम है। चक्रवाती तूफान से किसानों के खरीफ की मुख्य फसल धान को काफी नुकसान पहुंचा है वहीं रबी की बुवाई भी अब विलंब से होगी क्योंकि खेत में लगातार दो दिनों से हो रही वर्षा के कारण पानी लगा हुआ है। अगात तेलहन की बुवाई भी काफी विलंब से होगी। विज्ञानी ने कहा कि जो किसान तोरी की बुवाई कर चुके हैं उन फसलों को भी प्रभावित करने की संभावना है। अभी किसान खरीफ फसलों की कटाई एवं रबी फसलों की बुवाई के लिए खेत की तैयारी में लगे हुए थे। लेकिन मौसम के बदले मिजाज ने किसानों को मायूस कर दिया।

Dainik Jagran 01-11-2025

अखंडता व ईमानदारी को बढ़ाना शपथ का उद्देश्य

पूसा, निज संवाददाता। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के प्रशासनिक भवन में शुक्रवार को सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2025 का आयोजन किया गया।

इस दौरान विवि कर्मियों को शपथ दिलाई गई। मौके पर कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य अखंडता और ईमानदारी की संस्कृति को बढ़ावा देना है। यह भष्ट्राचार सामूहिक प्रयास से दूर किया जा सकता है। भ्रष्ट्राचार के दानव को देश से मुक्त करने के लिए सभी को संकल्पित भाव से कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि इस वर्ष सतर्कता हमारी साझा जिम्मेवारी विषय रखकर सर्तकता आयोग ने देश के सभी लोगों को एक बड़ी जिम्मेवारी सौंपी है। मौके पर कुलसचिव डॉ.पीके प्रणव, डीआर डॉ. एके सिंह, डॉ. आरके झा, डॉ. उमाकांत बेहरा, डॉ. रमण त्रिवेदी, डॉ. आरएम शर्मा, डॉ. पीके झा, डॉ. सतीश कुमार सिंह, डॉ. रविश चन्द्रा, डॉ. एसके साहू, मनीष कुमार शर्मा, ज्योतिष कुमार चन्द्रवंशी आदि मौजूद थे।

शुक्रवार को विवि में आयोजित सतर्कता जागरूकता पर शपथ दिलाते कुलपति व अन्य।

इधर विवि के बेसिक साईंस में डीन डॉ. अमरेश चन्द्रा की अध्यक्षता में समन्वयक डॉ. महेश कुमार व डॉ. अंजनी कुमारी ने कर्मियों को शपथ दिलाई। वहीं पीजीसीए कॉलेज व प्रसार शिक्षा, अर्थशास्त्र विभाग में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत समन्वयक डॉ. सत्यप्रकाश ने शपथ दिलाई।

Hindustan 01-11-2025

सीवीआरसी से रिलीज राजेंद्र गन्ना 5 बिहार के लिए अनुशंसित : डॉ बलवंत

- आरपीसीएयू, पूसा के अंतर्गत श्री पूसा परिसर में कृषि विरासत संग्रहालय का उद्घाटन किया गया

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित ईंख अनुसंधान संस्थान के फॉर्म में लगे गन्ने की एकल गांठ पौधा एवं गन्ना के विभिन्न किस्मों का हसनपुर चीनी मिल का जीएम अशोक कुमार मित्तल ने गहन अवलोकन किया. आरपीसीएयू, पूसा के अंतर्गत श्री पूसा परिसर में कृषि विरासत संग्रहालय का उद्घाटन किया गया. गन्ना के एकल गांठ पौधे का निरीक्षण वैज्ञानिक, मिल पदाधिकारी एवं गन्ना उद्योग विभाग बिहार सरकार के पदाधिकारी व कर्मचारी ने विवि के वैज्ञानिकों से दर्जनों आवश्यक शोध एवं तकनीकों पर विस्तार से चर्चा कर गन्ना उत्पादकों को अधिक से अधिक लाभ दिलाने पर चर्चा की. ईंख अनुसंधान संस्थान के प्रांगण में विभिन्न गन्ना प्रभेदों का बीते दिनों अवलोक करने पहुंचे थे अशोक कुमार मित्तल जो कि हाल ही में हसनपुर चीनी मिल के जेनरल मैनेजर का पदभार संभाले हैं. गन्ना प्रभेद की अहमियत चीनी उत्पादन में अति महत्वपूर्ण है उन्होंने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में सीओ-0238 का पूरे उत्तर प्रदेश में खेती से हटाने का आदेश जारी है तो स्वाभाविक है कि बिहार में भी इसकी खेती का रकवा को कम करने का प्रयास किया जा रहा है. तत्कालीन व्यवस्था में सीओ-118 को ज्यादा से ज्यादा किसानों के खेतों में लगाया जा रहा है. इस उत्साह के साथ की कोई अच्छी प्रभेद मिले जो सीओ-0238 एवं सीओ-118 से ज्यादा चीनी वाली हो. मौके पर हैंड रिफ्रेक्टोमीटर से ब्रिक रीडिंग लिया गया तो पाया कि राजेंद्र गन्ना 5 की ब्रिक रीडिंग 19 से 21 प्रतिशत है, जबकि सीओ-0238 का 17 से 19 प्रतिशत वो भी माह अक्टूबर में. साथ ही सीओ 0238 में स्पष्ट रूप से लालसर रोग ग्रसित के लक्षण दिखे, जबकि राजेंद्र गन्ना 5 पूरी तरह से लालसर रोग रोधी पाया. डॉ. एसएन सिंह, वरीय वैज्ञानिक पादप रोग ने विस्तार से लाल सर रोग इनके लक्षणों को बताया, डॉ. नवनीत कुमार एसोसियेट प्रोफेसर एग्रोनॉमी ने गन्ना के बंधाई में जुड़वां पंक्ति के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि हथिया नक्षत्र के पहले ही किसानों को गन्ने की बंधाई कर लेने चाहिए ताकि उत्पादन और चीनी रिकभरी में ह्रास नहीं हो.

डॉ. बलवंत कुमार एसोसियेट प्रोफेसर आनुवांशिकी एवं पौधा प्रजनन ने बताया कि राजेंद्र गन्ना 5 अगात किस्म है जो वर्ष 2023 में सीवीआरसी नई दिल्ली द्वारा रिलीज और नोटिफाइड है जो बिहार, पूर्वी उतर प्रदेश, प.बंगाल एवं आसाम राज्यों के लिए भारत सरकार के कृषि कल्याण मंत्रालय गजट द्वारा प्रकाशित है. राजेंद्र गन्ना 5 की औसत उपज 85 टन प्रति हेक्टेयर एवं रस में सुक्रोज की मात्रा 18.0 प्रतिशत, नवम्बर माह के दूसरे सप्ताह से कटाई योग्य है. इस प्रभेद को मुख्यमंत्री गन्ना विकास बीज प्रोत्साहन योजना में संलग्न करने हेतु डॉ. देवेंद्र सिंह निदेशक ईंख अनुसंधान संस्थान द्वारा ईंख आयुक्त बिहार सरकार को संज्ञान दिया गया है. हसनपुर चीनी मिल के जेनरल मैनेजर ने वरीय वैज्ञानिक के कार्यों की सराहना किए और कहा कि हमारे लिए ख़ुशी की बात है जो मैने आंखों देखी ब्रिक्स रीडिंग राजेंद्र गन्ना 5 में सीओ 0238 से अधिक पाया.

Prabhat Khabar 01-11-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 4 नवंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में मोंथा चक्रवाती तूफान के प्रभाव से बादल छाए रहेंगे। इस दौरान अधिकतर स्थानों पर हल्की तथा कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा हो सकती है। दो दिनों बाद दोपहर से मौसम में सुधार होने की संभावना है।

हिन्दुस्तान 2/11/25 पेज 2

डॉ. रत्नेश कुमार झा नोडल व डॉ. ए. सत्तार बने सीआरए के पीआई

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा को जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम (सीआरए) का नोडल ऑफिसर बनाया गया है। जबकि विवि के मौसम वैज्ञानिक डॉ. ए. सत्तार को इस परियोजना का प्रधान अन्वेषक (पीआई) बनाया गया है। पहले इस कार्यक्रम के पीआई डॉ. रत्नेश कुमार झा एवं नोडल पदाधिकारी डीआर डॉ. अनिल कुमार सिंह थे। मिली जानकारी के अनुसार सरकार से सीआरए फेज- 3 की स्वीकृति मिलने के बाद से विवि इसे और गति देने का प्रयास कर रहा है। इसको ध्यान में रखकर विवि स्तर पर यह बदलाव किया गया है। इसमें दोनों ही वैज्ञानिक अपने अनुभवों का भरपूर इस्तेमाल कर सकेंगे।

पेज 14

केले से चिप्स बनाकर उसे बेचने का व्यवसाय किसानों के लिए बेहतर विकल्प

बाजारों में केले के चिप्स और कुरकुरे की हमेशा बनी रहती है मांग, इसका चिप्स पूरे भारत में मशहूर स्नैक के रूप में विख्यात, स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा

भास्कर न्यूज | पूसा

केला उत्पादक किसान केले की खेती करने के अलावे केले से कुरकुरे और चिप्स बनाने का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी को दोगुना कर सकते हैं। केले के चिप्स और कुरकुरे काफी स्वादिष्ट और पौष्टिक होते है जिस वजह से इसकी मांग हमेशा बाजारों में बनी रहती है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय समन्वित फल अनुसंधान परियोजना के तहत मौजूदा समय में कुल 74 किस्मों के केलों की खेती की जा रही है। इनमें से कुछ प्रजातियां ऐसी है जिन्हें लोग पका कर खाते है जबकि कुछ प्रजाति ऐसी है जिनका इस्तेमाल लोग सब्जी के रूप में करते है। उन्होंने बताया कि सब्जी वाले केले से चिप्स और कुरकुरे बनाए जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि केले के चिप्स और कुरकुरे बनाने को लेकर किए प्रारंभिक प्रयोग में इसके परिणाम काफी सकारात्मक रहे हैं। केले के चिप्स और कुरकुरे एक रोचक डीप फ्राइड स्नैक रेसिपी है जो हरे और कच्चे केलों से बनाई जाती है। उन्होंने बताया कि यह स्नैक रेसिपी दक्षिण भारत में काफी मशहूर है और इसे खासकर शाम के स्नैक या फिर डेजर्ट के साथ परोसने के लिए बनाया जाता है। उन्होंने बताया कि इसे बनाना काफी आसान है चूंकि इसे बनाने के लिए सिर्फ कच्चे केले और इसे डीप फ्राई करने के लिए तेल और स्वाद के लिए नमक की ही जरूरत पड़ती हैं। केला का चिप्स पूरे भारत में एक मशहूर स्नैक के रूप में विख्यात है और इसे कई अवसरों पर खाया जाता है।

केले से बनाएं गए चिप्स।

अच्छे उत्पाद के लिए : ऐसे बनाएं केले से चिप्स और कुरकुरे

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान सबसे पहले कच्चे केले का छिलका हटाने के बाद उसे मध्यम आकार के स्लाइस में काट लें। फिर इन्हें एक बड़े कटोरे में डालकर उसमें 1 चम्मच नमक और आधा चम्मच हल्दी मिला दें। इसके बाद इसमें 4 कप पानी ड़ालकर इसे अच्छे से मिलाएँ। हल्दी मिलाने से चिप्स गहरे पीले रंग के हो जाते हैं। अब पानी को पूरी तरह निकाल दें तथा इसे गर्म रिफाइंड के तेल में डीप फ्राई करें। ध्यान रखें कि चिप्स अच्छे से बिना एक दूसरे से चिपके हुए तेल में डाली जाएं। समय समय पर इसे चलाते रहे और मध्यम आंच पर फ्राई करें।

ध्यान देने योग्य बातें

केले को काटने के बाद ज्यादा देर न रखें अन्यथा इसका रंग काला हो जाएगा। इन्हें गर्म तेल में डीप फ्राई करें और आंच को मध्यम रखें ताकि ये एक समान रूप से सकें। चिप्स का रंग पूरी तरह से प्रयोग किये गए कच्चे केले पर निर्भर करता है। बनाना चिप्स मीडियम स्लाइस में कटे हुए हों तो ज्यादा अच्छे लगते हैं।

दो कारणों से ज्यादा पसंद किया जाता है केले का चिप्स

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि केला से बना चिप्स दो मुख्य कारणों की वजह से काफी पसंद किया जाता है पहला तो इसे बनाने में बहुत कम सामान और कम समय की जरूरत पड़ती है और दूसरा सबसे बड़ा मुख्य कारण यह है की इसका कुरकुरापन बाकी सब्जियों और चिप्सो से कई गुना बेहतर होता है। उन्होंने बताया कि कुरकुरे और केला का चिप्स बनाने के लिए कच्चा और नरम हरा केला का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि हल्दी मिले हुए पानी में इन केले के स्लाइस को धोने से चिप्स पर चमकीला पीला रंग आता है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 5 नवंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं। मोंथा चक्रवात के कारण पिछले पांच दिनों से लगातार हो रही बारिश ने जनजीवन को पूरी तरह प्रभावित कर दिया था।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
03 नवंबर	29.0	22.0
04 नवंबर	29.0	22.2
	दरभंगा	
03 नवंबर	29.0	22.2
04 नवंबर	29.2	22.2
	पटना	
03 नवंबर	31.8	24.5
04 नवंबर	31.8	24.5

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 3/11/25 पेज 5

जलवायु अनुकूल कृषि पर देंजोर

पूसा, निज संवाददाता। जलवायु अनुकूल कृषि समय की मांग है। यह गांवों की तस्वीर व किसानों की तकदीर बदलने में अहम भूमिका निभायेगी। सरकार ने इसकी (सीआरए फेज-3) स्वीकृति दे दी है। अब राज्य भर के कृषि संस्थानों से जुड़े वैज्ञानिकों की टीम को जमीनी स्वरूप देने की जिम्मेवारी है। सब कुछ ठीक रहा तो यह लाभकारी खेती के साथ रोजगार के भी अवसर प्रदान करेगा। इसे राज्य के सभी 38 जिलों में कार्यरूप दिया जायेगा।

क्या है योजना: इसके तहत प्रत्येक जिले के 5 गांव को चयनित किया गया है। यह वैसे गांव होंगे, जो राज्य सरकार के कृषि फार्मों के करीब होंगे। चयनित प्रत्येक गांव के निकट के भी 9 गांव को चुना जायेगा। जहां प्रशिक्षण व एक्सपोजर विजिट के लिए विकसित किया जायेगा। डीबीटी पोर्टल से जुड़े किसानों को इससे जोड़े जायेंगे। अब तक डीबीटी से नहीं जुड़े किसानों को भी जोड़कर इस टीम में शामिल किया जायेगा। इसके तहत 5 सौ एकड़ खेत में जलवायु अनुकूल खेती होगी। जिसमें 3 सौ एकड़ में धान, गेहूं जैसी फसलें होंगी। तो 2 सौ एकड़ में सब्जी उत्पादन कार्यक्रम संचालित होगा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के जलवायु अनुकूल कृषि (सीआरए) के नोडल अधिकारी डॉ आरके झा ने बताया कि चयनित गांवों में मधु उत्पादन को लेकर 50-50 बक्सा रखा जायेगा। वहीं सभी चयनित गांवों के 50-50 एकड़ में सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के माध्यम से खेती को बढ़ावा दिया जायेगा। प्रत्येक गांवों में 10 एकड़ में प्राकृतिक खेती का मॉडल व 10-10 वर्मी कंपोस्ट यूनिट विकसित होगा। जबकि प्रत्येक जिले में एक-एक सीड हब विकसित करने की योजना है। यहां उत्पादित बीज को बिहार बीज निगम एमएसपी रेट से 30 प्रतिशत अधिक दाम देकर खरीदेगा। प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्रों में एक-एक हेक्टेयर में दीर्घ कालीन फसल प्रणाली को विकसित किया जायेगा। कार्यों के बेहतर निष्पादन के लिए प्रत्येक जिले में एक-एक कलस्टर कोर्डिनेटर एवं दो-दो टेक्निकल असिस्टेंट कार्य करेंगे।

- प्रत्येक जिले के 45 गांव मॉडल के रूप में होंगे विकसित
- लाभकारी खेती के साथ बढ़ेंगे रोजगार के अवसर
- सभी 38 जिलों के 5-5 गांव व उससे जुड़े 9 गांव का होगा चयन

> इसके तहत राज्य को चार जोन में बांट कर कार्य किया जा रहा है। जिसमें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा को 11 जिला आवंटित किया गया है। इसके अलावा बिहार कृषि विवि, सबौर को 18 जिले, बोरोलॉग इन्स्टीच्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा) को 7 जिले एवं आईसीएआर-आरसीईआर को 2 जिले की जिम्मेवारी सौंपी गई है। डॉ. आरके झा

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 5 नवंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में अब मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस सप्ताह आसमान में बादल छाए रहने और पूरवा हवा चलने से तापमान में और गिरावट आ सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
04 नवंबर	28.0	22.0
05 नवंबर	28.0	22.2
	दरभंगा	
04 नवंबर	28.0	22.2
05 नवंबर	28.2	22.2
	पटना	
04 नवंबर	31.8	23.5
05 नवंबर	31.8	23.5

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 04-11-2025

भास्कर 8/11/25 पेज 18

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

टमाटर के अपरिपक्व फलों पर लगने वाला बैक्टीरियल स्पॉट फसल को कर रहा खराब, किसानों को हो रहा काफी नुकसान

भास्कर न्यूज | पूसा

जीवाणु धब्बा बीमारी का किसान ऐसे करें प्रबंधन, कम खर्च में कीट पर होगा नियंत्रण

टमाटर के अपरिपक्व फलों पर लगने वाला जीवाणु धब्बा यानी (बैक्टीरियल स्पॉट) बीमारी काफी खतरनाक बीमारी हैं। इस बीमारी की वजह से ठंड के मौसम में खासकर बिहार, उत्तर प्रदेश एवं झारखंड के टमाटर उत्पादक किसान कुछ ज्यादा ही परेशान रहते है। इस बीमारी से बचाव की जानकारी के अभाव में टमाटर उत्पादक किसानों को प्रति वर्ष भारी नुकसान भी उठाना पड़ता हैं। इन राज्यों के किसान कृषि वैज्ञानिक के सुझाव को अपनाकर इस बीमारी का वैज्ञानिक प्रबंधन करते हुए टमाटर से अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने टमाटर उत्पादक किसानों को सुझाव देते हुए दी है। उन्होंने बताया कि टमाटर में यह रोग जैंथोमोनास कैंपेस्ट्रिस पी.वी. वेसिकेटोरिया नामक जीवाणु द्वारा होता है। इस रोग के लक्षण में टमाटर के सीडलिंग्स से लेकर परिपक्व पौधों पर जीवाणुयुक्त धब्बे विकसित हो जाते हैं। सीडलिंग्स पर संक्रमण के कारण पौधों में गंभीर पतझड़ पकड़ लेता है। उन्होंने बताया कि पुराने पौधों पर इस रोग का संक्रमण मुख्य रूप से पुरानी पत्तियों पर ही होता है तथा पानी से भीगे धब्बों के रूप में यह दिखाई देता है। पत्ती के धब्बे पीले या हल्के हरे से काले या गहरे भूरे रंग में बदल जाते हैं। पुराने धब्बे काले, थोड़े उभरे हुए व सतही होते हैं और इनका व्यास 0.3 इंच (7.5 मिमी) तक होता है। उन्होंने बताया कि विशेषकर पत्तियों के किनारों पर बड़े धब्बे भी हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि अपरिपक्व फल पर लक्षण पहले थोड़ा धँसा हुआ होता है और पानी से भीगे हुए प्रभामंडल से घिरा होता है जो जल्द ही गायब हो जाता है। धीरे धीरे फलों के धब्बे बड़े हो जाते हैं और भूरे होकर पपड़ीदार बन जाते हैं। इस रोग का बैक्टीरिया फसल के मलबे में, टमाटर के फलों पर और नाइटशेड और ग्राउंडचेरी जैसे खरपतवार पर एक मौसम से अगले मौसम तक बना रहता है।

जीवाणु धब्बा रोग से ग्रसित टमाटर का फल।

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि कॉपर फंगीसाइड्स एवं कल्चरल प्रैक्टिस इस बैक्टीरिया के धब्बे को प्रबंधित करने में मदद करता हैं। बैक्टीरियल स्पॉट आमतौर पर पूरे उत्तर भारत में जाड़े के मौसम में टमाटर पर अधिक होता है। किसान इस रोग से बचाव के लिए टमाटर के रोग-मुक्त बीज और रोग-मुक्त प्रत्यारोपण का उपयोग हर हाल में करें। इस रोग से टमाटर को बचाने एक और तरीका यह है कि किसान स्प्रिंकलर इरिगेशन जैसी सिंचाई तकनीक को अपनाने से बचें और ग्रीनहाउस या फील्ड ऑपरेशन के बाद रोगग्रस्त मलवे को खेत से हटाते रहें। इसके अलावे किसान हमेशा साफ सुथरी खेती करें यह रोग को नियंत्रित करने में मदद करता है। उन्होंने बताया कि किसान कॉपर आधारित जीवाणुनाशक दवाओं को अपनाकर इस रोग से छुटकारा पा सकते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से अगले चार दिनों का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29-32 डिग्री व न्यूनतम 21-23 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
08 नवंबर	32.0	23.0
09 नवंबर	32.0	23.2
	दरभंगा	
08 नवंबर	32.0	23.2
09 नवंबर	32.4	23.2
	पटना	
08 नवंबर	34.8	24.5
09 नवंबर	34.8	24.5

डिग्री सेल्सियस में

भास्कर 9/11/25 पेज 18

रासायनिक विधि से बीज उपचार • अंकुरित बीज का अंकुरण और जमाव होगा अच्छा

खेतों में रबी की फसलों की बुआई से पहले बीजों को उपचारित करना अत्यंत जरूरी : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के किसानों ने मौजूदा समय में रबी की फसलें जैसे आलू, मक्का, गेहूं, जौ, चना, मसूर, अलसी, मटर आदि की रोपाई व बुआई शुरू कर दी हैं। ऐसी स्थिति में फसल की बुआई और रोपाई से पूर्व फसल के बीजों को उपचारित करना किसानों के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। बीजों को उपचारित कर बुआई करने से जहां फसल में कीट व रोगों के लगने की संभावना काफी कम हो जाती है। वहीं बीजोपचार कर किसान फसलों से अधिक पैदावार और गुणवत्तापूर्ण उत्पाद प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के हेड सह वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने दी। उन्होंने कहा कि फसलों के रोग मुख्यत बीज, मिट्टी तथा हवा के माध्यम से फैलते हैं। उन्होंने कहा कि एक किसान वो होते हैं जो प्रत्येक सीजन में फसलों के नए बीजों को खरीदकर फसल की बुआई करते हैं। जबकि दूसरे किसान वो होते है जो एक साल बीज खरीदते है तथा उसे घर पर ही अच्छे से रखकर दो सालों तक उसी बीज से ही बुआई करते रहते हैं। ऐसे दोनों तरह के किसानों के लिए बीजोपचार अत्यंत ही जरूरी है। उपचारित बीज से बेहतर अंकुरण, स्वस्थ्य पौधों का विकाश, उच्च उपज, कृषि की लागत में कमी, प्रतिकूल परिस्थितियों में सुरक्षा, भंडारण में सुरक्षा आदि जैसे लाभ किसानों को मिलते हैं।

गेंहू के बीज को उपचारित करते किसान।

जैविक विधि से बीज उपचार

किसान जैव तरीके से यानी बीजामृत जैसे जैविक घोल का उपयोग करके बीजों को उपचारित कर सकते है। यह विधि एक प्राकृतिक विधि है। वैज्ञानिक ने बताया कि बीज उपचार हमेशा फसल बुआई से ठीक पहले करना चाहिए। किसान फफूंदनाशक और कीटनाशक जैसी दवाओं का उपयोग करके बीज को उपचारित कर सकते है। रासायनिक उपचार के बाद बीजों को तुरंत ही बो देना चाहिए।

ऐसे करें बीजों को उपचारित

कृषि वैज्ञानिक ने कहा कि किसान सबसे पहले किसी भी फसल के बीज को अच्छी तरह से चुन छांटकर उसकी साफ-सफाई कर लें। इसके बाद बीजों में से छोटे एवं टूटे हुए बीजों को अलग कर साफ व बड़े आकार के बीजों को बुआई के लिए चुन लें। बुआई से पहले बीज को किसी भी अच्छे फफूंदनाशक-कीटनाशक आदि रसायन से उपचारित करें , फिर बुआई खेतों में करें। उन्होंने कहा कि किसान फसलों की बुआई खेतों में करने से पूर्व फसलों को कीट व रोगों के प्रकोप से बचाने के लिए बुआई से पहले भूमि की जांच भी अवश्य करायें । तभी आगे कार्य करें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से अगले चार दिनों का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29-32 डिग्री व न्यूनतम 21-23 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
09 नवंबर	32.0	23.0
10 नवंबर	32.0	23.2
	दरभंगा	
09 नवंबर	32.0	23.2
10 नवंबर	32.4	23.2
	पटना	
09 नवंबर	34.8	24.5
10 नवंबर	34.8	24.5

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 9/11/25 पेज 2

रोगरोधी क्लोन का चयन करने की जरूरत : डॉ देवेंद्र

ईख अनुसंधान का भ्रमण करते पूर्व कुलपति डॉ एचपी सिंह .

प्रतिनिधि, पूसा

राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईख अनुसंधान संस्थान का पूर्व कुलपति डा एचपी सिंह ने भ्रमण कर अनुसंधान की गतिविधियों का गहन अवलोकन किया. संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह एवं सभी वैज्ञानिकों के साथ गन्ना से जुड़े विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न तकनीकियों पर सेमिनार आयोजित कराने के लिए परिचर्चा की.

संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने गन्ना शोध से जुड़े वर्तमान क्रियाकलाप की चर्चा की. इसमें मुख्यरूप से किस्मों के विकास एवं प्रसार, गुड़ निर्माण एवं बिहार सरकार द्वारा गन्ना बीज प्रोत्साहन योजना, गुड़ प्रसंस्करण इकाई और एकल गांठ पौधे जैसे अनेकों योजनाओं का क्रियान्वयन वर्तमान में बिहार सरकार द्वारा दिया गया है. साथ ही पूसा को गन्ना फसल के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस गुड़ निर्माण के लिए राशि आवंटित कर चुकी है. इसे बनाने की तैयारी बिहार सरकार द्वारा तेजी से हो रही है. निदेशक डॉ सिंह ने अपने संस्थान के ज्यादातर शोध कार्यों को कल्याणपुर फार्म में ही किया जा रहा है, जबकि प्रारंभिक प्रजनन कार्य संस्थान के परिसर एवं छावनिया फार्म में द्रुतगति से की जा रही है. पौधा रोग के विभागाध्यक्ष डॉ एसएन सिंह ने लालसर रोग से जुड़े शोध और इनोकुलेशन का कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी. वहीं डॉ अनिल कुमार कीट प्रबंधन पर चर्चा की. विभागाध्यक्ष शश्य विज्ञान डॉ नवनीत ने गन्ना फसल के साथ सफेल अंतरवर्तीय खेती की चर्चा की.

निदेशक ने विस्तार से तीसरे क्लोनल चयन प्रक्रिया के बाद चौथे क्लोनल चयन और जोनल सेंटर में दो साल शोध के उपरांत अच्छी उपज, चीनी की मात्रा और रोग रोधी क्लोन का चयन होता रहा है. इस क्रम में विभागाध्यक्ष ईख प्रजनन विभाग डॉ बलवंत कुमार एसोसियेट प्रोफेसर सह वरीय वैज्ञानिक ने बताया कि इस बार कुल 7 नये क्लोनों का नामकरण किया गया है. जिसमें से एक बीओ-157 नाम का क्लोन भी चयनित हुआ है.

भास्कर-कर 10/11/25 पेज 15

मंडे पॉजिटिव

इस तकनीक से किसानों को कम खर्च में ज्यादा गेहूं उत्पादन और लाभ मिलेगा

जलवायु परिवर्तन के दौर में शून्य जुताई तकनीक गेहूं उत्पादकों के लिए वरदान, कम समय में तैयार होती है

भास्कर न्यूज | पूसा

गेहूं से बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के लिए बिहार में इसकी बुआई मुख्यत 10 नवंबर से 30 नवंबर तक की जानी चाहिये। हालांकि धान की कटाई में देरी होने और खेत की जुताई करते करते ज्यादातर किसान गेहूं की बुआई दिसंबर के अंत या जनवरी के प्रथम सप्ताह तक करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में शून्य जुताई तकनीक एक ऐसी कृषि विधि हैं जो किसानों को कम समय, कम खर्च में ज्यादा गेहूं का उत्पादन और लाभ दिला सकती हैं। इस तकनीक के जरिये किसान मिट्टी की जुताई या उसमें कोई भी बदलाव किए बगैर ही मशीन से खेतों में गेहूं के बीज और उर्वरक को खेत की मिट्टी में डाल देते

शून्य जुताई तकनीक से बोई गई गेहूं की फसल।

हैं। इस विधि के तहत पिछले फसल के अवशेषों को खेत में ही छोड़ दिया जाता है और नई फसल के बीज सीधे उन अवशेषों के बीच बोए जाते हैं जिससे मिट्टी की नमी बनी रहती है और मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है। यह तकनीक किसानों के लागत, श्रम और समय की बचत करने के साथ-साथ मिट्टी के कटाव और प्रदूषण को कम करने में भी मदद करती है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. रविन्द्र कुमार तिवारी ने बताया कि पारंपरिक तौर पर गेहूं की बुआई करने के लिए खेत को तैयार करने में कम से कम 6 चास जुताई करने की जरूरत होती है। इस जुताई का कोई विशेष लाभ नहीं मिलता हैं और ज्यादा खर्च होने के साथ-साथ गेहूं के बुआई में भी देरी हो जाती है। पारंपरिक विधि से बोए गए गेहूं में कल्ले कम संख्या में आते है जिससे उत्पादन घट जाता हैं। शून्य जुताई तकनीक को अपनाने से बुआई के समय में भी 15 से 20 दिन की बचत होती है और उत्पादकता का उच्च स्तर बरकरार रहता हैं। शून्य जुताई तकनीक के तहत किसान जीरो टिलेज मशीन प्रयोग करते हैं।

किसानों को शून्य जुताई के फायदे

गेहूं उत्पादन के लागत में कमी, जुताई करने की आवश्यकता नही, खरपतवार का नियंत्रण, जल का संरक्षण, मिट्टी की उर्वरता में सुधार, पर्यावरण का संरक्षण, बेहतर बीज जमाव, बीज के साथ ही उर्वरक का प्रयोग, जैविक पदार्थ खेतों से नष्ट नही होते हैं आदि दर्जनों फायदे हैं। इस तकनीक का उपयोग कर गेहूं, धान, चना, मक्का, सोयाबीन, जौ, सरसों, मूंग, सूरजमुखी और ज्वार जैसे कई फसलों की बुआई कर सकते हैं।

भास्कर 10/11/25 पेज 17

खेती-किसानी : गेहूं की खेती से प्रति एकड़ अधिकतम 40 हजार की आय होती है, जबकि लहसुन की खेती से प्रति एकड़ 2 लाख रुपए से भी ज्यादा कमाई कर सकते हैं

लहसुन की खेती के लिए समय उपयुक्त, चार गुना अधिक मुनाफा कमा सकते किसान

भास्कर न्यूज | पूसा

आज के दौर में लहसुन की खेती किसानों के लिए काफी लाभकारी और मुनाफे वाली खेती साबित हो रही है। लहसुन की खेती करने वाले किसान आज एक एकड़ में इसकी खेती कर लाखों रुपये की आमदनी बेहद आसानी से प्राप्त कर रहे हैं। बिहार के किसान मौजूदा समय में लहसुन की खेती कर अन्य फसलों की तुलना में अधिक से अधिक लाभ कमा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के हेड एवं वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. आरके तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि लहसुन की बुआई का सबसे सही समय नवंबर का महीना होता है। इस समय में किसान वैज्ञानिक तकनीक से लहसुन की खेती कर गेहूं की खेती की तुलना में चार गुना अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। उन्होंने बताया कि एक अनुमान के मुताबिक गेहूं की खेती से प्रति एकड़ अधिकतम 40 हजार रुपए की आय होती है। जबकि लहसुन की खेती से किसान प्रति एकड़ 2 लाख रुपए से भी ज्यादा की कमाई कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों पर गौर करें तो लहसुन के दाम दिन व दिन बढ़ते जा रहे हैं और इसी कारण किसानों का रुझान भी लहसुन की खेती की ओर काफी बढ़ा है।

खेत में लगी लहसुन की फसल।

लहसुन की फसल में कीटों के लगने की संभावना काफी कम

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि विवि के उद्यानिकी विभाग के द्वारा किए गए अनुसंधान के अनुसार लहसुन की खेती में अन्य खेती के मुकाबले जहां ज्यादा मुनाफा होता है। वहीं लहसुन के फसल में कीटों के लगने की संभावना भी काफी कम होती है। इसकी खेती के लिए न अधिक गर्मी और न ही अधिक ठंड का मौसम अच्छा होता हो। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में लगाएं जाने वाले लहसुन में कंद का निर्माण काफी बेहतर ढंग से होता है। उन्होंने बताया कि इसकी खेती के लिए दोमट मिट्टी काफी अच्छी मानी जाती है। उन्होंने कहा कि प्रायः लोग लहसुन का उपयोग मसाले के तौर पर करते है।

लहसुन में प्रोटीन, फासफोरस और पोटैशियम जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि खासकर ठंड के दिनों में लहसुन का सेवन काफी लाभकारी हैं। लहसुन में प्रोटीन, फासफोरस और पोटाशियम जैसे कई महत्वपूर्ण पोषक पाएं जाते हैं। इसका सेवन हमारे पाचन क्रिया के लिए काफी मददगार हैं। लहसुन का सेवन कोलेस्ट्रोल की मात्रा को भी कम करता है।

उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र समेत विभिन्न राज्यों में होती है लहसुन की बड़े स्तर पर खेती

लहसुन की खेती बड़े स्तर पर देश के मध्य प्रदेश, गुजरात, ओड़िसा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में की जाती है। बिहार के किसान पीजी 17, यमुना सफेद जी 1, भीमा पर्पल, वीएल गार्लिक 1 आदि जैसे लहसुन के किस्मों की खेती कर अधिक से अधिक लाभ कमा सकते हैं।

दैनिक जागरण 10/11/25 पेज 8

बेहतर पैदावार के लिए उन्नत किस्म के बीज को चुने

संवाद सहयोगी, जागरण• जाले : खेतों से धान की कटनी के बाद अब किसान खेतों की जुताई कर तैयार कर रहे हैं। रबी फसल मुख्य रूप से यहां गेहूं की खेती होती है। इसकी बोआई का समय अक्टूबर के अंत से दिसंबर के पहले सप्ताह तक है। गेहूं बोने का सबसे अच्छा समय एक से 20 नवंबर के बीच होता है, जिसमें 10 से 20 नवंबर का समय सबसे उपयुक्त माना जाता है। अगर बोआई में देरी हो तो 25 नवंबर से 15 दिसंबर तक पिछात किस्मों की बोआई की जा सकती है, लेकिन इससे उपज कम हो सकती है। सही समय पर उन्नत किस्म के बीज की बोआई करने से गेहूं की अच्छी पैदावार मिलती है।

गेहूं की बोआई के लिए 10-20 नवंबर का समय सबसे उपयुक्त, फसल को अनुकूल तापमान की जरूरत

कृषि विज्ञानी डा. चंदन कुमार

जाले कृषि अनुसंधान केंद्र के विज्ञानी डा. चंदन कुमार के अनुसार, गेहूं की फसल को विभिन्न चरणों में अलग तापमान की जरूरत होती है। अंकुरण के समय 20-25 डिग्री, फूल आने के समय 14-16 डिग्री और फसल पकने के समय लगभग 25 डिग्री सेटीग्रेड तापमान आदर्श माना जाता है। पकने के समय शुष्क वातावरण पैदावार और गुणवत्ता को बेहतर बनाता है। यदि किसान गेहूं की बोआई दिसंबर के बाद करते हैं तो फसल की वृद्धि प्रभावित होती है। ऐसे में फसल जल्दी गर्मी से प्रभावित हो जाती है और दानों का आकार छोटा रह जाता है। रोग और कीट का प्रकोप भी ज्यादा दिखाई देता है। देर से बोआई करने पर उत्पादन में 20 से 30 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है।

जीरो टिलेज से करें गेहूं की बोआई : गेहूं की अच्छी पैदावार के लिए एक से दूसरे कतार की दूरी 17.5-20 सेमी तथा बीज की गहराई चार-पांच सेमी होनी चाहिए। असिंचित क्षेत्र में पंक्ति की दूरी 25-30 सेमी तक रखी जानी चाहिए। सामान्य बोआई के लिए सौ किलोग्राम तथा देरी से बोआई के लिए 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग में लेना चाहिए। जीरो टिलेज से गेहूं की बोआई कर सकते हैं। जीरो टिलेज (शून्य जुताई) से गेहूं की बोआई एक ऐसी तकनीक है जिसमें बिना खेत जोते, पिछली फसल के अवशेषों को खेत में छोड़कर, सीधे गेहूं के बीज और उर्वरक की बोआई की जाती है। इसके लिए जीरो सीड ड्रिल मशीन का उपयोग होता है जो पिछली फसल (जैसे धान) के अवशेषों में बिना जुताई के एक पतला चीरा बनाकर बीज और उर्वरक डालती है। यह तकनीक समय और लागत बचाती है और उत्पादन में वृद्धि करती है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से अगले चार दिनों का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29-32 डिग्री व न्यूनतम 21-23 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
10 नवंबर	31.0	22.0
11 नवंबर	31.0	22.2
	दरभंगा	
10 नवंबर	31.0	22.2
11 नवंबर	31.4	22.2
	पटना	
10 नवंबर	33.8	23.5
11 नवंबर	33.8	23.5

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 10/11/25 पेज 1

लालसर रोग से निजात को शोध की हुई शुरुआत : डॉ बलवंत

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ईख अनुसंधान संस्थान में गन्ना के हाइब्रिड सीडलिंग से लेकर क्लोनल चयन की प्रक्रिया होते आ रहा है. इस साल 7 क्लोन का चयन किया गया है. जिसमें मुख्यतः 4 क्लोन आगत समूह के और 3 क्लोन मध्य पिछात ग्रुप के है. बीओ 157 नाम का क्लोन भी चयनित किया गया है. जिसका क्रॉसिंग पूसा में ही हुआ. इसका सीडलिंग संख्या एक्स 20039 है बाकी अन्य 6 क्लोन सीओपी कोयंबतूर पूसा. यानि कोयंबतूर में हाइब्रिड बना और सीडलिंग संख्या कॉक्स से नामित किया जाता है. जो विकसित होने के बाद पूसा लिखा जाता है. इसका क्लोनल चयन की प्रक्रिया पूसा में ही हुई है. एसोसियेट प्रो डॉ बलवंत कुमार बताते हैं कि तत्कालीन लालसर रोग से निजात के लिए तीव्र गति से पूसा में हाइब्रिडिजेशन शोध कार्यक्रम शुरू करने के लिए एल खन्ना साहब ने और बीओ सीरीज के गन्ना प्रभेद जारी किया. 1946 में पहली बीओ किस्म बनी थी. बीओ 11, फिर बीओ 10 1947 में तत्पश्चात अभी तक 157 बीओ क्लोन विकसित हुआ.

फार्म निरीक्षण करते वैज्ञानिक.

कार्यक्रम • औषधीय व सुगंधित पौधों के उत्पादन, प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

औषधीय पौधों की खेती किसानों के लिए लाभकारी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के संचार केंद्र भवन में औषधीय एवं सुगंधित पौधों के उत्पादन, प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का उद्घाटन विवि के प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. आरके झा एवं वैज्ञानिक डॉ. शैलेश कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. आरके झा ने कहा की औषधीय पौधों की खेती किसानों के लिए काफी लाभकारी खेती है। इसकी खेती सर्वोपरि है चूंकि इसे जंगली जानवर भी नष्ट नहीं करते हैं। उन्होंने कहा कि आजकल हर्बल उत्पादों का डिमांड बाजार में काफी अधिक है। औषधीय पौधों की मदद से बनने वाले हर्बल कास्टमेटिक आम जेनरल कास्टमेटिक की तुलना में 10 गुना ज्यादा महंगे बिकते है। उन्होंने कहा की औषधीय पौधों की खेती में रासायनिक कीटनाशकों और खाद की आवश्यकता कम होती है। इसकी मांग पूरे साल बाजारों में बनी रहती है। औषधीय पौधे की खेती से मिट्टी की सेहत में भी सुधार होता हैं। उन्होंने कहा की औषधीय पौधों का उपयोग दवा, कॉस्मेटिक और खाद्य उद्योग आदि में भी होता हैं। औषधीय पौधे कीट-प्रतिरोधी होने के साथ-साथ जलवायु के अनुकूल भी होते हैं। इसकी खेती कम उपजाऊ भूमि पर भी आसानी से की जा सकती हैं। वैज्ञानिक डॉ. शैलेश कुमार ने कहा की औषधीय पौधों की खेती विवि में काफी पहले से चल रही है। किसानों को अन्य फसलों की खेती के अलावे औषधीय पौधों की खेती भी निश्चित रूप से करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसे बहुत सारे औषधीय पौधे हैं जिसकी मांग हमेशा बाजार में बनी रहती है। सामान्य फसलों की तुलना में औषधीय फसलों की खेती किसानों को ज्यादा फायदा दिलाती है। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों के बाजार को नियंत्रित रखने की भी जरूरत हैं। मंच संचालन करते हुए डॉ. विनीता सतपति ने कहा कि किसानों को औषधीय पौधों के साथ-साथ मिलेट्स कि भी खेती करने की जरूरत हैं। इन फसलों की खेती कर किसान कम लागत में ज्यादा मुनाफा कमा सकते हैं। इस प्रशिक्षण में दरभंगा, रोहतास सहित 6 जिलों से पहुंचे दर्जनों किसानों के अलावे कृषि विभाग के एटीएम व बीटीएम हिस्सा ले रहे हैं।

प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते डॉ. झा व प्रशिक्षण में मौजूद प्रशिक्षणार्थी।

आईएआरआई संस्थान के अध्यक्ष ने किसानों से की मुलाकात, धान की कटाई उपरांत प्रबंधन पर चर्चा

पूसा| भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र पूसा में अनुसूचित जाति से जुड़े महिला व पुरुष किसानों के लिए एक दिवसीय प्रक्षेत्र भ्रमण सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रक्षेत्र भ्रमण सह प्रशिक्षण का विषय चावल के किस्म के मूल्यांकन एवं फसलों में लगने वाले कीट रोग के प्रबंधन पर था। प्रशिक्षण सह भ्रमण कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आईएआरआई संस्थान के अध्यक्ष डॉ. प्रियरंजन कुमार ने किसानों को धान के फसल की कटाई उपरांत प्रबंधन पर विशेष रूप से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आईएआरआई संस्थान पुसा खासकर अनुसूचित जाति से जुड़े किसानों को कृषि के क्षेत्र में आगे बढ़ाने की दिशा में एक वरदान साबित हो रहा हैं। अनुसूचित जाति से जुड़े किसानों के लिए यह संस्थान भारत सरकार के नियमानुसार विभिन्न योजनाओं के अंतरगत तरह तरह के प्रशिक्षण, प्रक्षेत्र भ्रमण आदि तरह के कार्यक्रमों को संचालित करता रहता है। संस्थान के वैज्ञानिक डॉ.तमोघना साहा ने किसानों को धान के खेतों का भ्रमण कराते हुए उन्हें कीट रोग एवं पर्यावरण अनुकूल फसलों के प्रबंधन के बारे में विस्तार से बताया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.सतीश नायक ने किसानों को जलवायु अनुकूल धान के किस्म के उत्पादन एवं उत्पादकता वृद्धि के बारे में जानकारी दी। भ्रमण के दौरान मौजूद किसानों को संस्थान की ओर से पपीता का पौधा देकर सम्मानित भी किया गया। प्रशिक्षण में जिले के विभिन्न प्रखंडों से पहुँचे सौ से ज्यादा अनुसूचित जाति से जुड़े किसानों ने हिस्सा लिया। मौके पर रमेश कुमार, अनिल कुमार, मोहम्मद सरफराज, प्रमोद कुमार, सुरेंद्र कुमार, बिंदेश्वर माझी के अलावे संस्थान के कई कर्मी मौजूद थे।

प्रक्षेत्र भ्रमण करते किसान।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से अगले चार दिनों का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आने वाले दिनों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 29-32 डिग्री व न्यूनतम 21-23 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
11 नवंबर	31.0	22.0
12 नवंबर	31.0	22.2
	दरभंगा	
11 नवंबर	31.0	22.2
12 नवंबर	31.4	22.2
	पटना	
11 नवंबर	33.8	23.5
12 नवंबर	33.8	23.5

डिग्री सेल्सियस में

अब राज्य की जलवायु व मिट्टी के अनुरूप विकसित होंगे गन्ना के प्रभेद

पूसा, निसं। अब राज्य की जलवायु व मिट्टी के अनुरूप गन्ना के प्रभेद विकसित हो सकेंगे। इससे इसकी गुणवत्ता व उपज और निखर सकेगी।

यह डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े ईंख अनुसंधान संस्थान, पूसा में गन्ना की क्रॉसिंग प्रक्रिया की शुरूआत से हो सकी है। अब तक गन्ना क्रॉसिंग की बेहतर व्यवस्था कोयंबतूर स्थित संस्थान पर अधिक निर्भरता थी। लेकिन धीरे-धीरे ईंख अनुसंधान संस्थान, पूसा में भी शोध व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा रहा है। जिससे अब यहां गन्ना क्रॉसिंग कर नई वेराईटी का चयन व विस्तार को गति दी जा रही है। संस्थान के वरीय वैज्ञानिक डॉ. बलवंत कुमार ने बताया कि कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय व निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह के सहयोग से इन्फ्रास्ट्रक्चर में तेजी से विकास हो रहा है। वर्तमान में ग्लास हाउस, फ्लावर गार्डन का विकसित किया जाना इसी कड़ी का हिस्सा है। अब गन्ना के प्रभेदों को क्रॉस कराने का कार्य पूसा में भी हो सकेगा। लेकिन 1972 में राष्ट्रीय शंकरण बागीचा, कोयंबतूर की शुरूआत से देश भर के गन्ना प्रजनक वहां जाकर इच्छा के अनुरूप क्रॉप निर्माण का कार्य करते हैं।

पूसा के प्रक्षेत्र में क्रॉसिंग के लिए तैयार गन्ना के फूल दिखाते वैज्ञानिक व निदेशक और विवि के ईंख अनुसंधान केन्द्र में बना ग्लास हाउस।

क्या होगा फायदा

वैज्ञानिक ने बताया कि इससे बिहार की जलवायु व मिट्टी के अनुरूप प्रभेदों का विकास होगा। पूर्व से अधिक गुणवत्तायुक्त होगी। अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता उसमें मौजूद होंगे। उत्पादन बढ़ेंगे। इसका सीधा लाभ किसानों को मिल सकेगा।

क्या है बीओ और सीओपी : वैज्ञानिक ने बताया कि बीओ का मतलब बिहार, उड़ीसा (बीओ क्लोन) का प्रभेदीय विकास पूसा में हाईब्रिडाईजेशन से है। जबकि सीओपी नाम के क्लोन का हाईब्रिडाईजेशन कोयंबतूर में हुआ है।

प्रभात खबर 11/11/25 पेज 4

औषधीय व सुगंधित पौधे के बाजार को नियंत्रित रखने की जरूरत : निदेशक

प्रतिनिधि, पूसा

उद्घाटन करते निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा.

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में औषधीय एवं सुगंधित पौधों का उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुई. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि औषधीय एवं सुगंधित पौधे की बाजार को नियंत्रित रखने की जरूरत है. औषधीय पौधे की खेती सभी फसलों में सर्वोपरि है. यह जंगली जानवरों से भी सुरक्षित खेती होता है. प्रशिक्षण का उद्घाटन विवि के प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. आरके झा एवं वैज्ञानिक डॉ. शैलेश कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया. इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. आरके झा ने कहा कि औषधीय पौधों की खेती किसानों के लिए काफी लाभकारी खेती है. उन्होंने कहा कि आजकल हर्बल उत्पादों का डिमांड बाजार में काफी अधिक है. औषधीय पौधों की मदद से बनने वाले हर्बल कास्टमेटिक आम कास्टमेटिक की तुलना में 10 गुना ज्यादा महंगे बिकते हैं. उन्होंने कहा की औषधीय पौधों की खेती में रासायनिक कीटनाशकों और खाद की आवश्यकता कम होती है. इसकी मांग पूरे साल बाजारों में बनी रहती है. औषधीय पौधे की खेती से मिट्टी की सेहत में सुधार होता हैं. उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों का उपयोग दवा, कॉस्मेटिक और खाद्य उद्योग आदि में होता हैं। औषधीय पौधे कीट-प्रतिरोधी होने के साथ-साथ जलवायु अनुकूल भी होते हैं. इसकी खेती कम उपजाऊ भूमि पर भी आसानी से की जा सकती है. वैज्ञानिक डॉ. शैलेश कुमार ने कहा कि औषधीय पौधों की खेती विवि में काफी पहले से चल रही है. किसानों को अन्य फसलों की खेती के अलावा औषधीय पौधों की खेती भी निश्चित रूप से करनी चाहिए. उन्होंने कहा कि ऐसे बहुत सारे औषधीय पौधे हैं जिसकी मांग हमेशा बाजार में बनी रहती है. सामान्य फसलों की तुलना में औषधीय फसलों की खेती किसानों को ज्यादा फायदा दिलाती है.

भास्कर 12/11/25 पेज 14

कृषि • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी रोग प्रबंधन की जानकारी

अरहर की फसल में लगने वाला एसएमडी और बांझपन मोजेक वायरस खतरनाक, समय पर प्रबंधन जरूरी : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के वैसे किसान जिन्होंने अगस्त व सितंबर माह में अरहर की बुआई की हैं। उनकी फसल में बांझपन मोजेक रोग यानी (एसएमडी) और बांझपन मोजेक वायरस यानी (पीपीएसएमभी) दोनों तरह के रोग लग सकते हैं।

ये दोनों रोग अरहर की फसल के लिए काफी खतरनाक और प्रमुख विषाणुजनित रोग हैं। यह रोग जहां एसेरिया कजनी नामक वेक्टर के द्वारा फैलता है। वहीं इस रोग के संक्रमण से अरहर के पौधे के गांठ (इंटरनोड्स) छोटे हो जाते हैं तथा इससे प्रभावित सभी पौधे भी बौने ही रह जाते हैं। बिहार के अरहर उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीकों से इन रोगों का ससमय प्रबंधन कर इससे निजात पाते हुए अरहर से अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि इस रोग के मुख्य रूप से तीन प्रकार के लक्षण होते हैं। पहला पूर्ण बंध्यता के साथ पत्रक में गंभीर पच्चीकारी। दूसरा आंशिक बंध्यता के साथ मृदु पच्चीकारी और तीसरा हरित हीन प्रभामंडल से घिरे एक हरे द्वीप की विशेषता वाले गोल धब्बे। इसके अलावे एक अन्य लक्षण में अरहर के शाखाओं के शीर्ष पर झाड़ीदार रूप जैसा बन जाता है।

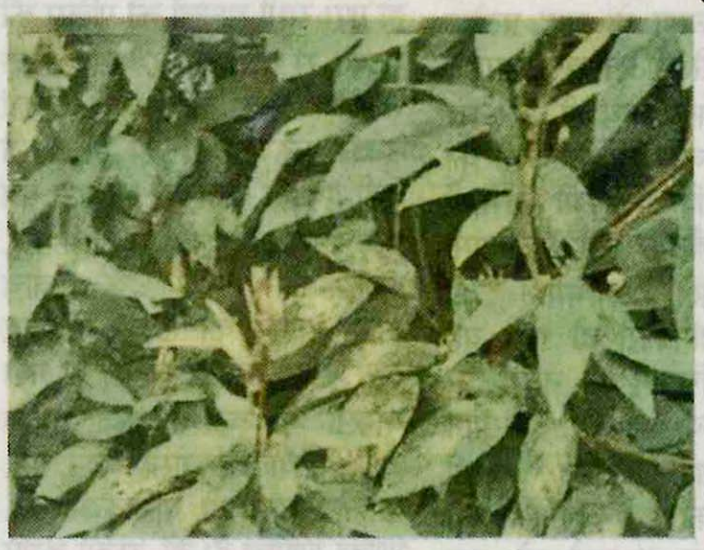

बांझपन मोजेक वायरस से ग्रसित अरहर के पौधे।

रोग के प्रबंधन के उपाय

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि अरहर उत्पादक किसान अरहर की बुआई के 45 दिन बाद तक इस रोग से संक्रमित सभी पौधों को खेतों से खोजकर उसे उखाड़कर बाहर निकाल दें। अरहर में इस रोग के लगने की जानकारी अगर किसानों को 45 दिनों बाद मिलती है तो वे रोग दिखने के तुरंत बाद फेनाजाक्विन दवाई का एक एमल मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर अरहर की फसल पर छिड़काव करें। रोग की उग्रता में हल्की कमी आने पर किसान इन दवाओं के छिड़काव को 15 दिनों के बाद पुनः दोहराए।

बांझपन मोजेक रोग से उपज पर पड़ा है असर

उन्होंने बताया कि अरहर के बाँझपन मोजेक रोग (एसएमडी) तथा अरहर बाँझपन मोजेक वायरस (पीपीएसएमभी) रोग को अरहर उत्पादक किसान कृषि वैज्ञानिकों के कुछ महत्वपूर्ण सुझावों को अपनाकर प्रबंधित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अरहर में लगने वाले इस खतरनाक रोग का संक्रमण अरहर की बुआई के लगभग एक से डेढ़ महीने बाद फसल पर देखने को मिलता हैं। अगर पौधों में संक्रमण ज्यादा हो गया हो तो यह उत्पादन को घटाकर शून्य पर पहुंचा सकता है।

भास्कर 12/11/25 पेज 14

कार्यक्रम • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च की ओर से आयोजन

मशरूम की व्यावसायिक खेती से बढ़ेगी आमदनी

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च द्वारा विवि के संचार केंद्र भवन में मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण तकनीक विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन डॉ. राकेश मणि शर्मा सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।

इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. राकेश मणि शर्मा ने कहा की मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार करने की आवश्यकता हैं। मशरूम उत्पादक किसान मशरूम उत्पादन के साथ-साथ इससे विभिन्न उत्पादों का निर्माण कर अपनी आमदनी बेहद आसानी से दोगुना कर सकते है। उन्होंने कहा कि मशरूम एक फंगस उत्पाद है। किसानों को मशरूम की व्यावसायिक खेती करने पर जोर देना चाहिए। विषय प्रवेश कराते हुए मशरूम विशेषज्ञ डॉ. दयाराम ने कहा कि बिहार मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में नंबर वन स्थान प्राप्त कर लेने के बाद अब बिहार में मशरूम के क्षेत्र के तकनीकी रूप से कार्य करने की आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा कि मशरूम से जीवन स्तर में व्यापक स्तर का सुधार संभव हैं। आज मशरूम उत्पादक मशरूम का सेवन कर स्वस्थ्य रहते हुए अपनी आमदनी को बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि फिलहाल इस समय मशरूम के 10 प्रभेदों का उत्पादन जोर शोर से किया जा रहा है। इसमें से 6 मशरूम के प्रभेद का कमर्शियल उत्पादन भी हो रहा हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण से जुड़े प्रशिक्षणार्थी मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में एक तकनीकी विशेषज्ञ का काम कर रहे हैं। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा की मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी भोज्य पदार्थ है।

प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते डॉ. शर्मा।

प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को अपने फार्म में उतारें, दूसरे से भी साझा करें ज्ञान

मशरूम खेती बिना खेत के स्लोगन को क्रियाशील कर रहा है।स्वागत भाषण देते हुए डॉ. मुकेश सिंह ने कहा की मशरूम उत्पादकों को लर्निंग बाय डूइंग विधि अपनाने की जरूरत हैं। प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को अपने फार्म में उतारने का प्रयास करें। मंच संचालन मशरूम केंद्र के प्रभारी डॉ. आर पी प्रसाद ने किया। जबकि धन्यवाद ज्ञापन मशरूम वैज्ञानिक डॉ.आर पी के राय ने किया।

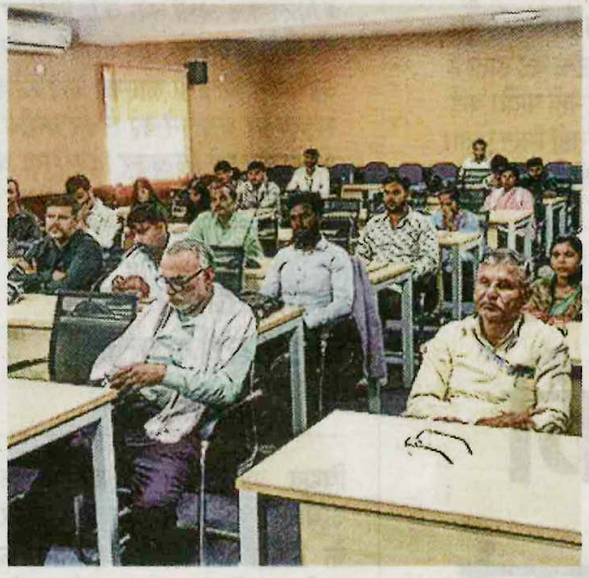

प्रशिक्षण सत्र में मौजूद वैज्ञानिक।

बिथान : रबी फसल के बीज वितरण में गड़बड़ी

बिथान| प्रखंड मुख्यालय स्थित ई-किसान भवन में रबी फसल का अनुदानित दर पर बीज वितरण मंगलवार को जारी रहा। लेकिन इस दौरान कई किसानों को बीज से वंचित होकर मायूस लौटना पड़ा। बीज न मिलने से किसानों में भारी आक्रोश देखा गया। किसानों का आरोप है कि बीज वितरण में कोऑर्डिनेटर और किसान सलाहकार मनमानी कर रहे हैं। उनके नजदीकी किसानों एवं बिचौलियों को 16 किलोग्राम तक बीज दिया जा रहा है, जबकि सामान्य किसानों को मात्र 4 किलोग्राम पर ही संतोष करना पड़ रहा है। इससे आम किसानों में रोष फैल गया है। जगमोहरा पंचायत के कोऑर्डिनेटर के अनुपस्थित रहने से दर्जनों किसान बिना बीज पाए लौट गए। किसानों को स्वयं ई-किसान भवन पहुंचकर फिंगर देकर बीज लेना पड़ता है, लेकिन बीज खत्म होने की बात कहकर उन्हें लौटा दिया गया। महिला किसानों ने बताया कि घर के कामकाज छोड़कर वे घंटों लाइन में लगी रहीं, फिर भी उन्हें बीज नहीं मिला। इससे उन्हें दोहरी परेशानी झेलनी पड़ी। किसानों ने बताया कि बिहार सरकार की ओर से रबी फसल जैसे मसूर, तोरी और गेहूं का बीज अनुदानित दर पर दिया जाता है ताकि खेती लागत कम हो सके, लेकिन यहां ऐसा नहीं हो रहा।

मशरूम की व्यावसायिक खेती करने पर दें जोर

- डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन
- मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण तकनीक विषय पर वक्ताओं ने रखे अपने विचार

संस, जागरण ● पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के संचार केंद्र भवन में मंगलवार को मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण तकनीक विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन डा. राकेश मणि शर्मा सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए अपने अध्यक्षीय संबोधन में डा. राकेश ने कहा की मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार करने की आवश्यकता हैं। मशरूम उत्पादक किसान मशरूम उत्पादन के साथ-साथ इससे विभिन्न उत्पादों का निर्माण कर अपनी आमदनी बेहद आसानी से दोगुना कर सकते है। उन्होंने कहा कि मशरूम एक फंगस उत्पाद है। किसानों को मशरूम की व्यावसायिक खेती करने पर जोर देना चाहिए। विषय प्रवेश कराते हुए मशरूम विशेषज्ञ डा. दयाराम ने कहा कि मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में नंबर वन स्थान प्राप्त कर लेने के बाद अब बिहार में मशरूम के क्षेत्र के तकनीकी रूप से कार्य करने की आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा कि मशरूम से जीवन स्तर में व्यापक स्तर का सुधार संभव हैं। आज मशरूम उत्पादक मशरूम का सेवन कर स्वस्थ रहते हुए अपनी आमदनी को बढ़ा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि फिलहाल इस समय मशरूम के 10 प्रभेदों का उत्पादन जोर शोर से किया जा रहा है। इसमें से छह मशरूम के प्रभेद का कामर्शियल उत्पादन भी हो रहा हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण से जुड़े प्रशिक्षणार्थी मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में एक तकनीकी विशेषज्ञ का काम कर रहे हैं।

प्रसार शिक्षा निदेशक डा. रत्नेश कुमार झा ने कहा की मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी भोज्य पदार्थ है। मशरूम खेती बिना खेत के स्लोगन को क्रियाशील कर रहा है। स्वागत भाषण देते हुए डा. मुकेश सिंह ने कहा की मशरूम उत्पादकों को लर्निंग बाय डूइंग विधि अपनाने की जरूरत हैं। प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को अपने फार्म में उतारने का प्रयास करें। मंच संचालन मशरूम केंद्र के प्रभारी डा. आरपी प्रसाद ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मशरूम वैज्ञानिक डा. आरपीके राय ने किया। मौके पर पंजाब नेशनल बैंक विश्वविद्यालय शाखा के प्रबंधक अमित गुंजन सहित अन्य मौजूद रहे।

मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम का संबोधित करते वक्ता व उपस्थित अन्य ● जागरण

Dainik Jagran 12-11-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 16 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। हालांकि तापमान में नमी बरकरार रहेगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में न्यूनतम तापमान में 2 से 4 डिग्री की कमी हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
12 नवंबर	27.8	15.5
13 नवंबर	28.0	15.5
दरभंगा		
12 नवंबर	28.0	15.5
13 नवंबर	28.0	16.0
पटना		
12 नवंबर	30.8	18.5
13 नवंबर	30.8	18.5

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 12-11-2025

कृषि विवि में किसान मेला 6-8 फरवरी तक

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में तीन दिवसीय किसान मेला 6 से 8 फरवरी को होगा। किसान मेला का विषय है विकसित कृषि उन्नत भारत। इसको लेकर तैयारी जोरों पर है।

मेले की शत-प्रतिशत सफलता को लेकर करीब डेढ़ दर्जन कमेटी बनाई गई है। जानकारी विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा ने मंगलवार को दी।

उन्होंने बताया कि इस बार किसान मेला का काफी विस्तार रूप दिया जा रहा है। विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय के मार्गदर्शन में इसे बेहतर और किसान हित में बनाने को लेकर प्रयास किये जा रहे हैं।

Hindustan 12-11-2025

मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण तकनीक विषय पर प्रशिक्षण शुरू

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में मंगलवार को मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण तकनीक विषय पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ। समारोह की शुरूआत दीप प्रज्ज्वलित कर व विवि कुलगीत से की गई। मौके पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते विवि के पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. राकेश मणी शर्मा ने कहा कि मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में बिहार नंबर एक पर है। अब इसके कार्य क्षेत्र का विस्तार कर देश को अग्रणी बनाने की जरूरत है। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि मशरूम खाद्य सुरक्षा, पोषण सुरक्षा एवं आर्थिक सुरक्षा का बेहतर विकल्प है। इसे गति देने के लिए फूड चेन बनाने की जरूरत है। मशरूम वैज्ञानिक डॉ. दयाराम ने कहा कि वर्तमान में 10 प्रभेदों के मशरूम का उत्पादन हो रहा है। जिसमें 6 व्यवसायिक रूप ले चुका है। वर्तमान में करीब 45 हजार टन राज्य में मशरूम का उत्पादन है। जिसे वर्ष 2025-26 में 50 हजार टन पहुंचाना लक्ष्य है। मौके पर मशरूम विभाग के प्रभारी डॉ. आरपी प्रसाद, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. आरपीके राय, अमित रंजन समेत अन्य मौजूद थे।

Hindustan 12-11-2025

कृषि विवि में तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती व इससे जुड़े कार्यों का विस्तार समय की मांग है। यह आर्थिक समृद्धि का बेहतर विकल्प है। वे विवि के पंचतत्र सभागार में राज्य के विभिन्न जिलो से आये चयनित किसानों व कृषि विभाग के अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। मौका था औषधीय एवं सुगंधित पौधों के उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का।

Hindustan 12-11-2025

मशरूम उत्पादन तकनीक को राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने की जरूरत : डॉ राकेश मणि शर्मा

दीप जलाकर उद्घाटन करते अतिथि .

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के तत्वावधान में संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण तकनीक विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. उद्घाटन डॉ. राकेश मणि शर्मा सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया. डॉ. शर्मा ने कहा मशरूम उत्पादन तकनीक को राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने की जरूरत है. किसान मशरूम उत्पादन के साथ इससे विभिन्न उत्पादों का निर्माण कर अपनी आमदनी आसानी से दोगुना कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि मशरूम एक फंगस खाद्य पदार्थ है. किसानों को मशरूम की व्यावसायिक खेती करने पर जोर देना चाहिए.

मशरूम विशेषज्ञ डॉ. दयाराम ने कहा कि बिहार मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में नंबर वन स्थान प्राप्त कर लेने के बाद अब बिहार में मशरूम के क्षेत्र के तकनीकी रूप से कार्य करने की आवश्यकता है. आज मशरूम उत्पादक मशरूम का सेवन कर स्वस्थ रहते हुए अपनी आमदनी को बढ़ा रहे हैं. प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि मशरूम विशुद्ध रूप से शाकाहारी भोज्य पदार्थ है. डॉ. मुकेश सिंह ने कहा की मशरूम उत्पादकों को लर्निंग बाय डूइंग विधि अपनाने की जरूरत है.

संचालन मशरूम केंद्र के प्रभारी डॉ. आरपी प्रसाद ने किया. धन्यवाद ज्ञापन मशरूम वैज्ञानिक डॉ. आरपीके राय ने किया. मौके पर पीएनबी विश्वविद्यालय शाखा के प्रबंधक अमित गुंजन सहित केंद्र से जुड़े अन्य कर्मचारी मौजूद थे.

Prabhat Khabar 12-11-2025

किसान मेला 2026 की तिथि निर्धारित

पूसा . डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर में लगने वाले किसानों का महामेला किसान मेला 2026 का तिथि निर्धारित कर लिया गया है. प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा से मिली जानकारी के अनुसार आगामी किसान मेला 6-8 फरवरी 2026 को लगाने का निर्णय लिया गया है. वहीं निदेशक डॉ झा ने कहा कि इस बार के किसान मेला रीजनल लेवल का लगाने की भी तैयारी की जा रही है. इसमें खासतौर से स्टॉल अधिकाधिक संख्या के साथ मेले में मौजूद किसानों के बीच विभिन्न नवीनतम तकनीकों अलावा उन्नतशील प्रभेदों पर प्रदर्शन किया जाना है.

औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने की जरूरत

पूसा . डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के सभागार में औषधीय एवं सुगंधित पौधों के उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण को संबोधित करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण सह ट्रेनिंग कॉर्डिनेटर डॉ. विनीता सतपथी ने कहा कि बिहार में औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती को बढावा देने की जरुरत है. यह खेती अधिक लाभकारी एवं पर्यावरण के अनुकूल साबित हो सकती है. इससे फसलों को जंगली जानवरों, विशेषकर हाथी एवं नीलगाय से होने वाले नुकसान के जोखिम को भी कम किया जा सकता है. अब समय आ गया है कि किसान केवल इन फसलों की खेती ही नहीं, बल्कि इनके मूल्य संवर्धन के प्रति भी जागरूक हों. उन्होंने कहा कि औषधीय एवं सुगंधित पौधों से संबंधित उद्योग का बाजार बहुत बड़ा है. इस दिशा में किसानों को तैयार करने के लिए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा एरोमा कॉरिडोर विकसित करने की पहल कर रहा है. किसानों को औषधीय पौधों के साथ-साथ मिलेट्स खेती करने की जरूरत है. इन फसलों की खेती कर किसान कम लागत में ज्यादा मुनाफा कमा सकते हैं.

Prabhat Khabar 12-11-2025

राष्ट्रीय सहारा 14/11/25 पेज 2

मशरूम जगत के गांधी हैं डॉ दयाराम : डॉ आरके झा

समस्तीपुर (एसएनबी)। आज मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में बिहार पूरे देश में नंबर वन बन चुका है। बिहार को मिली इस उपलब्धि में डॉ दयाराम के सूक्ष्म सूझ, समर्पण, प्रतिबद्धता एवं त्याग तथा इस विश्वविद्यालय बेहद महत्वपूर्ण भूमिका है। कभी सिर्फ ठंडे प्रदेशों में उगया जाने वाला और बडे बडे होटलों और अमीरों के थाली की रौनक मशरूम आज न सिर्फ बारहो महीने उगाई जाती है और गरीबों की थाली का स्वाद बढा रही है यह डॉ दयाराम के त्याग और प्रतिबद्धतापूर्ण समर्पण का ही परिणाम है। इसीलिए डॉ दयाराम को मशरूम का गांधी और मशरूम मैन भी कहा जाता है।

निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ रत्नेश कुमार झा ने मंगलवार को अखिल भारतीय समन्वित मशरूम अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च द्वारा आयोजित मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण तकनीक विषयक 7 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन समारोह के दौरान उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में मशरूम रिसर्च सेंटर बनाने से लेकर बिहार में मशरूम क्रान्ति लाने और बिहार को नंबर वन बनाने तक

उद्घाटन करते अतिथि व अन्य।

सफर में डॉ दयाराम का त्याग सदियों तक याद रखा जायेगा। बताते चलें कि पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राजेश मणि शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित आगामी 17 नवम्बर तक चलने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन प्रभारी पदाधिकारी डॉ राम प्रवेश प्रसाद ने की। मुख्यअतिथि सह अध्यक्ष डॉ राजेश मणि शर्मा के साथ प्राध्यापक अनुसंधान निदेशालय डॉ मुकेश कुमार सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ रत्नेश कुमार झा, एवं सलाहकार मशरूम डॉ दयाराम द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर प्रशिक्षण के उद्घाटन के बाद तमाम अतिथियों का शॉल एवं पुष्प गुच्छ से स्वागत किया गया और, कुलगीत प्रसारण के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ। स्वागत संबोधन प्राध्यापक अनुसंधान निदेशालय डॉ मुकेश कुमार सिंह ने किया। इस प्रशिक्षण शिविर में समस्तीपुर सहित विभिन्न जिलों के अलावा महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के दो दर्जन से अधिक युवा एवं तकनीकी विशेषज्ञ प्रशिक्षुओं ने हिस्सा लिया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ शर्मा ने कहा कि बिहार मशरूम उत्पादन में नंबर वन बन गया, इसमें संदेह नहीं किन्तु मशरूम के क्षेत्र में हमारे अनुसंधान, प्रयास, एवं उपलब्धियों, को राष्ट्रीय स्तर पहुंचाने की जरूरत है।

कहा-डॉ. दयाराम के त्याग और प्रतिबद्धता ने बनाया बिहार को मशरूम उत्पादन में बनाया नंबर वन

मशरूम एवं इसके उत्पादों के वेल्यू एडिशन पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि आज मशरूम अपने प्रभेदों और उत्पादों के विविधता के एक पूर्ण व्यवसायिक क्षेत्र के रूप में विकसित हो चुका है। आवश्यकता है अब इसके योजनाबद्ध व्यवसायिकरण की और मशरूम किसानों व उत्पादाके को उचित बाजार उपलब्ध कराने की। वहीं वक्ताओं ने कहा कि हालिया दिनों में मशरूम ही नहीं मशरूम से बने उत्पादों की भी वैश्विक स्तर पर मांग में बेतहाशा वृद्धि हुई है। जिससे एक विकसित व्यवसायीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ और इस क्षेत्र में व्यवसाय एवं रोजगार की संभावनाओं में आशातीत उछाल आया है। डॉ आरपीके रॉय बेसिक साइंस ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर पंजाब नेशनल बैंक के प्रबंधक अमित गुजन के अलावा सुभाष कुमार सहित मशरूम कर्मी एवं प्रशिक्षु मौजूद थे।

राष्ट्रीय सहारा 12/11/25 पेज 2

टेक्नोक्रेट्स और युवाओं के समन्वित प्रयास से आएगी मशरूम जगत में अपूर्व क्रांति : डॉ दयाराम

समस्तीपुर (एसएनबी)। टेक्नोक्रेट्स और युवाओं के समन्वित प्रयास से मशरूम जगत में अपूर्व क्रांति आएगी जिससे दुनिया में दूसरे श्वेत क्रांति की राह आसान हो जाएगी जो मशरूम की कोख से उत्पन्न होगी। मंगलवार को जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय विश्व विद्यालय के संचार केंद्र सभागार में आयोजित सात दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए विश्व विद्यालय के मशरूम सलाहकार डॉ दयाराम ने संवाददाता से बातचीत के दौरान उक्त बातें कही। मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्कृण तकनीक विषयक 7 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन के बाद वे संवाददाता से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ग्रामीण एवं मेहनतकश महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन का प्रतीक, सेहत, स्वाद और समृद्धि का अद्भुत कॉम्बो खेती बिना खेत मशरूम बहुआयामी उपयोगिता वाला फसल है। आज जब हमारी धरती बेतहाशा उर्वरक के प्रयोग से कराह रही है, मृदा की उर्वरक क्षमता निरंतर कम होती जा रही है ऐसे में मशरूम के अवशेष प्राकृतिक खेती की दिशा में एक नई उम्मीद जगाती है। जी हां! मशरूम कंपोस्ट मृदा की उर्वरक क्षमता लौटाने में पूर्णतः सक्षम है। डॉ दयाराम ने कहा कि, एक समय था जब मशरूम सिर्फ ठंडे मौसम में ही उगाया जाता था। ओयेस्टर एवं बटन मशरूम का ही उत्पादन होता था। आज मशरूम के करीब 12 प्रभेद उगाये जाते है, और बारहो महीने तथा हर मौसम में उगाये जाते है। इन 12 प्रभेदों में से 6 तो बडे पैमाने विकसित रूप में ग्रामीण क्षेत्र उगाये जाते है। आज हमारा सलाना उत्पादन 45 टन प्रतिवर्ष है, इसे 2025-26 में 50 टन करने का लक्ष्य है। डॉ दयाराम ने कहा कि सिर्फ मशरूम नहीं गावों में मशरूम के 50 से अधिक उत्पाद बना कर खाये व बेचे जाते है। इसकी मांग वैश्विक स्तर पर बढी है। आज मशरूम एवं इसके उत्पादों कां वैश्विक बाजार के अनुरूप व्यवसायिकरण करने की जरूरत है। यह सुखद संकेत है कि मशरूम के क्षत्र में नई पीढी एवं तकनीकी विशेषज्ञो की दिलचस्पी बढी है। यह पीढी निश्चित ही पूरे देश में श्वेत क्रान्ति 2 का वाहक बनेगी।

संबोधित करते डॉ दयाराम।

भास्कर 13/11/25 पेज 14

कृषि • बीज उपचार एक छोटी-सी प्रक्रिया लेकिन इसका लाभ अधिक, कई गुना बढ़ जाती है उपज

रोपाई से पहले आलू के बीज का उपचार जरूरी इससे बीज की गुणवत्ता बढ़ेगी : डॉ. एसके सिंह

भास्कर न्यूज | पूसा

आलू रोपाई का समय आरंभ हो चुका हैं। आलू से अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए आलू के बीज को उपचारित करके ही उसे खेतों में लगाने की जरूरत हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के प्लांट पैथोलॉजी एवं नेमेटोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. एस.के.सिंह ने आलू उत्पादकों को एक खास सुझाव देते हुए दी है। डॉ. सिंह ने बताया कि आलू रोपाई से पहले आलू के कंदों का उपचार एक छोटी लेकिन बेहद महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया आलू के पौधों को रोगों के प्रति एक कवच प्रदान करती है जिसका लाभ किसानों को आलू फसल तैयार होने तक मिलता रहता है। कृषि वैज्ञानिक के अनुसार यदि आलू उत्पादक किसान बीज का उपचार कर आलू की रोपाई करते हैं तो वे आलू के फसल में लगने वाले रोगों के जोखिम को 50 प्रतिशत तक कम कर सकते हैं। इतना ही नही बीज उपचार कर रोपे गए आलू की फसल में अंकुरण क्षमता और पौधे की शुरुआती वृद्धि काफी बेहतर होती है तथा आलू से स्वस्थ और आकर्षक फल प्राप्त होने के अलावे किसानों को अधिक उपज भी मिलती है। आलू के बीज को उपचारित करने वाले प्रक्रिया का लाभ किसानों को तभी मिलता है जब उनके आलू के बीज की गुणवत्ता अच्छी हो। किसानों को आलू रोपाई से पूर्व सबसे पहले बीज के उद्देश्य से स्वस्थ आलू के कंदों का चयन करना चाहिए। कंद का आकार मध्यम यानी 40 से 50 ग्राम तक होना चाहिए। कंद की सतह चमकदार, सख्त और दाग-धब्बों से मुक्त होनी चाहिए। आलू पर पड़े काले धब्बे, सड़न, दरारें या कीड़ों द्वारा बनाए गए छेद वाले आलू के कंदों का उपयोग हरगिज नही करना चाहिए। आलू रोपाई से पहले तथा आलू के बीज को उपचारित करने से पहले किसान आलू के कंदों की सफाई यानी आलू पर चिपके हुए मिट्टी, धूल और फफूंद के बीजाणुओं को हटा दें। इसके बाद ही आलू के बीज को उपचारित करें।

आलू के कंदों को साफ पानी से धोकर ही बीज उपचारित करें

उपचारित किये गए आलू के बीज।

किसान आलू बीज को उपचारित करने के समय बरतें ये सावधानियां

कृषि वैज्ञानिक के अनुसार आलू बीज को उपचारित करने के दौरान हमेशा ताजे और स्वच्छ पानी का उपयोग करें। यह प्रक्रिया तेज धूप में न करें। आलू के कंदों को घोल में 10 मिनट से ज्यादा न डुबोएं। ध्यान दें कि कंदों के अंकुर सुरक्षित रहें। उपचार के बाद बीजों को छाया में सुखा लें तथा उसे नम न रहने दें। रासायनिक और जैविक उपचार अलग-अलग चरणों में करें। आलू की रोपाई से 2 से 3 दिन पहले बीज कंदों को छाया में फैलाकर उसकी ग्रीनिंग या क्योरिंग करें। ऐसा करने से आलू के कंद मजबूत होते हैं। यदि आलू के कंद कोल्ड स्टोरेज से निकाले गए हैं तो उन्हें 48 घंटे तक कमरे के तापमान पर रखें ताकि वे सामान्य तापमान पर आ सकें।

रासायनिक विधि से आलू के बीजों का उपचार करना जरूरी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया की आलू के कंदों को बीमारियों से बचाने के लिए किसान रासायनिक और जैविक दोनों तरीकों से बीज को उपचारित कर सकते हैं। रासायनिक उपचार के तहत किसान आलू के बीज को दवाओं के घोल में डुबाकर उपचारित कर सकते हैं। यह विधि ब्लैक स्कर्फ, सिल्वर स्कर्फ, राइजोक्टोनिया और सूखी सड़न जैसे रोगों को नियंत्रित करने का सबसे प्रभावी तरीका है। किसान मैनकोजेब दवाई का 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के अनुसार घोलकर आलू के बीज को करीब 10 मिनट तक उसमें डुबोएं रखे। किसान मैनकोजेब के अलावे कार्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल जैसे दवाओं का निर्धारित मात्रा में उपयोग करके भी आलू के बीज को उपचारित कर सकते है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि आलू के बीज पर जैव-एजेंट का प्रयोग भी आलू के कंद पर लाभकारी सूक्ष्मजीवों की एक सुरक्षा परत बना देता है। यह मिट्टी में मौजूद हानिकारक फफूंद और जीवाणुओं से फसल की रक्षा करता है। इसके लिए किसान ट्राइकोडर्मा विरिडी, टी.हार्जिएनम या स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस जैसे जैव दवाओं का उपयोग कर सकते हैं।

भास्कर 13/11/25 पेज 14

कार्यक्रम • औषधीय एवं सुगंधित पौधों के उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर चल रहा प्रशिक्षण

रोज ऑयल की खेती कर किसान लगातार 25 से 30 साल तक प्राप्त कर सकते हैं आमदनी : डॉ. रत्नेश झा

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में औषधीय एवं सुगंधित पौधों के उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर चल रहा प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण के साथ ही संपन्न हो गया। इस मौके पर समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए विवि के प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि खासकर बिहार राज्य के किसानों के द्वारा रोज ऑयल का उत्पादन कर अपने आप में आर्थिक समृद्धता लाई जा सकती है। रोज ऑयल के उत्पादन में किसानों को सरकारी सब्सिडी मिलने के साथ-साथ उन्हें लंबे समय तक आय प्राप्त हो सकता हैं। उन्होंने कहा कि किसान रोज ऑयल की फसल एक बार लगाकर 25 से 30 साल तक आय प्राप्त कर सकते हैं। इतना ही नही किसान रोज ऑयल के पौधों के बीच वाले खाली जगह में अन्य फसलों को उगाकर अतिरिक्त कमाई भी कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा ऑयल पाम या अन्य तेल फसलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी और तकनीकी सहायता भी प्रदान की जा रही है। इस क्षेत्र में ऑयल प्लांट जैसे स्थानीय प्रसंस्करण वाले इकाइयों की स्थापना करके भी स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा किये जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि रोज एसेंशियल ऑयल की बाजार में कीमत बहुत ज्यादा होती है जिससे किसानों को अत्यधिक लाभ मिल सकता है।संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण सह ट्रेनिंग कॉर्डिनेटर डॉ. बिनीता सतपथी ने कहा कि औषधीय पौधे की खेती करने पर बिहार सरकार की ओर से किसानों को 75 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर का अनुदान दिए जाने की व्यवस्था भी की गई है।किसान छोटे डिस्टिलेशन यूनिट लगाकर गुलाब जल और अन्य ब्यूटी प्रोडक्ट्स बनाकर अपनी कमाई को बढ़ा सकते हैं। मौके पर बिहार के विभिन्न जिलों से पहुंचे किसानों के अलावे एटीएम, बीटीएम, बीएचओ सहित विवि कर्मी सूरज, विक्की, रामविलास महतो आदि मौजूद थे।

प्रमाण पत्र के साथ मौजूद प्रशिक्षणार्थी।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 16 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। हालांकि तापमान में नमी बरकरार रहेगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में न्यूनतम तापमान में 2 से 4 डिग्री की कमी हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
13 नवंबर	28.2	13.5
14 नवंबर	28.6	13.5
	दरभंगा	
13 नवंबर	28.6	13.5
14 नवंबर	28.6	14.0
	पटना	
13 नवंबर	30.2	15.8
14 नवंबर	30.2	15.8

डिग्री सेल्सियस में

महिलाओं के साथ गांव स्थित बधार में

तीन दिवसीय प्रशिक्षण का किया आयोजन

पूसा। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में औषधीय एवं सुगंधित पौधों का उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर जारी तीन दिवसीय प्रशिक्षण बुधवार को संपन्न हो गया। इस दौरान प्रशिक्षुओं के बीच प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि बदलते समय में औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन समय की मांग है। प्रशिक्षण आयोजक डॉ. विनिता शतपती ने भी संबोधित किया।

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों को गेहूं, रबी मक्का, आलू की फसलों की बोआई व रोपाई का सुझाव दिया

प्रभात खबर 13/11/25 पेज 6

किसान गेहूं व रबी मक्का की करें बोआई, मौसम अनुकूल

प्रतिनिधि,समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों को गेहूं, रबी मक्का, आलू की फसलों की बोआई व रोपाई का सुझाव दिया है. कहा कि इन फसलों की बोआई व रोपाई के लिये मौसम पूरी तरह अनुकूल है. कहा कि गेहूं की बोआई के लिए तापमान अनुकूल हो गया है. किसान इसकी बोआई शुरू करें. खेत की तैयारी के समय 150 से 200 क्विंटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस तथा 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टयेर की दर से व्यवहार करें. बोआई के लिये एचडी-2967, एचडी-2733, एचडी-2824, डीडब्लू-187, डीडब्लू-39, एचयूडब्ल्यू -468, सीबीडब्लू-38 किस्में उत्तर बिहार के लिये अनुशंसित है. बीज को बोआई से पहले 2.5 ग्राम बेबीस्टीन की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें. छिटकबां विधि से बोआई के लिए प्रति हेक्टयेर 125 किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बोआई के लिये 100 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें. बीज के अच्छे जमाव के लिए खेत में नमी का होना आवश्यक है.किसान रबी मक्का की बोआई करें.

इसके लिए संकर किस्में शक्तिमान-1 सफेद, शक्तिमान-2 सफेद, शक्तिमान-3 पीला, शक्तिमान 4 पीला, शक्तिमान-5 पीला, गंगा 11 नारंगी पीला, राजेन्द्र संकर मक्का-1, राजेन्द्र संकर मक्का 2 एवं राजेन्द्र संकर मक्का दीप ज्वाला तथा संकुल किस्में देवकी सफेद, लक्ष्मी सफेद एवं सुआन पीला इस क्षेत्र के लिए अनुशंसित है. खेत की जुताई में 100-150 क्विंटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 75 किलोग्राम फॉस्फोरस तथा 50 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से व्यवहार करें. बीज दर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टयेर तथा दूरी 60 गुणा 20 सेमी रखें.

किसान आलू की रोपाई करें. कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी सिंदुरी, कुफरी अरुण, राजेन्द्र आलू-1, राजेन्द्र आलू- 2 तथा राजेन्द्र आलू-3 इस क्षेत्र के लिए अनुशंसित किस्में है. बीज दर 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टयेर रखें. पंक्ति से पंक्ति की दूरी 50 से 60 सेमी एवं बीज से बीज की दूरी 15-20 सेमी रखें.आलू को काट कर लगाने पर 2 से 3 स्वस्थ आंख वाले टुकडे को उपचारित कर 24 घंटे के अन्दर लगावें. बीज को एगलॉल या एमीसान के 0.5 प्रतिशत घोल या डाइथेन एम-45 के 0.2 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर रोपनी करें. समूचा आलू (20-40 ग्राम) लगाना श्रेष्ठकर है. खेत की जुताई में कम्पोस्ट 200-250 क्विंटल, 75 किलोग्राम नेत्रजन, 90 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 100 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें. चना की बोआई के लिये मौसम अनुकूल हो रहा है.

बोआई के समय 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम फॉस्फोरस, 20 किलोग्राम पोटास तथा 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टयेर की दर से व्यवहार करें. चना के लिए उन्नत किस्म पूसा-256, केपीजी-59(उदय) एवं पूसा-372 अनुशंसित है. बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करें. 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 8 मिली प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें. पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखन के बाद राईजोबीयम कल्चर (पांच पैकेट प्रति हेक्टयेर) से उपचारित कर बोआई करें. मसूर के मल्लिका(के-75), अरुण (पीएल 77-12), बीआर-25 केएलएस- 218, एचयूएल-57, पीएल-5 एवं डब्लूवीएल- 77 किस्मों की बोआई करें. बोआई के समय खेत की जुताई में 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम फॉस्फोरस, 20 किलोग्राम पोटास तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें. बोआई के 2-3 दिन पूर्व कार्बेंडाजीम फूंदनाशक दवा का 1.0 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित करें. तत्पश्चात कीटनाशी दवा क्लोरपाईरीफॉस 20 ईसी का 8 मिली प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें. बोआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर (5 पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बोआई करें.

वैज्ञानिक ने कहा है कि विगत माह बोयी गई मटर, राजमा, लहसून तथा सब्जियों वाली फसलें बैगन, टमाटर, मिर्च, पत्तागोभी तथा फूलगोभी की निकाई गुराई तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें. सब्जियों में कीट- व्याधि की निगरानी करें. प्याज की स्वस्थ्य पौध के लिए पौधशाला से प्रत्येक 10 से 12 दिनों के अन्तराल में खरपतवार निकाल कर हल्की सिंचाई करें.

प्रभात खबर 13/11/25 पेज 5

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि परिसर स्थित संचार केंद्र में कार्यक्रम

रोज ऑयल के उत्पादन से किसानों में आयेगी समृद्धि : डॉ रत्नेश कुमार झा

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में औषधीय एवं सुगंधित पौधों का उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर चल रहे प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण के साथ संपन्न हुआ.

प्रमाण पत्र के साथ प्रतिभागी.

अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि खासकर बिहार राज्य के किसानों में रोज ऑयल का उत्पादन से आर्थिक समृद्धि आ सकती है. रोज ऑयल के उत्पादन से किसानों को उच्च आय, सरकारी सब्सिडी और लंबे समय तक चलने वाली कमाई जैसे कई लाभ होते हैं. वे एक बार फसल लगाने के बाद 25-30 साल तक आय प्राप्त कर सकते हैं. पौधों के बीच की खाली जगह में अन्य फसलें उगाकर अतिरिक्त कमाई कर सकते हैं.

इसके अलावा सरकार द्वारा ऑयल पाम या अन्य तेल फसलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी और तकनीकी सहायता भी प्रदान की जाती है. ऑयल प्लांट जैसे स्थानीय प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी पैदा होते हैं. संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण सह ट्रेनिंग कॉर्डिनेटर डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि औषधीय पौधे पर बिहार सरकार की ओर से किसानों के लिए 75 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर की अनुदान ऑन स्पॉट व्यवस्था की गयी है. किसान छोटे डिस्टिलेशन यूनिट लगाकर गुलाब जल और अन्य ब्यूटी प्रोडक्ट्स बनाकर अपनी कमाई बढ़ा सकते हैं. मौके पर बिहार के विभिन्न जिले के किसान एटीएम बीटीएम बीएचओ सहित सूरज, विक्की, रामविलास महतो आदि मौजूद थे.

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 16 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। हालांकि तापमान में नमी बरकरार रहेगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में न्यूनतम तापमान में 2 से 4 डिग्री की कमी हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
14 नवंबर	28.2	13.5
15 नवंबर	28.6	13.5
दरभंगा		
14 नवंबर	28.6	13.5
15 नवंबर	28.6	14.0
पटना		
14 नवंबर	30.2	15.8
15 नवंबर	30.2	15.8

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 15/11/25 पेज 7

यूजी, पीजी व पीएचडी का नामांकन 21-22 को

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा में कृषि स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी में नामांकन को लेकर तैयारी तेज है। आगामी 21 एवं 22 नवम्बर को कृषि विवि मुख्यालय परिसर में छात्रों व उनके प्रमाण पत्रों का भौतिक सत्यापन किया जाएगा।

छात्रों की सुविधा के लिए नामांकन से जुड़ी जानकारियां विवि के वेबसाइट पर उपलब्ध करा दी गई है। मिली जानकारी के अनुसार विवि में यूजी, पीजी और पीएचडी के कुल 807 सीटों पर नामांकन की प्रक्रिया होना है। जिसमें देश भर के विभिन्न राज्यों के चयनित छात्र-छात्राएं पूसा पहुंच कर नामांकन प्रक्रिया पूर्ण करायेंगे। इस दौरान यूजी के 9 अलग कोर्स में 429 सीटों पर नामांकन होगा। वहीं पीजी के 31 विषयों में 312 एवं पीएचडी के 22 विषयों में 66 सीटों पर नामांकन की प्रक्रिया पूर्ण की जायेगी। नामांकन के बाद सीट रिक्त रहने पर आईसीएआर स्तर पर मॉप अप राउन्ड आयोजित होगी। विविमें छात्रों का नामांकन आईसीएआर के मेरिट लिस्ट एवं चयनित छात्रों के आवंटित विवि के आधार पर होता है।

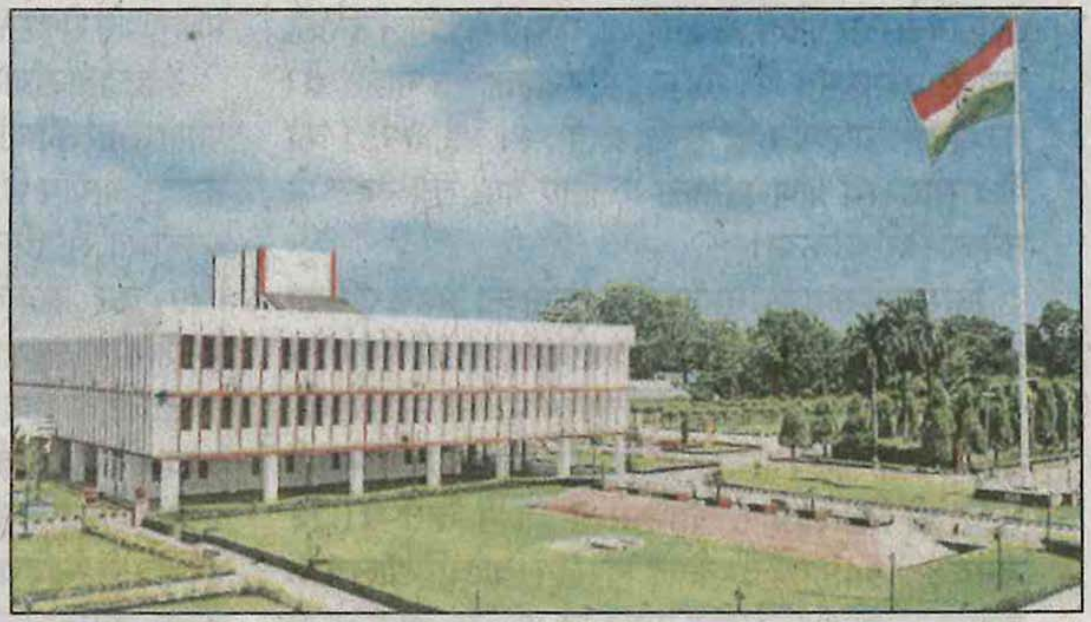

केंद्रीय कृषि विवि पूसा का परिसर।

कोर्स व सीटों की संख्या

कृषि स्नातक	99
हॉर्टिकल्चर	55
फॉरेस्ट्री	33
सामुदायिक विज्ञान	44
मत्स्यकी	44
बीटेक(कृयि अभियंत्रण)	44
बीटेक(फूड टेक)	33
बीएसी(नेचुरल फार्मिंग)	22
बीटेक(बायोटेक्नोलॉजी)	55
पीजी	312
पीएचडी	66

भास्कर 16/11/25 पेज 14

अनुसूचित जाति से जुड़े किसानों के बीच आलू बीज का वितरण

कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को दी खेती की जानकारी

भास्कर न्यूज | पूसा

प्रशिक्षण में मौजूद किसान।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में शनिवार को अखिल भारतीय आलू अनुसंधान परियोजना के अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतरगत एक दिवसीय प्रशिक्षण सह आलू बीज वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पहुंचे किसानों को कृषि वैज्ञानिकों ने आलू के उन्नत प्रभेद, शस्य क्रियाएँ, रोग प्रबंधन आदि विषयों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संस्थान के हेड डॉ.आरके तिवारी ने भारत सरकार के अनुसूचित जाति उपयोजना के महत्व के बारे में किसानों को विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि अनुसूचित जाति के उत्थान के लिए इस उपयोजना को चलाया जा रहा है। इस योजना के तहत आलू के उन्नत प्रभेद कुफरी नीलकंठ के गुणवत्तापूर्ण बीज का प्रत्यक्षण व वितरण अनुसूचित जाति के चयनित किसानों के बीच किया जा रहा हैं। डॉ. आशीष नारायण ने आलू के विभिन्न प्रभेदों के बारे में जानकारी दी। डॉ.अमरेन्द्र कुमार ने आलू के शस्य क्रियाओं, पोषक तत्व प्रबंधन, रोग आदि के बारे में किसानों को बताया। डॉ.धीरू कुमार तिवारी ने आलू में जैव उर्वरकों के उपयोग खासकर पीएसबी से कंद उपचार करने पर जोर दिया। सिंचाई प्रबंधन के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आलू में हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है।

हिन्दुस्तान 16/11/25 पेज 5

आलू की खेती को रोग से बचाने की दी जानकारी

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में आलू के बीज का वितरण करते वैज्ञानिक।

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में शनिवार को अखिल भारतीय आलू अनुसंधान परियोजना के अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत एक दिवसीय प्रशिक्षण सह आलू बीज वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में किसानों को आलू के उन्नत प्रभेदों, शस्य क्रियाएं, रोग प्रबंधन आदि विषयों पर विस्तार से जानकारी दी गई। मौके पर केन्द्र प्रमुख डॉ. आर के. तिवारी ने भारत सरकार की अनुसूचित जाति उपयोजना के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अनुसूचित जाति के उत्थान के लिए इस उप योजना को चलाया जा रहा है।

इसके तहत आलू के उन्नत प्रभेद कुफरी नीलकंठ के गुणवत्तापूर्ण बीज का प्रत्यक्षण अनुसूचित जाति के चयनित किसानों के यहां किया जायेगा। वैज्ञानिक डॉ. आशीष नारायण ने आलू की विभिन्न प्रभेदों के बारे में जानकारी दी।

वैज्ञानिक ने किसानों को रबी फसलों के बीजों की अनुशंसा की

खेती- किसानी

- न्यूनतम तापमान के सामान्य तीन से पांच डिग्री सेल्सियस तक कम होने के आसार

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मौसम की अनुकूलीय परिस्थियों को देखते हुये किसानों के लिये रबी फसल बोआई के लिये बीजों की अनुशंसा की है. वैज्ञानिक के अनुसार मौसम पूरी तरह शुष्क रहेगा. वहीं तापमान भी गेहूं सहित अन्य फसलों की बोआई के लिये पूरी तरह अनुकूल है.अगले 19 नवंबर तक अधिकतम तापमान 25 से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है.वहीं न्यूनतम तापमान, सामान्य तापमान से 3 से 5 डिग्री सेल्सियस कम रह सकता है और इसके 13-15 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है. सापेक्ष आद्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 70 प्रतिशत रहने की संभावना है. वैज्ञानिक ने किसानों को सुझाव दिया है कि गेहूं की बोआई के लिए तापमान तथा अन्य मौसमीय परिस्थितियां अनुकूल है. किसान सिंचित एवं समयकालीन गेहूं की किस्मों की बोआई प्राथमिकता से करें. खेत की तैयारी के समय 150-200 क्विंटल कम्पोस्ट, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. वैज्ञानिक ने गेहूं की एचडी-2967, एचडी-2733, एचडी -2824, डीडब्लू-187, डीडब्लू- 039, एचयुडब्लू- 468, सीबीडब्ल्यू-38 किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है. बीज को बोआई से पहले 2.5 ग्राम बेबीस्टीन की दर से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें. छिटकबां विधि से बोआई के लिए प्रति हेक्टेयर 125 किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बोआई बोआई के लिए 100 किलोग्राम बीज का व्यवहार करें.चना की बोआई के लिए मौसम अनुकूल है. बोआई के समय 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम फॉस्फोरस, 20 किलोग्राम पोटास तथा 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. चना के लिए उन्नत किस्म पूसा-256, केपीजी-59(उदय) तथा पूसा 372 अनुशंसित है. बीज को बेबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें. 24 घंटा बाद उपचारित बीज को कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 8 मिली प्रति किलोग्राम की दर से मिलावें. पुनः 4 से 5 घंटे छाया में रखने के बाद राईजोबीयम कल्चर (पांच पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बोआई करें. वैज्ञानिक ने कहा है कि आलू की कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी सिंदुरी, कुफरी अरुण, राजेन्द्र आलू-1,राजेन्द्र आलू-2 तथा राजेन्द्र आलू-3 इस क्षेत्र के लिए अनुशंसित किस्में है. बीज दर 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें. पंक्ति से पंक्ति की दूरी 50-60 सेमी एवं बीज से बीज की दूरी 15-20 सेमी रखें.

आलू को काटकर लगाने पर 2 से 3 स्वस्थ आंख वाले टुकड़े को उपचारित कर 24 घंटे के अन्दर लगावें. बीज को एगलॉल या एमीसान के 0.5 प्रतिशत घोल या डाइथेन एम-45 के 0.2 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर रोपनी करें. समूचा आलू (20-40 ग्राम) लगाना श्रेष्ठकर है. खेत की जुताई में कम्पोस्ट 200-250 क्विंटल, 75 किलोग्राम नेत्रजन, 90 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 100 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें. किसान पिछेती धान की कटाई कर राई की पिछेती किस्में राजेन्द्र अनुकूल, राजेन्द्र सुफलाम तथा राजेन्द्र राई पिछेती की बोआई कर सकते हैं. राई–तोरी–सरसों की फसल जो 15 से 20 दिनों की हो गयी है उसमें निकौनी तथा बछनी कर पौधे से पौधे की दूरी 12 से 15 सेमी रखें.

मक्का, मटर, मसूर एवं राजमा की 20 से 25 दिनों की फसलों में कजरा (कटुआ) पिल्लू की निगरानी करें. इस कीट के पिल्लू रात्रि के समय निकलकर इन फसलों के छोटे-छोटे उग रहे पौधों पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है. यह पिल्लू अधिकतर दिन में भूमि के अन्दर दरारों में या ढ़ेलों के नीचे छिपी रहती है और इन कटी शाखाओं को जमीन के अन्दर ले जाकर दिन में भी खाती है. यह खाती कम नुकसान अधिक करती है. इसकी रोकथाम के लिए खेत की सिंचाई करने पर इसके पिल्लू दरार से बाहर निकलते हैं एवं पक्षियों द्वारा शिकार हो जातें हैं. खड़ी फसलों में बीच–बीच में घास–फूस के छोटे-छोटे ढेर शाम के समय लगा देते हैं. रात्रि में यह कीट फ़सलों को खाकर इसी ढेर में छिप जाते हैं. किसान सुबह में छिपे पिल्लू को चुनकर नष्ट कर देतें हैं. अधिक नुकसान होने पर क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी दवा का 2.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें.

इस मौके पर राजस्व कर्मचारी राकेश कुमार, सहित कारपदाी मुख्य रूप से मौजूद थे।

राष्ट्रीय सहारा 16/11/25 पेज 2

केविके बिरौली में एक दिवसीय प्रशिक्षण सह आलू बीज वितरण कार्यक्रम आयोजित

समस्तीपुर। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में शनिवार को अखिल भारतीय आलू अनुसंधान परियोजना के अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत, एक दिवसीय प्रशिक्षण सह आलू बीज वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आलू के उन्नत प्रभेदों, शस्य क्रियाएँ, रोग प्रबंधन आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर केविके बिरौली के अध्यक्ष वरिय वैज्ञानिक डॉ० आर.के. तिवारी ने भारत सरकार की अनुसूचित जाति उपयोजना के महत्य के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अनुसूचित जाति के उत्थान हेतु इस उपयोजना को चलाया जा रहा है। इसी के तहत आलू के उन्नत प्रभेद कुफरी नीलकंठ के गुणवत्तापूर्ण बीज का प्रत्यक्षण अनुसूचित जाति के चयनित किसानों के यहाँ दिया गया। वहीं ढोली स्थित तिरहुत .षि महाविद्यालय के आलू शाखा में कार्यरत वैज्ञानिक व मुख्य अन्वेषक डॉ० आशीष नारायण ने आलू की विभिन्न प्रभेदों के बारे में जानकारी दी। जबकि शस्य वैज्ञानिक डॉ० अमरेन्द्र कुमार द्वारा आलू में की जाने वाली शस्य क्रियाओं, पोषक तत्व प्रबंधन, रोग एवं कीट प्रबंधन के बारे में बताया। डॉ० धीरू कुमार तिवारी द्वारा आलू में जैव उर्वरकों के उपयोग खासकर पी.एस.बी. से कंद उपचार करने पर जोर दिया गया। सिंचाई प्रबंधन के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आलू में हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसलिए खेत में पानी नहीं लगाना चाहिए।

भास्कर 17/11/25 पेज 13

गेहूं में खरपतवार रहने से कम होती है उपज

सलाह : किसान वैज्ञानिक विधि से करें प्रबंधन

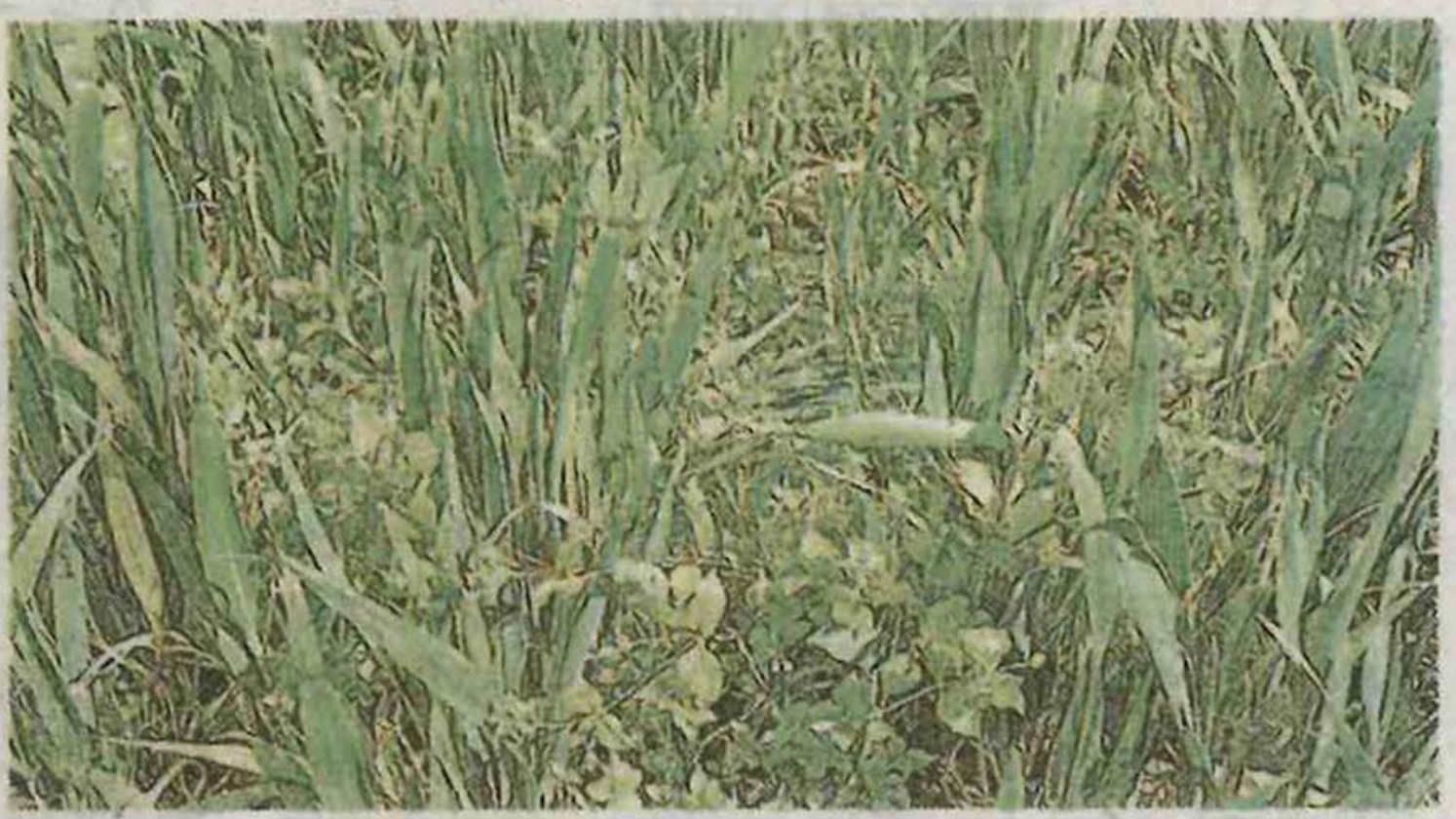

गेहूं के फसल में उगा खरपतवार।

भास्कर न्यूज | पूसा

गेहूं पूरे विश्व में उगाई जाने वाली महत्वपूर्ण फसल है। भारत में यह मुख्य खाद्य फसलों में से एक है। गेहूं के उत्पादन में कमी आने का मुख्य कारण रोग और कीट के अलावे खरपतवार भी होता हैं। खरपतवार के कारण देश में गेहूं की फसल का उतना उत्पादन नहीं हो पाता है जितना होना चाहिए। ऐसी स्थिति में एकीकृत खरपतवार प्रबंधन तकनीक गेहूं उत्पादक किसानों के लिए काफी लाभकारी तकनीक हैं। ये जानकारी बोरलॉग इंस्टीच्यूट फॉर साउथ एशिया संस्थान पूसा के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजकुमार जाट ने दी। उन्होंने कहा कि किसान इस तकनीक के जरिए विभिन्न तरीकों से यानी रासायनिक, यांत्रिक और पारंपरिक विधियों से गेहूं के फसलों में उगे खरपतवारों को नियंत्रित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि एकीकृत खरपतवार प्रबंधन शाकनाशियों पर निर्भरता को कम करता है तथा खरपतवारों के सफल नियंत्रण या उन्मूलन की संभावना को बढ़ाता है। उन्होंने बताया की खरपतवार प्रकाश, पानी, जड़ स्थान और पोषक तत्वों के लिए गेहूं की फसल के साथ प्रतिस्पर्धा करता हैं और अगर खरपतवार को ठीक से नियंत्रित ना किया जाये तो खरपतवार के कारण मुख्य फसल की उपज में 20 से 30 प्रतिशत की कमी हो जाती है। उन्होंने बताया कि कुछ खरपतवार तो गेहूँ की फसल को हानि पहुंचाने वाले कीट- पतंगों तथा रोगों के लिए भी एक वैकल्पिक मेजबान के रूप में कार्य करता है। डॉ. जाट ने बताया कि गेहूं की फसल में दो प्रकार के खरपतवार पाए जाते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने अगले चार दिनों तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। हालांकि तापमान में नमी बरकरार रहेगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में न्यूनतम तापमान में 2 से 4 डिग्री की कमी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
17 नवंबर	24.0	14.5
18 नवंबर	24.6	14.5
	दरभंगा	
17 नवंबर	24.6	14.5
18 नवंबर	24.6	15.0
	पटना	
17 नवंबर	26.2	16.8
18 नवंबर	26.2	16.8

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 17/11/25 पेज 4

लैब में औषधीय मशरूम के बीज उपलब्ध, उठाएं फायदा

फार्म में लगा औषधीय मशरूम.

प्रतिनिधि,पूसा

डा राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के लैब में औषधीय मशरूम के विभिन्न प्रभेदों के बीज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं. इसमें मुख्यरूप से शिटाके, इनोकी व किंग ओयस्टर मशरूम (औषधीय मशरूम) की खेती नवम्बर से फरवरी तक करना लाभकारी होता है. उत्पादन तकनीक एवं बीज के लिए विभाग के संबंधित वैज्ञानिकों एवं मशरूम विशेषज्ञ से प्राप्त कर सकते हैं. औषधीय मशरूम शिटाके, इनोकी और किंग ओयस्टर की खेती बिहार के विभिन्न जिलों में होना संभव हो गया है. अधिक से अधिक मात्रा में उत्पादन कर किसान ज्यादा से ज्यादा आमदनी प्राप्त कर सकते हैं.

औषधीय मशरूम की खेती झोपड़ी में बड़े ही सहजता के साथ हो जाता है. जबकि मशरूम के अन्य प्रभेदों की खेती के लिए तापमान नियंत्रित कक्ष का होना अनिवार्य है. केंद्र प्रभारी डॉ आरपी प्रसाद का कहना है कि सामान्य रूप से अब मशरूम बिहार के सभी जिलों में उत्पादन हो रहा है. इस पर अब देश के अन्य प्रदेशों में भी उत्पादन की शुरुआत हो चुकी है.

प्रभात खबर 16/11/25 पेज 6

अनुसूचित जाति उपयोजना के महत्व को समझने की जरूरत : डॉ आरके तिवारी

प्रतिनिधि, पूसा

योजना के अंतर्गत आलू प्राप्त करते किसान .

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में शनिवार को अखिल भारतीय आलू अनुसंधान परियोजना के अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण सह आलू बीज वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया. इसमें आलू के उन्नत प्रभेदों, शस्य क्रिया, रोग प्रबंधन आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई. डॉ आरके तिवारी ने भारत सरकार की अनुसूचित जाति उपयोजना के महत्व के बारे में किसानों को विस्तार से जानकारी दी. कहा कि अनुसूचित जाति के उत्थान के लिए इस उपयोजना को चलाया जा रहा है. इसी के तहत आलू के उन्नत प्रभेद कुफरी नीलकंठ के गुणवत्तापूर्ण बीज का प्रत्यक्षण अनुसूचित जाति के चयनित किसानों के बीच वितरण किया गया. डा आशीष नारायण ने आलू की विभिन्न प्रभेदों के बारे में जानकारी दी. डॉ अमरेन्द्र कुमार ने आलू में की जाने वाली शस्य क्रियाओं, पोषक तत्व प्रबंधन, रोग एवं कीट प्रबंधन के बारे में बताया. डॉ धीरू कुमार तिवारी ने आलू में जैव उर्वरकों के उपयोग खासकर पीएसबी से कंद उपचार करने पर जोर दिया. सिंचाई प्रबंधन के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आलू में हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है. इसलिए खेत में पानी नहीं लगाना चाहिए. इस कार्यक्रम में ढोली स्थित तिरहुत कृषि महाविद्यालय के आलू शाखा में कार्यरत वैज्ञानिक डॉ आशीष नारायण, मुख्य अन्वेषक व डॉ अमरेन्द्र कुमार, शस्य वैज्ञानिक ने बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी के माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया.

भास्कर 18/11/25 पेज 11

कार्यक्रम • डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक

किसान की समस्याओं को चिह्नित कर वैज्ञानिक करें अनुसंधान तभी कृषि क्षेत्र में होगी उन्नति और बढ़ेगी आमदनी : कुलपति

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में सोमवार को क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक सत्र 2025-26 आयोजित की गई। बैठक में विवि एवं विवि के अधीनस्थ सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक, किसान एवं बिहार सरकार से जुड़े कृषि पदाधिकारी मौजूद थे। बैठक का उद्घाटन कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर बैठक में उत्तर बिहार के विभिन्न जिलों से पहुंचे दर्जनों किसानों ने अपनी अपनी समस्याओं को समिति से जुड़े वैज्ञानिकों के समक्ष रखा। इस मौके पर कुलपति डॉ. पी एस पांडे ने अपने संबोधन में वैज्ञानिकों से कहा की वे किसानों के समस्याओं को चिन्हित कर उस पर तत्परता से कार्य करें। समस्या का निदान मिलने पर संबंधित किसानों को बताए कि उनकी समस्या का समाधान किया जा चुका गया है। कुलपति ने कहा की बैठक में किसानों की ओर से बताई गई कृषि की समस्या विश्वविद्यालय के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। विवि और यहां के वैज्ञानिक किसानों के तमाम समस्याओं पर जल्द से जल्द और प्रमुखता से काम आरंभ करेंगे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अपने कृषि अनुसंधान को कृषि विज्ञान केंद्रों को देगा और केवीके उसे किसानों तक पहुँचाएंगे। इसमें प्रसार कार्यकर्ताओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने कहा कि बिहार के कृषि रोड मैप में किसानों द्वारा बताई गई समस्या अगर नहीं होगी तो इन समस्याओं को रोड मैप में जोड़कर इसे सरकार के साथ साझा किया जाएगा। कुलपति ने वैज्ञानिकों से पूछा की विश्वविद्यालय के फार्म और किसानों के खेतों में लगाए गए ऑन फॉर्म डेमोंसट्रेशन में किसानों का उत्पादन क्यों घट जाता है इस पर वैज्ञानिकों को चिंतन करने की जरूरत है।

बैठक में मौजूद वैज्ञानिक व किसान।

बैठक में किसानों ने बताई अपनी समस्या, मिला समाधान का भरोसा

पूसा विवि में आयोजित हुए क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक में पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी समस्तीपुर, वैशाली आदि जिलों से पहुँचे किसान सच्चिदानंद सिंह, रविंद्र सिंह, विजयलक्ष्मी, रविकांत झा, रीना देवी, महेश्वर ठाकुर आदि ने संयुक्त रूप ने बताया कि उत्तर बिहार में किसानों के लिए नीलगाय से फसल को क्षति पहुँचाना एक बड़ी समस्या हैं। इस समस्या को दूर कराने की जरूरत हैं। किसानों ने कहा की किसानों को आलू का शुद्ध बीज नहीं मिल पाता है। बीज की उपलब्धता को सरल बनाने की जरूरत हैं। बागवानी के बारे में किसानो ने बताया कि आजकल आम, लीची आदि फलों के पेड़ो के सूखने की समस्या बढ़ गई हैं। पेड़ो में विभिन्न तरह की बीमारी भी लग जा रही हैं।

अभी का समय तीसी की खेती करने के लिए उपयुक्त

प्रिय अन्नदाता,

मौजूदा समय तीसी यानी (अलसी) की खेती के लिए उपयुक्त हैं। किसान या तो सघन या फिर आलू, मक्का व गेहूं फसल लगाए जाने वाले खेतों के मनेर पर अलसी की बुआई कर अच्छा लाभ कमा सकते है। एक हेक्टेयर अलसी की सघन बुआई के लिए 20 से 25 किलो बीज की आवश्यकता होती हैं। किसान अलसी की बुआई के दौरान पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 5 सेमी रख सकते हैं। अलसी की बुआई से पूर्व बीज को किसी भी फफूंदनाशक दवा से उपचारित कर बोने की आवश्यकता हैं। इसकी फसल में लगभग दो सिंचाई पहला फूल बनने और दूसरा फलियां लगने के दौरान करनी पड़ती है। तीसी के पौधे का तना जब पीला पर जाएं और पत्तियां सूख जाए तब कटाई कर लेनी चाहिए। 3 से 4 दिनों तक धूप में सूखा दौनी करनी चाहिए।

डॉ. आरके तिवारी।

दैनिक जागरण 18/11/25

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने अगले चार दिनों तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। हालांकि तापमान में नमी बरकरार रहेगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में न्यूनतम तापमान में 2 से 4 डिग्री की कमी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
18 नवंबर	27.0	15.0
19 नवंबर	27.2	15.0
	दरभंगा	
18 नवंबर	27.2	15.0
19 नवंबर	27.2	15.3
	पटना	
18 नवंबर	28.2	16.8
19 नवंबर	28.2	16.8

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 18/11/25 पेज 5

समस्याओं को चिह्नित कर अनुसंधान करें विज्ञानी

क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार की बैठक में उत्तर बिहार के किसानों ने रखी अपनी-अपनी समस्या

संस, जागरण • पूसा: डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में सोमवार को क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार की बैठक (2025-26) हुई। इसमें विश्वविद्यालय अंतर्गत सभी कृषि विज्ञान केंद्र के विज्ञानी एवं केंद्र से जुड़े दो किसान एवं बिहार सरकार के कृषि पदाधिकारी मौजूद रहे। बैठक में उत्तर बिहार के विभिन्न जिलों से आए किसानों ने अपनी समस्याओं को रखा। कुलपति डा. पीएस पांडे ने कहा कि किसानों की समस्याओं को चिह्नित कर विज्ञानी उन समस्याओं पर अनुसंधान कार्य करेंगे और पुनः उसे किसानों को सौंपेंगे। इससे किसानों की समस्याओं का समाधान किया जा सकेगा। कुलपति ने कहा कि किसानों के द्वारा इस बैठक में दी गई समस्या को विश्वविद्यालय ने बहुत गंभीरता से लिया है और इस पर जल्द ही का कार्य प्रारंभ किया जाएगा। विश्वविद्यालय अपनी अनुसंधान कृषि विज्ञान केंद्र को देगी और वहां से किसानों तक पहुंचाया जाएगा। इसमें प्रसार कार्यकर्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। बिहार के कृषि रोड मैप में किसानों के द्वारा सुनाई गई समस्या अगर नहीं है तो इसे जोड़ा जाएगा एवं सरकार से साझा किया जाएगा। कुलपति ने विज्ञानियों से कहा कि विश्वविद्यालय फार्म में एवं किसानों के खेतों में लगाए गए आन फार्म डेमोस्ट्रेशन में फसल उत्पादन की क्षमता में अंतर क्यों होता है, हमें इस पर भी चिंतन मंथन करने की जरूरत है। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय की बीज काफी मशहूर है। हमें बीज के क्षेत्र में बिहार के किसानों को स्वावलंबी बनाना होगा। उन्होंने नेचुरल फार्मिंग पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि हमें अभी आलू की बीज उपलब्धता, हार्टिकल्चर, मखाना, पपीता, इन सभी क्षेत्रों में बहुत कार्य करने की जरूरत है। मौके पर प्रसार शिक्षा निदेशक डा. रत्नेश झा ने बैठक के बारे में चर्चा की एवं पूर्व के बैठक में लिए गए निर्णय और उसे पर हुए कार्यों की भी समीक्षा की गई। मौके पर निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह, डीन पीजी डा. मयंक कुमार, गन्ना अनुसंधान केंद्र निदेशक डा. देवेंद्र सिंह, बीज निदेशक डा. डीके राय, डा. पीपी सिंह, डा. आर के तिवारी, डा. दिव्यांशु शेखर सहित कृषि विज्ञान केंद्र के भी कई अधिकारी मौजूद रहे।

आलू का शुद्ध बीज नहीं मिल पाता: सलाहकार समिति की बैठक में पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, वैशाली के किसान सच्चिदानंद सिंह, रविंद्र सिंह, विजयलक्ष्मी, रविकांत झा, रीना देवी, महेश्वर ठाकुर ने बताया कि उत्तर बिहार में किसानों के लिए नीलगाय एक समस्या बनी हुई है। आलू का शुद्ध बीज नहीं मिल पाता है। बीज की उपलब्धता को सरल बनाया जाए कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से वही बागवानी में पेड़ सूखने एवं विभिन्न बीमारी पकड़ता पौधों में लगता है। गाजर घास की समस्या गन्ने में भी पत्ता पीले होने की शिकायत, मोती उत्पादन का प्रशिक्षण, मिर्च एवं टमाटर के पौधों के पत्ते का सिकुरन सहित कई समस्या किसानों ने कुलपति एवं विज्ञानियों के बीच रखा। इसपर कुलपति ने समस्याओं को समाधान करने का आश्वासन दिया। मंच संचालन डा. विनीता सतपती ने किया।

- नेचुरल फार्मिंग पर भी विशेष ध्यान देने की बतायी गई जरूरत
- बीज के क्षेत्र में बिहार के किसानों को स्वावलंबी बनाने पर जोर

बैठक को संबोधित करते कुलपति एवं वैज्ञानिक • जागरण

बैठक में मौजूद वैज्ञानिक • जागरण

हिन्दुस्तान 18/11/25 पेज 2

'उत्पादन के साथ मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग चेन बनाने की जरूरत'

कृषि विवि

सोमवार को विवि के विद्यापति सभागार में बैठक का उद्घाटन करते कुलपति व अन्य।

सोमवार को विवि के विद्यापति सभागार में मौजूद किसान, वैज्ञानिक व अधिकारी।

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि, पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि किसानों की जरूरत के अनुरूप विवि शोध की दिशा निर्धारित करती है। यह बैठक इसी कड़ी का हिस्सा है। जिसमें किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध व तकनीकी विकास का रोडमैप तैयार किया जा सके। वे सोमवार को विवि के विद्यापति सभागार में राज्य के विभिन्न जिलों से आये चयनित प्रगतिशील कृषक, कृषि विभाग से जुड़े अधिकारियों व विवि के वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। मौका था विवि के प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में आयोजित क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक का। करीब 4 घंटे तक चले मैराथन बैठक के अध्यक्षीय संबोधन में वीसी ने कहा कि कृषि क्षेत्र के विकास गति में बिहार अग्रणी है। उन्होंने गुणवत्तायुक्त बीज में राज्य को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वृहत कार्ययोजना तैयार करने व प्राकृतिक खेती के माध्यम से किसानों को स्वाबलंबी बनाने पर जोर दिया। वीसी ने कहा कि बदलते समय में फसलो के उत्पादन के साथ उसके प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन एवं मार्केटिंग का चेन विकसित करने की जरूरत है। उन्होंने निदेशक को ड्रोन समेत कस्टम हायरिंग सेन्टर की ऑनलाईन मोनिटरिंग के लिए एप का सहयोग लेने, बागो की समस्या निदान के लिए संगोष्ठी करने, पपीता की समस्या निदान की दिशा में पहल करने, जिले के प्रगतिशील व इनोवेटिव किसानो की सूची तैयार करने पर बल दिया। डीन डॉ.रामसुरेश ने खेती में कृषि यंत्रो की भूमिका व विवि स्तर पर हो रहे कार्यो से अवगत कराया। डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि जल्द ही विवि में मछली पालन के साथ मोती पालन की शुरूआत होगी। निदेशक डॉ.देवेन्द्र सिंह ने कहा कि गन्ना विकास में सरकार के सहयोग से बीज उत्पादन व गुड़ उद्योग के विस्तार, डीन डॉ.पीपी सिंह ने राजेन्द्र बेबी कार्न-1, राजेन्द्र पॉप कार्न-1 एवं राजेन्द्र मरूआ-1 के नये प्रभेदो पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान डीन डॉ.उषा सिंह, डॉ.मयंक राय, डॉ.डीके राय ने भी संबोधित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.रत्नेश कुमार झा व निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार ने विवि की गतिविधियो से अवगत कराया। संचालन डॉ.विनिता शतपति ने किया। मौके पर डीएओ, दरभंगा डॉ.सिद्धार्थ, सीवान के डीएओ आलोक कुमार, बेतिया के ओमप्रकाश, आत्मा के पीके मिश्रा ने अपने विचार रखे।

क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की हुई बैठक

कृषि और किसानों की समस्याओं पर विवि के वैज्ञानिक लेंगे विधिवत एक्शन

प्रभात खबर 18/11/25 पेज 4

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में सोमवार को क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक हुई. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि कृषि एवं किसानों की समस्याओं पर विवि के वैज्ञानिकों के द्वारा विधिवत एक्शन लेने का निर्णय लिया गया है. किसानों के खेत में आने वाले विभिन्न तकनीकी समस्या को डिटेक्ट करने के ख्याल से ही यह बैठक आयोजित किया गया है. विवि से अनुसंधान शुरू कर केवीके के माध्यम से किसानों तक

उद्घाटन करते कुलपति.

भेजने का समुचित प्रबन्ध किया जा चुका है. बिहार सरकार के कृषि रोड मैप को रिफाइन कर समस्याओं का निदान निकाला जायेगा. बिहार का कृषि ग्रोथ बहुत ही बेहतर है. गुणवत्तापूर्ण बीज एवं वेरायटी का चयन करने की जरूरत है. वैज्ञानिकों से आग्रह करते हुए कुलपति ने कहा कि इल्ड गैप एवं वेरायटी को सरसरी निगाह से देखने की आवश्यकता है. कृषि के क्षेत्र में नेचुरल फार्मिंग महत्वपूर्ण करी है. इसमें गति प्रदान करने की भी आवश्यकता है. प्रोडक्ट को जीआई टैग दिलाने के लिए मूल्य संवर्धन की दिशा में कार्य करने की जरूरत है. स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने दिया. बैठक में निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय, बीज प्रक्षेत्र निदेशक डॉ डीके राय, डीन सीसीएस डॉ उषा सिंह, डीन फिसरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, डीन सीएईटी डॉ रामसुरेश, निदेशक एसआरआई डॉ देवेंद्र सिंह, डीएओ दरभंगा डॉ सिद्धार्थ, डीएओ सिवान डॉ आलोक, कृषि अधिकारी ओम प्रकाश, रमण कुमार आदि मौजूद थे.

रेखेगा। शहर से गांव तक हो न... ...र से पूरे देश में इसका असर दिखेगा।

राष्ट्रीय सहारा 18/11/25 पेज 2

क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। सोमवार को डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति के बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, अधिष्ठाता, निर्देशक एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न .षि विज्ञान केंद्रों से जुड़े महिला पुरुष किसानों ने भाग लिया। कुलपति पीएस पाण्डेय के नेतृत्व में आगत अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर बैठक का शुभारंभ किया,

तदुपरांत तमाम अतिथियों का शॉल एवं पुष्प गुच्छ आदि से स्वागत और, कुलगीत प्रसारण के साथ बैठक की शुरुआत हुई। इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ पाण्डेय ने कहा कि शोध की सार्थकता तभी है जब शोध किसानों के फसल हित में किया जाता है। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि बैठक के दौरान किसानों के द्वारा प्रस्तुत फसलों में होने वाली समस्याओं को केन्द्र में रख कर वैज्ञानिकों को शोध व अनुसंधान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान प्रा.तिक खेती को अपनाकर आत्मनिर्भर बन सकते है। उपस्थित शिवहर के किसान सच्चिदानंद सिंह ने आलू के प्रभेद के विकसित करने पर अपने विचार व्यक्त किए, वही पश्चिमी चंपारण के किसान संजय कुमार कुशवाहा ने मिर्च व टमाटर के पौधे में होने वाले बंझापन से जुड़े समस्या से सदन को अवगत कराया। इसके अलावा किसानों ने अन्य फसलों में उत्पन्न होने वाली जुड़े अन्य समस्याओं से अवगत कराया। इस के पुर्व विषय प्रवेश कराते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ आरके झा ने बैठक के उद्देश्यों पर विस्तृत चर्चा किया। इस दौरान स्नातकोत्तर .षि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ मयंक राय एवं निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह व निदेशक बीज डॉ डीके राय ने बैठक को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ विनीता सत्पथी ने किया।

पेंशनर समाज विश्वविद्यालय के ब्रांड एंबेसडर : कुलपति

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय विश्वविद्यालय परिसर स्थित मानस मंदिर परिसर में विश्वविद्यालय के पेंशनरों का वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. पीएस पांडे ने कहा कि इनकी मेहनत एवं ईमानदारी का फल है जो विश्वविद्यालय इस मुकाम पर है। इन लोगों की मेहनत एवं लग्न के लिए विश्वविद्यालय परिवार हमेशा आभारी रहेगा। इन्हें विश्वविद्यालय का ब्रांड एंबेसेडर भी कहा जा सकता है। उन्होंने कहा कि पेंशनरों की समस्याओं को विश्वविद्यालय गंभीरता से लेगा और प्राथमिकता के साथ उसका निदान भी करेगा। उन्होंने कहा कि जीवन में अनुभव सबसे बड़ा धन है। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय की प्रतिभा आज राष्ट्रीय स्तर पर दिखाई दे रही है और जल्द ही पूसा में देश भर के कुलपति का एक समागम होने वाला है। पूर्व कुलपति डा. गोपाल जी त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय और भी आगे बढ़ेगा। मौके पर पूर्व कुलपति डा. एकेपी सिंह, डा. मीरा सिंह, पूर्व कुल सचिव मृत्युंजय कुमार, डा. रविनंदन सहित दर्जनों पेंशनर मौजूद थे। अध्यक्षता पेंशनर समाज के अध्यक्ष डा. शंभू शरण ठाकुर ने की। संचालन उपाध्यक्ष दिनेश्वर रजक एवं वार्षिक प्रतिवेदन सचिव विजय कुमार राय ने प्रस्तुत किया।

Dainik Jagran-19-11-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 22 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। हालांकि तापमान में नमी बरकरार रहेगी। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में न्यूनतम तापमान में हल्की वृद्धि होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
19 नवंबर	27.0	15.0
20 नवंबर	27.2	15.0
	दरभंगा	
19 नवंबर	27.2	15.0
20 नवंबर	27.2	15.3
	पटना	
19 नवंबर	28.8	16.7
20 नवंबर	28.8	16.7

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran-19-11-2025

पेंशनरों का वार्षिक सम्मेलन संपन्न

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि विवि के पेंशनर ब्रांड एम्बेस्डर हैं। जिन्होंने अपनी लगन, मेहनत, निष्ठा व अनुभवों से सींचकर विवि को मुकाम पर पहुंचाने में अहम भूमिका निभाया है। पेंशनरों की समस्या का निदान विवि की प्राथमिकताओं में शामिल है। वे मंगलवार को विवि परिसर स्थित पेंशनर समाज कार्यालय परिसर में आयोजित वार्षिक सम्मेलन में पेंशनरों को संबोधित कर रहे थे।

Hindustan 19-11-25

पेंशनरों के मुद्दों पर लिया जाता है त्वरित एक्शन : कुलपति

समारोह में मंचस्थ कुलपति व अन्य.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित पेंशनर समाज भवन में वार्षिक मिलन समारोह हुआ. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि पेंशनरों के किसी भी मुद्दे पर ससमय एक्शन लिया जाता है. जिससे पेंशनरों को कहीं से भी किसी तरह का संस्थान के प्रति हताशा एवं निराशा नहीं मिल सके. इस कार्य के लिए विवि में अलग से पेंशन विंग बनाकर कर्मियों को हिदायत भी दे दी गयी है. संस्थान के कोई भी अधिकारी, पदाधिकारी, कर्मचारी के अलावा सफाई कर्मी क्यों न हो उसे भी सभाकक्ष में चेयर पर बैठा कर सम्मानित करने की परंपरा है. उन्होंने कहा कि फिलहाल इस समाज में पेंशनरों की 1072 है. अनुकम्पा नियुक्ति की चर्चा करते हुए कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि नियमानुसार 9 लाभुक आश्रित को विवि के विभिन्न विभागों में नियुक्त कर दिया गया है. आने वाले समय में उच्चाधिकारी के निर्देशानुसार शेष बचे हुए आश्रितों की भी नियुक्ति कर दी जायेगी. इससे पहले मंगल मंडली के अरविंद शर्मा, दोड़िक बैठा एवं चंदेश्वर महतो ने भजन कीर्तन कर पेंशनर समाज के बैठक में चार-चांद लगा दिया. स्वागत गीत संस्कृति विद्यास्थली महमदपुर देवपार की छात्रा चारु शर्मा एवं नूपुर शर्मा ने किया. स्वागत भाषण संघ के अध्यक्ष डॉ शंभू शरण ठाकुर ने दिया. संचालन दिनेश रजक ने किया. धन्यवाद ज्ञापन जयशंकर ठाकुर ने दिया. मौके पर पूर्व कुलपति डॉ गोपालजी त्रिवेदी, डॉ एकेपी सिंह, डॉ मीरा सिंह, पूर्व कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार, डॉ रविनंदन, पूर्व वैज्ञानिक डॉ वीके चौधरी, डा नवल किशोर चौधरी, डॉ एनके सिंह, बीरेंद्र कुमार त्रिवेदी, नवल किशोर ठाकुर आदि उपस्थित थे.

Prabhat Khabar-19-11-2025

भास्कर 20/11/25 पेज 16

आयोजन • पीएम किसान योजना के तहत 21वीं किश्त का किया गया हस्तांतरण, पूसा विवि में वर्चुअल कार्यक्रम आयोजित

वर्चुअल कार्यक्रम में पीएम बोले- आने वाले वर्षों में भारत नेचुरल फार्मिंग का बनेगा ग्लोबल हब

भास्कर न्यूज | पूसा

18000 करोड़ रुपए नौ करोड़ से अधिक किसानों के खाते में हुए ट्रांसफर, केंद्रीय राज्यमंत्री ने बढ़ाया उत्साह

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पीएम किसान योजना के तहत 21वीं किश्त के हस्तांतरण कार्यक्रम का लाइव टेलीकास्ट किया गया। इस दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 18000 करोड़ रुपए नौ करोड़ से अधिक किसानों के खाते में ट्रांसफर किये। पीएम ने कहा कि उनके आने से पहले बिहार की हवा तमिलनाडु में आ गई है। पीएम के कार्यक्रम में मौजूद लोगों ने अपने अंग वस्त्र बिहारी स्टाइल में लहराये। पीएम ने कहा कि प्राकृतिक खेती से वे काफी जुड़ाव महसूस करते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में देश नेचुरल फार्मिंग का ग्लोबल हब बनने वाला है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में कृषि रूरल इकॉनामी को और अधिक बढ़ावा देने वाली है। उन्होंने कहा कि कृषि निर्यात पिछले कुछ वर्षों में दोगुना हो गया है। सरकार किसानों को हर तरह से सहयोग करने को लेकर लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने सरकार की विभिन्न कृषि हित की योजनाओं की उपलब्धियों पर भी चर्चा की।

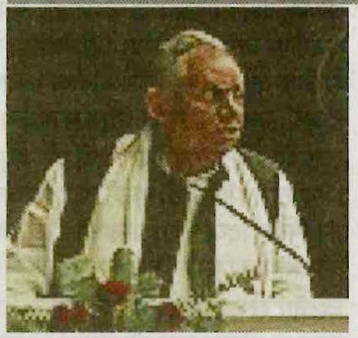

कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करते रामनाथ ठाकुर व मौजूद किसान।

इस कार्यक्रम में भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने भी शिरकत की। कार्यक्रम में लगभग पांच सौ किसानों ने भाग लिया जिसमें लगभग तीन सौ महिला किसान थीं। कार्यक्रम में बोलते हुए रामनाथ ठाकुर ने कहा कि भारत सरकार प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में किसानों के हित में लगातार कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि किसानों को न सिर्फ डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर किया जा रहा है बल्कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी भी उनके घर तक पहुंचाई जा रही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों के घर घर तक जाकर उन्हें जानकारी दे रहे हैं। विश्वविद्यालय में लगातार मशरूम उत्पादन एवं विभिन्न फसलों के उत्पादन के साथ साथ किसानों को मार्केटिंग और डिजिटल एग्रीकल्चर की भी ट्रेनिंग दी जा रही है। उन्होंने कहा कि ड्रोन दीदी योजना के तहत विभिन्न राज्यों के दो सौ से अधिक महिलाओं को ड्रोन पायलट बनाया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य चार पांच सौ लोगों को पायलट बनाया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से जो विभिन्न कृषि यंत्र बनाये गये हैं वे काफी उपयोगी हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों के उन्नत बीज के प्रभेद को रिलीज किया है। उन्होंने कहा कि इन बीजों को ग्रामीण स्तर पर भी वितरण के लिए आउटलेट बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने पिछले तीन वर्षों में शिक्षा अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में काफी बेहतर कार्य किया है। उन्होंने कहा कि तीन वर्षों में विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों के लगभग 23 उन्नत प्रभेद विकसित किये है। विवि ने 13 से अधिक पेटेंट प्राप्त किये है। विश्वविद्यालय के छात्रों ने देश और विदेश में प्रतिष्ठित फेलोशिप प्राप्त कर विश्वविद्यालय का नाम रौशन किया है।

विवि संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर :कुलपति

कुलपति डॉ.पी एस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर है। देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शाट टर्म, मिड टर्म और लांग टर्म योजना के तहत योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों को केंद्र में रखकर और उनसे फीडबैक को लेकर अपने अनुसंधान चला रहा है। उन्होंने कहा कि अनुसंधान परिषद की बैठक से पूर्व वे स्वयं प्रसार सलाहकार समिति के दौरान तीन सौ से अधिक किसानों से उनकी समस्याओं पर चर्चा किया था। उन्होंने कहा कि इससे पहले सिर्फ चार पांच किसान ही सलाहकार समिति में थे लेकिन अब तीन सौ से अधिक किसानों के साथ सीधे संवाद किये जाते है। इतना ही नहीं किसानों की समस्या के अनुरूप ही अनुसंधान परियोजनाएं बनाई जा रही है। छात्रों में पढाई के साथ साथ राष्ट्र भक्ति भी भर रहे हैं।

अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में विस्तार से बताया

कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान डॉ.ए के सिंह ने किसानों को आसान भाषा में विश्वविद्यालय में चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। निदेशक प्रसार शिक्षा डा.रत्नेश झा ने विश्वविद्यालय मे विकसित विभिन्न प्रभेदों के बीज और उन्नत तकनीकों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरुआत से पहले रामनाथ ठाकुर ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रदर्शित विभिन्न उन्नत प्रभेद एवं तकनीकों के प्रदर्शनी का अवलोकन किया और किसानों से बातचीत की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ईश प्रकाश ने किया जबकि डॉ. विनिता सत्पथी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर डीन पीजीसीए डा. मयंक राय, निदेशक बीज डॉ.डी के राय, निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, डा. राकेश मणि शर्मा, डॉ.कुमार राज्यवर्धन समेत विवि के विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक और पदाधिकारी मौजूद थे।

जागरण 20/11/25 पेज 14

आलू की खेती के लिए नई तकनीक से कराया अवगत

कार्यक्रम में शामिल वैज्ञानिक।

भास्कर न्यूज | पूसा

कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के प्रांगण में किसान सम्मान निधि योजना के तहत 21 वीं किस्त जारी होने के अवसर पर पीएम के सीधा संवाद का प्रसारण सह कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ.अनिल प्रसाद (सचिव) मानवाधिकार संगठन बिहार एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जनार्दन (उपाध्यक्ष) भारतीय आलू संगठन शिमला, राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्यागिकी उद्दयमशिलता एवं प्रबंधन संस्थान कुण्डली के सहायक प्रध्यापक डॉ. नितीन एवं डॉ. शेखर अग्निहोत्री शामिल हुए।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 22 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि आसमान प्राय: साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। अधिकतम तापमान 26-28 डिग्री सेल्सियस की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
20 नवंबर	28.5	15.0
21 नवंबर	28.5	16.0
	दरभंगा	
20 नवंबर	28.5	16.0
21 नवंबर	28.8	16.3
	पटना	
20 नवंबर	30.3	17.3
21 नवंबर	30.3	17.3

डिग्री सेल्सियस में

कुमार सिंह सशस्त्र बल शामिल थ।

दैनिक जागरण 20/11/25 पेज 7

पीएम के नेतृत्व में किसान हित में हो रहे काम

डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में पीएम किसान सम्मान योजना की 21वीं किस्त के हस्तांतरण पर कार्यक्रम

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पीएम किसान सम्मान योजना की 21वीं किस्त के हस्तांतरण पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान पीएम नरेन्द्र मोदी ने 18000 करोड़ रुपये नौ करोड़ से अधिक किसानों के खाते में ट्रांसफर किया। उन्होंने कहा कि उनके आने से पहले बिहार की हवा तमिलनाडु में आ गई है। इस दौरान उपस्थित लोगों ने अपने अंग वस्त्र बिहारी स्टाइल में लहराया। प्रधानमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती से वे काफी जुड़ाव महसूस करते हैं।

इस कार्यक्रम में स्थानीय स्तर पर भाग लेते हुए केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने कहा कि भारत सरकार प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में किसानों के हित में लगातार कार्य कर रहा हैं। किसानों को न सिर्फ डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर किया जा रहा है बल्कि विज्ञानी एवं तकनीकी जानकारी भी घर तक पहुंचाई जा रही है। विश्वविद्यालय में लगातार

डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कार्यक्रम में अतिथि • जागरण

डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कार्यक्रम में शामिल वैज्ञानिक • जागरण

- विवि की ओर से बनाये गए कृषि यंत्रों की कीमत को कम करने की अपील की गई
- ग्रामीण स्तर पर भी बीजों का वितरण करने के लिए आउटलेट बनाने के लिए कहा गया

मशरूम उत्पादन एवं विभिन्न फसलो के उत्पादन के साथ साथ किसानों को मार्केटिंग और डिजिटल एग्रीकल्चर की भी ट्रेनिंग दी जा रही हं। उन्होंने विवि द्वारा बनाये गए कृषि यंत्रों की कीमत कम करने की अपील की। साथ ही बीजों का ग्रामीण स्तर पर भी वितरण के लिए आउटलेट बनाने को कहा।

कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर है। देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने को लेकर शाट टर्म, मिड टर्म और लांग टर्म योजना के तहत चरणबद्ध कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों को केंद्र में रखकर और उनसे फीडबैक लेकर अपने अनुसंधान चला रहा है। वि छात्रों में पढ़ाई के साथ साथ राष्ट्र भक्ति और राष्ट्र सेवा की भावना को भी विकसित करने को तैयार कर रहा है। इसी अनुरूप सिलेबस में भी बदलाव किए गए हैं। निदेशक अनुसंधान डॉ ए के सिंह ने किसानों को आसान भाषा में विश्वविद्यालय में चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। निदेशक प्रसार शिक्षा डा रत्नेश झा ने विश्वविद्यालय मे विकसित विभिन्न प्रभेदों के बीज और उन्नत तकनीकों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरुआत से पहले रामनाथ ठाकुर ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रदर्शित विभिन्न उन्नत प्रभेद एवं तकनीकों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया और किसानों से बातचीत की। कार्यक्रम के दौरान डीन पीजीसीए डा मयंक राय, निदेशक बीज डा. डी के राय , निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, डा राकेश मणि शर्मा, डा. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा ईश प्रकाश ने किया। डा. विनिता सत्पथी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिन्दुस्तान 20/11/25 पेज 2

आलू खेती को दी गई तकनीकी जानकारी

पूसा। कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली में किसान सम्मान निधि योजना के तहत 21वीं किस्त जारी होने पर पीएम नरेन्द्र मोदी के सीधा संवाद का प्रसारण किसानों के बीच में किया गया।

इस दौरान आयोजित कृषक गोष्ठी का उदघाटन मानवाधिकार संगठन, के सचिव डॉ. अनिल प्रसाद, उपाध्यक्ष डॉ. जनार्दन, प्रबंधन संस्थान, कुण्डली के सहायक प्रध्यापक डॉ. नितीन एवं डॉ. शेखर अग्निहोत्री ने दीप प्रज्जवलित कर किया। संगोष्ठी में राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्यागिकी उद्दयमशिलता एवं प्रबंधन संस्थान, कुण्डली के 09 छात्रों समेत कृषकों ने हिस्सा लिया। गोष्ठी में किसानों को आलू की वैज्ञानिक खेती पर चर्चा करते हुए आलू की खेती के लिए गुणवत्तायुक्त बीज व प्रभेदों का चयन जरूरी बताया गया।

हिन्दुस्तान 20/11/25 पेज 2

किसान निधि योजना की मिली किस्त

सिंघिया, एक संवाददाता। प्रखंड व नगर पंचायत क्षेत्र के करीब 13 हजार किसानों के खाते पर बुधवार को पीएम मोदी द्वारा एक साथ किसान सम्मान निधि योजना के तहत 21वीं किस्त की राशि भेजी गयी।

इसको लेकर प्रखंड अंतर्गत स्थित कृषि विज्ञान केंद्र लादा के सभागार में वरीय वैज्ञानिक डॉक्टर सुनीता कुशवाहा की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें वैज्ञानिक डॉ सुनीता कुशवाह ने बताया कि इस योजना के अंतर्गत दी जा रही राशि किसानों को विभिन्न कृषि कार्य के लिए काफी उपयोगी साबित हो रही है। साथ ही साथ उन्होंने रबी मौसम में होने वाली सब्जियां और फलों के विषय में विशेष जानकारी दी। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजीव कुमार सरपंच उपस्थित थे।

सिंघिया प्रखंड के कृषि विज्ञान केंद्र लादा में बुधवार को उपस्थित किसान

उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित किसानों को अधिक से अधिक लाभ कृषि विज्ञान केंद्र से लेने की सलाह दी और साथ ही सभी किसानों से अनुरोध किया कि वह नवनिर्मित कृषि विज्ञान केंद्र लादा को आगे बढ़ाने में सहयोग करें। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पंचायत समिति सदस्य श्री मुन्ना कुमार एवं विभूतिपुर प्रखंड के प्रगतिशील कृषक श्री राम चंद्र महतो ने भी कृषकों के लिए चलाई जा रही योजनाओं की प्रशंसा की एवं केंद्र के वैज्ञानिकों से निवेदन किया कि वह अधिक से अधिक योजनाओं को किसानों तक पहुंचाने की कृपा करे।

प्रभात खबर 20/11/25 पेज 5

आयोजन. विश्वविद्यालय संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर है

डिजिटल एग्रीकल्चर के साथ मार्केटिंग की ट्रेनिंग जरूरी : रामनाथ ठाकुर

उद्घाटन करते अतिथि.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में पीएम किसान योजना के तहत 21वीं किश्त के हस्तांतरण कार्यक्रम का आनलाइन प्रसारण किया गया. इस दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 18000 करोड़ रुपए नौ करोड़ से अधिक किसानों के खाते में ट्रांसफर किया. उन्होंने कहा कि उनके आने से पहले बिहार की हवा तमिलनाडु में आ गई है. कहा कि प्राकृतिक खेती से वे काफी जुड़ाव महसूस करते हैं. उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में देश नेचुरल फार्मिंग का ग्लोबल हब बनने वाला है. उन्होंने कहा कि आने वाले समय में कृषि रूरल इकोनामी को और अधिक बढ़ावा देने वाली है. कृषि निर्यात पिछले कुछ वर्षों में दो गुना हो गया है. सरकार किसानों को हर तरह से सहयोग करने को लेकर लगातार कार्य कर रही है. कार्यक्रम में भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने शिरकत किया. मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि फसलों के उत्पादन के साथ किसानों को मार्केटिंग व डिजिटल एग्रीकल्चर की भी ट्रेनिंग दी जा रही है. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर है. देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने को लेकर शाटटर्म, मिड टर्म और लांग टर्म योजना के तहत योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जा रहा है. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने किसानों को आसान भाषा में विश्वविद्यालय में चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी. निदेशक प्रसार शिक्षा डा रत्नेश झा ने विश्वविद्यालय मे विकसित विभिन्न प्रभेदों के बीज और उन्नत तकनीकों के बारे में जानकारी दी. डीन पीजीसीए डा मयंक राय, डॉ उषा सिंह, निदेशक बीज डॉ डीके राय, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, डा राकेश मणि शर्मा, डॉ कुमार राज्यवर्धन, जदयू नेता संतोष कुमार थे. संचालन डा ईश प्रकाश ने किया. डॉ विनिता सत्पथी ने धन्यवाद ज्ञापन किया.

गुणवत्तापूर्ण आलू बीज लगाने की जरूरत : डॉ तिवारी

शुभारंभ करते अतिथि वैज्ञानिक.

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में किसान सम्मान निधि योजना के तहत 21 वीं किस्त जारी होने पर पीएम के सीधा संवाद का प्रसारण किसानों के बीच में प्रसारित किया गया. प्रारंभ में कृषक गोष्ठी हुई. मुख्य अतिथि मानवाधिकार संगठन बिहार के सचिव डॉ अनिल प्रसाद डॉ जनार्दन, भारतीय आलू संगठन शिमला, राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्यागिकी उद्दयमशिलता एवं प्रबंधन संस्थान, कुण्डली के सहायक प्रध्यापक डॉ नितीम एवं डॉ शेखर अग्निहोत्री शामिल हुए. वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली डॉ आरके तिवारी ने स्वागत किया. गोष्ठी में किसानों को आलू की वैज्ञानिक खेती के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई. किसानों को बताया गया कि आलू की खेती में सर्वप्रथम जरूरी है कि उच्च गुणवत्ता वाली बीज की उपलब्धता हो सके. आलू के मुख्य प्रभेद की जानकारी डॉ. जनार्दन ने दी. आलू में लगने वाली मुख्य बीमारी एवं उसके निराकरण के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई. इस कार्यक्रम में डॉ अनिल प्रसाद ने प्रतिभागियों को संबोधित किया. डॉ नितीन ने खाद्य प्रसंस्करण की महत्ता के बारे में बताया. डॉ शेखर अग्निहोत्री ने खाद्य प्रसंस्करण से संबंधित तकनीक की जानकारी दी. मौके पर ई. विनिता कश्यप, डॉ धीरू कुमार तिवारी, सुमित कुमार सिंह, निशा रानी आदि थे.

राष्ट्रीय सहारा 20/11/25 पेज 2

पीएम किसान सम्मान निधि योजना के 21वीं किस्त हस्तांतरण पर कार्यक्रम

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा में पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत 21वीं किश्त के हस्तांतरण अवसर पर विद्यापति सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान आन लाइन माध्यम से जुड़े प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 18000 करोड़ रुपए नौ करोड़ से अधिक किसानों के खाते में ट्रांसफर किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रा.तिक खेती से वे काफी जुड़ाव महसूस करते है। आने वाले वर्षो में देश नेचुरल फार्मिंग का ग्लोबल हब बनने वाला है इससे .षि रूरल इकोनामी को और अधिक बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि हालिया कुछ वर्षो में .षि निर्यात दो गुना हुआ है। सरकार किसानों को हर तरह से सहयोग करने को लेकर लगातार कार्य कर रही है। इस दौरान उन्होंने सरकार की विभिन्न .षि हित की योजनाओ की उपलब्धियों की भी चर्चा की। इस क्रम में विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत उपस्थित भारत सरकार के .षि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने दीप प्रज्वलित कर किया। अतिथियों के स्वागत सम्मान, कुलगीत प्रसारण के बाद अपने संबोधन में श्री ठाकुर ने कहा कि किसानों को न सिर्फ डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर किया जा रहा है बल्कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी भी घर तक पहुंचाई जा रही है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक किसानों के घर घर तक जाकर उन्हें जानकारी दे रहे है। विश्वविद्यालय में लगातार मशरूम उत्पादन एवं विभिन्न फसलो के उत्पादन के साथ साथ किसानों को मार्केटिंग और डिजिटल एग्रीकल्चर की भी ट्रेनिंग दी जा रही है। इसके पुर्व कृषि व किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री ठाकुर ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रदर्शित विभिन्न उन्नत प्रभेद एवं तकनीकों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया और किसानों से बातचीत की। कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर है। देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने को लेकर शाट टर्म, मिड टर्म और लांग टर्म योजना के तहत योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों को केंद्र में रखकर और उनसे फीडबैक लेकर अपने अनुसंधान चला रहा है। उन्होंने बताया कि अनुसंधान परिषद की बैठक से पूर्व वे स्वयं प्रसार सलाहकार समिति के दौरान तीन सौ से अधिक किसानों से उनकी समस्याओं पर चर्चा करते है। पुर्व में सिर्फ चार पांच किसान ही सलाहकार समिति में थे लेकिन अब तीन सौ से अधिक किसानों के साथ सीधे संवाद किया जाता है और उसी अनुरूप अनुसंधान परियोजनाएं बनाई जाती है। कार्यक्रम के दौरान डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय, निदेशक बीज डॉ डीके राय, निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा, डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

The Times of India Date- 20/11/25 P. 3

PM releases about ₹18k cr to 76L farmers under PM-KISAN

Expresses Stong Affinity For Organic Farming In Bihar

B K Mishra | TNN

Patna: Just a day before the swearing-in ceremony of the newly elected NDA government at Gandhi Maidan, Prime Minister Narendra Modi on Wednesday released the 21st instalment of Pradhan Mantri Kisan Samman Nidhi (PM-KISAN) scheme benefiting nine crore farmers, including 76.12 lakh from Bihar, across the country. The money of the tune of approximately Rs18,000 crore (Rs2,000 for each farmer) was released as direct financial assistance through the direct benefit transfer (DBT) system from Coimbatore in Tamil Nadu.

So far, more than Rs 3.70 lakh crore have been disbursed to over 11 crore farmer families across the country through 20 instalments when the scheme launched in 2019.

Addressing the farmers of Bihar, Modi said, "The fragrance of Bihar's soil had reached Tamil Nadu long before my arrival." More than 500 farmers, including 300 women, from Bihar, who were connected with the PM through videoconference at Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU) at Pusa (Samstipur), reciprocated to the PM's greeting and waived their scarves (gamchhas) in a typical Bihari style.

RPCAU VC PS Pandey (right) welcomes agriculture minister Ramnath Thakur (left) in Samastipur on Wednesday

In his address, the PM expressed his strong affinity for organic farming (of late, being vigorously practised in Bihar) and said that in the coming years, the country is going to become a global hub for natural farming. "Agriculture will play a significant role in boosting the rural economy. Agricultural exports have doubled in the past few years mainly due to hard labour of the farmers," he said.

Modi highlighted the government's various initiatives and achievements in the agricultural sector, stating that the government is working tirelessly to support farmers in every possible way.

At Pusa, the minister of state for agriculture and farmers welfare, Ramnath Thakur, said that the government of India is continuously working for the welfare of farmers under the leadership of PM Modi. "Farmers are not only receiving direct financial benefits from the government but also getting scientific and technical knowledge at their doorstep," he said while appreciating the RPCAU's efforts in providing regular training to the farmers in mushroom production, crop production, marketing, and digital agriculture.

RPCAU VC PS Pandey, director of research AK Singh, extension education director Ratnesh Jha and other faculty members attended the programme.

भास्कर 21/11/25 पेज 16

बिरौली में खाद्य प्रसंस्करण पर होगी कार्यशाला महिलाओं और किसानों को दिया जाएगा प्रशिक्षण

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन को बढ़ाने और वोकल फॉर लोकल की भावना को पहुंचाने का प्रयास

भास्कर न्यूज | पूसा

राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता एवं प्रबंधन संस्थान (निफ्टम) कुंडली की एक टीम ग्राम अंगीकरण योजना के तहत कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली पहुंची। यह टीम डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं और किसानों के लिए खाद्य प्रसंस्करण पर जागरूकता फैलाने तथा उन्हें उद्यमशीलता और स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से अभियान चला रही है। इस टीम का नेतृत्व डॉ. शेखर अग्निहोत्री और डॉ. नितिन कुमार कर रहे हैं। उक्त टीम में सोहम, गौरव, यशु, अधुराज, राज,

केवीके में पहुंची निफ्टेम कुंडली टीम।

हेमप्रसाथ, सहज, अब्दुल और सौरभ नाम के कृषि से जुड़े 9 विद्यार्थी भी शामिल हैं। डॉ. शेखर अग्निहोत्री ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदाय, विशेषकर महिलाओं और किसानों को आत्मनिर्भर बनाना है। टीम के अन्य सदस्य डॉ. नितिन कुमार ने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण तकनीक का सही ज्ञान न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाएगा बल्कि सुरक्षित और पौष्टिक भोजन को भी बढ़ावा देगा। इस दस दिवसीय कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के किसानों को आलू, लहसुन, सोयाबीन एवं डेयरी प्रसंस्करण से जुड़े विषयों पर कार्यशाला का आयोजन करके उन्हें प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। बताया जाता हैं कि निफ्टम कुंडली का यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन को बढ़ावा और वोकल फॉर लोकल की भावना को जनमानस में पहुंचाने का कार्य कर रहा है। इधर कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक डॉ.आर के तिवारी ने बताया की इन कार्यक्रमों का उद्देश्य महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में तकनीकी कौशल और उद्यमशीलता से जोड़कर उन्हें ज्ञान प्रदान करना है ताकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 22 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय : साफ रहेगा। मौसम विज्ञानी डा . ए . सत्तार ने बताया कि आसमान प्राय : साफ तथा मौसम शुष्क रहेगा। अधिकतम तापमान 26-28 डिग्री सेल्सियस की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
21 नवंबर	28.5	15.0
22 नवंबर	28.5	16.0
	दरभंगा	
21 नवंबर	28.5	16.0
22 नवंबर	28.8	16.3
	पटना	
21 नवंबर	30.3	17.3
22 नवंबर	30.3	17.3

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 21/11/25 पेज 6

निफ्टेम हरियाणा टीम करेगी खाद्य प्रसंस्करण कार्यशाला

ग्राम अंगीकरण योजना के तहत फैलाएगी जागरूकता, कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में पहुंची हरियाणा की टीम

संस, जागरण, पूसा : राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी, उद्यमिता एवं प्रबंधन संस्थान (निफ्टेम) कुंडली, हरियाणा की टीम 'ग्राम अंगीकरण योजना' के अंतर्गत बिरौली, कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली पहुंची। यह टीम ग्रामीण महिलाओं और किसानों के लिए खाद्य प्रसंस्करण पर जागरूकता फैलाने तथा उद्यमशीलता और स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से अभियान चलाएगी। टीम का नेतृत्व डा. शेखर अग्निहोत्री और डा. नितिन कुमार कर रहे हैं। टीम में सोहम, गौरव, यशु, अधुराज, राज, हेमप्रसाथ, संहज, अब्दुल और सौरभ शामिल रहे।

डा. अग्निहोत्री ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदाय, विशेषकर महिलाओं और किसानों को आत्मनिर्भर बनाना है। वहीं डा. नितिन कुमार ने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण तकनीक का सही ज्ञान न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगा, बल्कि सुरक्षित और पौष्टिक भोजन को भी बढ़ावा देगा। इस दस दिवसीय कार्यक्रम में आलू, लहसुन, सोयाबीन एवं डेयरी प्रसंस्करण से जुड़ी कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। निफ्टम कुंडली ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन को बढ़ावा और "वोकल फॉर लोकल" की भावना को जनमानस में पहुंचाने का कार्य कर रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय विज्ञानी डा. आर के तिवारी ने बताया गया कि कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण के में तकनीकी कौशल व उद्यमशीलता से जुड़ा ज्ञान प्रदान करना है, ताकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में पहुंची हरियाणा की टीम • जागरण

हिन्दुस्तान 21/11/25 पेज 2

'खाद्य प्रसंस्करण तकनीक से अर्थव्यवस्था होगी मजबूत'

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में केन्द्र प्रमुख के साथ निफ्टम की टीम।

- रोजगार सृजन को बढ़ावा और वोकल फॉर लोकल को मिलेगा बल
- टीम पहुंची पूसा, कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली से की कार्यक्रम की शुरुआत

पूसा, निज संवाददाता। ग्रामीण समुदाय, महिलाओं व किसानों को आत्मनिर्भर बनाने को लेकर राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी, उद्यमिता एवं प्रबंधन संस्थान, (निफ्टम) कुंडली की टीम पूसा पहुंची। इस दौरान ग्राम अंगीकरण योजना के तहत डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं और किसानों को खाद्य प्रसंस्करण पर जागरूकता एवं उद्यमशीलता, स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से अभियान चलायेगी।

टीम का नेतृत्व डॉ. शेखर अग्निहोत्री एवं डॉ. नितिन कुमार कर रहे हैं। टीम में सोहम, गौरव, यशु, अधुराज, राज, हेमप्रसाथ, सहज, अब्दुल और सौरभ छात्र शामिल हैं। डॉ. शेखर अग्निहोत्री ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदाय, विशेषकर महिलाओं व किसानों को आत्मनिर्भर बनाना है। डॉ. नितिन कुमार ने बताया कि खाद्य प्रसंस्करण तकनीक के सही ज्ञान से स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। सुरक्षित और पौष्टिक भोजन को भी बढ़ावा मिलेगा। आलू, लहसुन, सोयाबीन व डेयरी प्रसंस्करण से जुड़ी कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। निफ्टम कुंडली का यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के साथ वोकल फॉर लोकल को बल देगा। केंद्र के प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने बताया कार्यक्रमों का उद्देश्य महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में तकनीकी कौशल और उद्यमशीलता से जुड़ा ज्ञान प्रदान करना है।

कार्यक्रम में आलू, लहसुन, सोयाबीन एवं डेयरी प्रसंस्करण से जुड़ी कार्यशाला का किया जायेगा आयोजन

प्रभात खबर 21/11/25 पेज 4

ग्रामीण महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत : डॉ आरके तिवारी

प्रतिनिधि, पूसा

राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी, उद्यमिता एवं प्रबंधन संस्थान कुंडली की टीम ग्राम अंगीकरण योजना के अंतर्गत बिरौली पूसा पहुंची. यह टीम डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सहयोग से ग्रामीण महिलाओं व किसानों के लिए खाद्य प्रसंस्करण पर जागरूकता फैलाने व उद्यमशीलता और स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से अभियान चला रही है. टीम का नेतृत्व डॉ. शेखर अग्निहोत्री व डॉ. नितिन कुमार कर रहे हैं. टीम में 9 विद्यार्थी शामिल हैं. जिसमें सोहम, गौरव, यशु, अधुराज, राज, हेमप्रसाथ, सहज, अब्दुल व सौरभ शामिल हैं. डॉ. शेखर अग्निहोत्री ने बताया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदाय, विशेषकर महिलाओं और किसानों को आत्मनिर्भर बनाना है.

वहीं डॉ. नितिन कुमार ने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण तकनीक का सही ज्ञान न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगा बल्कि सुरक्षित और पौष्टिक भोजन को भी बढ़ावा देगा. इस दस दिवसीय कार्यक्रम में आलू, लहसुन, सोयाबीन एवं डेयरी प्रसंस्करण से जुड़ी कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा. निफ़टम कुंडली यह कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन को बढ़ावा और 'वोकल फॉर लोकल' की भावना को जन मानस में पहुंचाने का कार्य कर रहा है. कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक डॉ आरके तिवारी ने बताया कि इन कार्यक्रमों का उद्देश्य महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में तकनीकी कौशल व उद्यमशीलता से जुड़ा ज्ञान प्रदान करना है. ताकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें.

विशेषज्ञों के साथ केवीके के वैज्ञानिक.

राष्ट्रदीप सहारा 21/11/25 पेज 2

केविके के तकनीकी सहयोग से एक गांव को गोद ले कर खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में अवसर पर निफ्टेम करेगी काम : डॉ. नितीन

समस्तीपुर (एसएनबी)। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में किसान सम्मान निधि योजना के तहत 21वी किस्त जारी होने के अवसर पर प्रधानमंत्री के सीधा संवाद का प्रसारण किसानों के बीच में प्रसारित किया गया। इस कार्यक्रम के प्रारंभ में कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ अनिल प्रसाद, सचिव, मानवाधिकार संगठन, बिहार, डॉ0 जनार्दन जी, उपाध्यक्ष भारतीय आलू संगठन शिमला, राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्यागिकी उध्यमशिलता एवं प्रबंधन संस्थान, कुण्डली के सहायक प्रध्यापक डॉ0 नितीन एवं डॉ0 शेखर अग्निहोत्री शामिल हुए। डॉ0 आर. के. तिवारी, वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान, .षि विज्ञान केन्द्र, बिरौली ने सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं इस कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन से किया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्यागिकी उद्यमशिलता एवं प्रबंधन संस्थान, (निफ्टेम) कुण्डली के 09 विद्यार्थियों के साथ 153 किसानों ने भाग लिया। इस .षक गोष्ठी में किसानों को आलू की वैज्ञानिक खेती के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। किसानों को बताया गया कि आलू की खेती में सर्वप्रथम जरूरी है कि उच्च्च गुणवत्ता वाली बीज की उपलब्धता हो सके। इस दौरान डॉ जनार्दन ने आलू के मुख्य प्रभेद जैसे कुफरी ज्योति. कुफरी पुखराज, कुफरी ख्याति, कुफरी माणिक, कुफरी नीलकंठ के बारे में एवं आलू के पोषक तत्त्व प्रबंधन के बारे में विस्तृत जानकारी दिया। साथ ही आलू में लगने वाली मुख्य बीमारी एवं उसके निराकरण के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में डॉ0 नितीन, ने किसानों को संबोधित करते हुए खाद्य प्रसंस्करण की महत्ता के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्यागिकी उद्यशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, कुण्डली (निफ्टेम) ग्राम अडोप्शन कार्यक्रम 2025 के तहत .षि विज्ञान केन्द्र के तकनीकि सहयोग से एक गाँव को गोद लेंगे एवं 10 दिनों तक उस गाँव का सर्वे करेंगे और खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में जो कमियों एवं अवसर पर काम करेंगे। इस अवसर पर डॉ0 अनिल प्रसाद, डॉ0 शेखर अग्निहोत्री ने भी किसानों को संबोधित किया। इस अवसर पर ..वि.के, बिरौली के सभी कर्मी ई. विनिता कश्यप, डॉ0 धीरू कुमार तिवारी, सुमित कुमार सिंह, श्रीमती निशा रानी इत्यादि मौजूद थे।

भास्कर 22/11/25 पेज 19

गन्ने की खेती में उन्नत और वैज्ञानिक तकनीक को अपनाने की जरूरत

ईख अनुसंधान प्रसार एवं सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई

भास्कर न्यूज | पूसा

बैठक में भाग लेते वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मी।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के ईख अनुसंधान केंद्र में शुक्रवार को ईख अनुसंधान प्रसार एवं सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई। इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि अनिल कुमार झा, ईखायुक्त गन्ना उद्योग विभाग बिहार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। अनिल कुमार झा ने कहा कि गन्ने की खेती में उन्नत और वैज्ञानिक तकनीकी को अपनाने की जरूरत है। उन्नत तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी आमदनी बढ़ाने के साथ-साथ चीनी मिलों के माध्यम से बिहार की आर्थिक उन्नति भी कर सकते है। विशिष्ट अतिथि डा. एके सिंह ने ड्रोन तकनीकी का उपयोग गन्ने की खेती पर करने के बारे में बताया। उन्होंने नवीनतम तकनीकी का उपयोग कर गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने पर भी जोर दिया। दूसरे विशिष्ट अतिथि डा. आरके झा ने प्राकृतिक खेती के माध्यम से उत्तम गुणवत्ता वाले गुड़ उत्पादन हेतु किसानों को जानकारी दी। डॉ. देवेन्द्र सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गन्ने की खेती में सूक्ष्म सिंचाई एवं यांत्रिकी अपनाने पर जोड़ दिया। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित गन्ना परामर्श मोबाइल एप गन्ना उत्पादक किसानों को अपनाने के लिए विशेष जानकारी दी। इस एप से गन्ना किसान मोबाइल के द्वारा परामर्श सेवा ले सकते है।

Dainik Bhaskar 22-11-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 26 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलो मे आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा . ए . सत्तार ने बताया कि इस अवधि मे अधिकतम तापमान 25-27 डिग्री सएवं न्यूनतम तापमान 15 से 17 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
22 नवंबर	29.0	15.0
23 नवंबर	29.5	15.0
दरभंगा		
22 नवंबर	29.5	15.0
23 नवंबर	29.5	15.5
पटना		
22 नवंबर	30.8	16.3
23 नवंबर	30.8	16.3

डिग्री सेल्सियस में

DAinik Jagran 22-11-2025

विश्वविद्यालय में नामांकन के पहले दिन 60 फीसद सीटों पर छात्रों का हुआ नामांकन

- कुलपति ने नामांकन के लिए बनाए गए पंडाल में पहुंचकर ली जानकारी, दिए आवश्यक निर्देश
- स्नातक के 451, स्नातकोत्तर के 312 एवं पीएचडी के 66 छात्रों का लिया जाना है नामांकन

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नामांकन के पहले दिन विश्वविद्यालय के लगभग 60 प्रतिशत से अधिक सीटों पर नामांकन पूरा हो गया। दो दिन तक चलने वाले इस नामांकन प्रक्रिया में कृषि एवं संबंधित विभिन्न विषयों में स्नातक के 451, स्नातकोत्तर के 312 एवं पीएचडी के 66 छात्रों का नामांकन लिया जाना है। नामांकन की प्रक्रिया की दौरान कुलपति डा. पीएस पांडेय एवं कुलसचिव डा. पीके प्रणव लगातार निगरानी करते रहे। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय में नए छात्रों का आगमन एक बड़ा उत्सव है। विश्वविद्यालय में नामांकन की प्रक्रिया को इस तरह से उन्नत किया गया है कि छात्रों को गौरव हो कि वे कृषि शिक्षा की जन्मस्थली पूसा में नामांकन लेने आये हैं। उन्होंने कहा कि छात्रों और अभिभावकों के लिए समस्तीपुर और मुजफ्फरपुर से मुफ्त बस की सुविधा प्रदान की गई है और दोनों ही स्थल पर विश्वविद्यालय के कर्मियों की तैनाती की गई है ताकि दूसरे राज्यों से आने वाले छात्रों और अभिभावकों को कोई समस्या न हो। डा. पांडेय ने नामांकन के दौरान सभी काउंटर पर जाकर छात्रों और अभिभावकों से बातचीत कर। इसके साथ ही उनका फीडबैक भी लिया। कुलसचिव डा. पीके प्रणव ने कहा कि नामांकन की प्रक्रिया शनिवार को भी चलेगी। उन्होंने कहा कि छात्रों के लिए इस बार एक हेल्प डेस्क भी बनाया गया है। इस डेस्क पर किसी भी तरह की समस्या का निदान किया जा रहा है। छात्रों को फोटो कापी आदि में समस्या न हो इसलिए नामांकन स्थल पर ही फोटो कापी कराने की भी व्यवस्था की गई है।

नामांकन स्थल पर निरीक्षण करते कुलपति एवं कुलसचिव • जागरण

24 नवंवर को होगा दीक्षारंभ कार्यक्रम

नामांकन के उपरांत छात्रों के लिए 24 नवंवर से दीक्षारंभ कार्यक्रम आयोजित होगी। लगभग 15 दिन से अधिक चलने वाले इस कार्यक्रम में छात्रों को संचार कौशल, पर्सनेलिटी डेवलपमेंट, टेबल इटिकेट्स, गीत, संगीत, पेंटिंग आदि से संबंधित प्रशिक्षण दिया जाएगा। दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत इसी विश्वविद्यालय से हुई थी, बाद में इसकी उपयोगिता को देखते हुए अब यूजीसी एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने सभी विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया है।

Dainik Jagran 22-11-2025

कार्यशाला को संबोधित करते पदाधिकारी • जागरण

उन्नत तकनीक अपनाकर बढ़ेगी गन्ना उत्पादकता

संस, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित गन्ना अनुसंधान केंद्र, पूसा में शुक्रवार को अनुसंधान प्रसार एवं सलाहकार समिति की बैठक हुई । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गन्ना उद्योग विभाग के आयुक्त डा. अनिल कुमार झा ने कहा कि गन्ना किसानों की आय बढ़ाने के लिए उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बिहार में गन्ना उत्पादन को बढ़ावा देकर चीनी मिलों के माध्यम से राज्य की आर्थिक स्थिति को और मजबूत किया जा सकता है। डा. झा ने गन्ने के नवीनतम प्रभेद विकसित करने तथा सालों भर रस की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया। साथ ही उन्होंने कृषि क्षेत्र में डिजिटल इंडिया की तकनीकों का उपयोग कर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार रहने की अपील की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तथा विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह ने गन्ने की खेती में ड्रोन तकनीक को अत्यंत लाभकारी बताया। उन्होंने कहा कि ड्रोन के माध्यम से स्प्रे करने से लागत कम होगी तथा उत्पादन में वृद्धि होगी। वहीं निदेशक प्रसार डा. आरके. झा ने प्राकृतिक खेती के जरिए उत्तम गुणवत्ता वाले गुड़ उत्पादन को बढ़ावा देने की बात कही।

DAinik Jagran 22-11-2025

लहसुन से बनने वाले प्रोडक्ट से रू-ब-रू हुईं महिलाएं

शुक्रवार को 'ग्राम अंगीकरण कार्यक्रम' के दौरान मौजूद महिलाएं व अन्य।

समस्तीपुर, कासं। मोरसंड और बलहा गांव की महिलाएं शुक्रवार को लहसुन प्रसंस्करण के क्षेत्र में उद्यमिता व मूल्य संवर्धन की नई तकनीक से रूबरू हुई। 'ग्राम अंगीकरण कार्यक्रम' के तहत निफ्टेम.कुंडली, हरियाणा की टीम ने एक दिवसीय कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र बिलौरी के सौजन्य से किया था। इस दौरान उद्यमशीलता के अवसरों, एफएसएसएआई लाइसेंसिंग और एमएसएमई पंजीकरण पर भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम का संचालन निफ्टेम कुंडली के प्राध्यापक डॉ. नितिन कुमार, डॉ. शेखर अग्निहोत्री द्वारा किया गया।कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली से डॉ. आर.के तिवारी ने इन गांवों में तकनीकी सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करने की प्रशंसा की। कार्यक्रम में श्रीमती विनीता कश्यप, डॉ धीरू तिवारी मौजूद थे।

Hindustan 22-11-2025

विवि के दीप प्रज्जवलित करते उद्घाटन करते निदेशक व अन्य।

मार्केटिंग का ज्ञान किसानों की जरूरत

पूसा। गन्ना उद्योग विभाग, बिहार के ईंख आयुक्त अनिल कुमार झा ने कहा कि बदलते समय में गन्ना के उत्पादन के साथ उसकी मार्केटिंग तक की व्यवस्था को सुदृढ़ करने की जरूरत है। इसके लिए मांग के अनुरूप तकनीक व प्रभेदों का विकास जरूरी है। वे शुक्रवार को विवि के ईंख अनुसंधान संस्थान, पूसा के सभागार में वर्चुअल मोड में किसानों, चीनी मिल प्रबंधकों एवं विवि के वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। विवि के निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने कहा कि गन्ने की खेती से ड्रोन तकनीकी का उपयोग को जोड़ दिया गया।

Hindustan 22-11-2025

कैंपस अलर्ट

60 प्रतिशत से अधिक सीटों पर हुआ नामांकन

नामांकन प्रक्रिया का जायजा लेते कुलपति व रजिस्ट्रार.

पूसा. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नामांकन के पहले दिन करीब 60 प्रतिशत से अधिक सीटों पर नामांकन हुआ. कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय व कुलसचिव डॉ पीके प्रणव इसकी लगातार निगरानी करते रहे. कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में नये छात्रों का आगमन उत्सव है. नामांकन के दौरान सभी काउंटर पर जाकर छात्रों और अभिभावकों से बातचीत की. उनका फीडबैक भी लिया. कुलसचिव डॉ प्रणव ने कहा कि नामांकन की प्रक्रिया शनिवार को भी चलेगी. छात्रों के लिए इस बार एक हेल्प डेस्क भी बनाया गया है. इस डेस्क पर किसी तरह की समस्या का निदान किया जा रहा है. इस नामांकन प्रक्रिया में कृषि एवं संबंधित विभिन्न विषयों में स्नातक के 451 स्नातकोत्तर के 312 और पीएचडी के 66 छात्रों का नामांकन होगा. 24 नवंबर से दीक्षारंभ शुरु होगा.

Prabhat Khabar 22-11-2025

कृषि विश्वविद्यालय. ईख अनुसंधान व प्रसार सलाहकार समिति की बैठक में विमर्श

गन्ने की खेती में तकनीक की जरूरत : डॉ झा

रोबोटिक कृषि पर चर्चा

प्रतिनिधि, पूसा

संबोधित करते डीआर .

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में ईख अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक हुई. अध्यक्षता करते हुए निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि रोबोटिक कृषि पर कार्य करने की जरूरत है. बिहार सरकार ईख उत्पादन को बढ़ाने के लिए कटिबद्ध है. बिहार में गिने-चुने चीनी मिल के बावजूद गन्ने की बेहतर उत्पादन किया जा रहा है. अधिकाधिक उत्पादन के लिए नये प्रभेद का चुनाव के अलावा बीज की उपलब्धता पर उत्पादकता दर में वृद्धि करने का मूलमंत्र है. जलजमाव क्षेत्रों के लिए बेहतर प्रभेद लाने की दिशा में वैज्ञानिक सतत प्रयत्नशील है. गन्ना के क्षेत्र में समुचित प्रसंस्करण की व्यवस्था सुनिश्चित करें. गुर की कीमत चीनी से हमेशा कम ही होता है. आज की कृषि डिजिटल एवं ड्रोन पर आधारित है. सेंसरबेस तकनीकी यंत्रों की जरूरत है. चीनी मिल, वैज्ञानिक एवं गन्ना उत्पादक किसानों के बीच संवाद स्थापित होने की जरूरत है. बतौर मुख्य अतिथि बिहार सरकार के ईख आयुक्त डॉ अनिल कुमार झा ने ऑनलाइन शामिल होकर वैज्ञानिक एवं गन्ना उत्पादक किसानों को गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में कई आकर्षक अनुदान की व्यवस्था सुनिश्चित किया है. गन्ने की खेती में उन्नत, वैज्ञानिक तकनीकी की जरूरत है. उन्नत तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी आमदनी बढ़ाने के साथ-साथ चीनी मिलों के माध्यम से बिहार की आर्थिक उन्नति कर सकते हैं. उन्होंने नवीनतम उन्नत प्रभेद के साथ-साथ गन्ने के विशेष उपयोग हेतु प्रभेद विकसित करने पर जोर दिया. उनका कहना था कि सालो भर रस के उपयोग एवं बिक्री के लिए बिहार में ही गन्ना का उत्पादन हो इस बात पर जोर दिया गया. उन्होंने गन्ने की खेती में डिजिटल इंडिया का उपयोग कर विश्वस्तर पर प्रतियोगिता के लिए तैयार रहने पर जोर दिया. स्वागत भाषण करते हुए निदेशक एसआरआई डॉ देवेंद्र सिंह ने कहा कि गन्ना उत्पादन के क्षेत्र अपार संभावनाएं है. निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा विवि के अंतर्गत सभी अनुसंधान एवं तकनीक का किसानों के खेत तक पहुंचाने की जिम्मेवारी प्रसार शिक्षा पर ही होती है. उप निदेशक डॉ धर्मवीर सिंह ने भी बैठक को संबोधित करते हुए दर्जनों बिहार सरकार के योजनाओं के बारे में जानकारी दी. संचालन वैज्ञानिक डॉ सीके झा एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ एसएन सिंह ने दिया. मौके पर डॉ डीएन कामत, डॉ मो. मिनितुल्लाह, डॉ नवनीत कुमार, लालबाबू महतो आदि मौजूद थे.

Prabhat Khabar-22-11-2025

लहसुन के प्रसंस्करण ने दी महिला उद्यमी को नयी दिशा

मौके पर मौजूद उद्यमी महिलाएं.

प्रतिनिधि, पूसा

ग्राम अंगीकरण कार्यक्रम के तहत निफ्टेम-कुंडली हरियाणा की टीम ने मोरसंड व बलहा गांव की महिलाओं को लहसुन प्रसंस्करण के क्षेत्र में उद्यमिता व मूल्य संवर्धन की नई तकनीक से रुबरु कराया. यह एक दिवसीय कार्यक्रम कृषि विज्ञान केंद्र बिलौरी के सौजन्य से आयोजित किया गया. इस कार्यशाला के दौरान उद्यमशीलता के अवसरों, लाइसेंसिंग और पंजीकरण पर ग्रामीणों को जानकारी दी. संचालन निफ्टेम कुंडली के प्राध्यापक डॉ नितिन कुमार, डॉ शेखर अग्निहोत्री और विद्यार्थियों द्वारा किया गया. जिन्होंने लहसुन से बनने वाले चार प्रमुख उत्पादों लहसुन पाउडर, लहसुन पेस्ट, लहसुन अचार, लहसुन फ्लेक्स की तैयारी, प्रोसेसिंग तकनीक, पैकेजिंग व बाजार में बिक्री की संभावनाओं पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया. टीम ने बताया कि लहसुन आधारित उत्पादों का प्रसंस्करण किसानों की आय बढ़ाने का बेहद प्रभावी तरीका है. इससे उत्पाद की सेल्फ लाइफ बढ़ती है. स्थानीय स्तर पर ब्रांड बनाने का अवसर मिलता है. छोटे स्तर पर भी स्वरोजगार शुरू किया जा सकता है. उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से छात्रों ने लाइसेंसिंग प्रक्रिया, रजिस्ट्रेशन, लेबलिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और बाजार से जुड़ने की रणनीतियों पर भी विस्तार से जानकारी दी. स्थानीय महिलाओं ने प्रशिक्षण में उत्साहपूर्वक भाग लिया. लहसुन से मूल्यवर्द्धित उत्पाद बनाने में गहरी रुचि दिखाई. कृषि विज्ञान केंद्र से डॉ आरके तिवारी ने इन गांवों में तकनीकी सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करने की प्रशंसा की. कार्यक्रम में विनीता कश्यप, डॉ धीरू तिवारी उपस्थित रहे.

Prabhat Khabar 22-11-2025

खबरें एक नजर में

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में नामांकन शुरू

समस्तीपुर/पूसा। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर में नामांकन के पहले दिन विश्वविद्यालय के लगभग साठ प्रतिशत से अधिक सीटों पर नामांकन पूरा किया गया। नामांकन प्रक्रिया के दौरान कुलपति डॉ पी एस पांडेय और कुलसचिव डॉ पी के प्रणव लगातार निगरानी करते रहे। कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में नये छात्रों का आगमन एक बड़ा उत्सव है। विश्वविद्यालय में नामांकन की प्रक्रिया को इस तरह से उन्नत किया गया है कि छात्रों को गौरव हो कि वे कृषि शिक्षा की जन्मस्थली पूसा में नामांकन लेने आये है । उन्होंने नामांकन के दौरान काउंटर पर पहुंच छात्रों और अभिभावकों से बातचीत की और उनका फीडबैक भी लिया।

कुलसचिव डॉ पी के प्रणव ने कहा कि नामांकन की प्रक्रिया कल भी चलेगी। उन्होंने कहा कि छात्रों के लिए इस बार एक हेल्प डेस्क भी बनाया गया है। इस डेस्क पर किसी को तरह की समस्या का निदान किया जा रहा है। छात्रों को फोटोकॉपी आदि में समस्या न हो इसलिए नामांकन स्थल पर ही फोटोकॉपी की भ व्यवस्था की गई है। दो दिन तक चलने वाले इस नामांकन प्रक्रिया में .षि एवं संबंधित विभिन्न विषयों में स्नातक के 451 स्नातकोत्तर के 312, और पीएचडी के 66छात्रों का नामांकन किया जाएगा। नामांकन के बाद छात्रों के लिए 24 नवंबर से दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत की जायेगी। लगभग पंद्रह दिन से अधिक चलने वाले इस कार्यक्रम में छात्रों को संचार कौशल, पर्सनेलिटी डेवलपमेंट, टेबल इटिकेट्स, गीत ,संगीत, पेंटिंग आदि से संबंधित प्रशिक्षण दिया जाएगा। आपको बता दें कि दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत इसी विश्वविद्यालय से हुई थी, बाद में इसकी उपयोगिता को देखते हुए अब यूजीसी एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने सभी विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया है।

Rashtriya Sahara-22-11-2025

भास्कर 23/11/25 पेज 17

विवि में 90 प्रतिशत सीटों पर नामांकन

कुलपति ने नवागंतुक छात्रों और उनके अभिभावकों से लिया फीडबैक

भास्कर न्यूज | पूसा

नामांकन प्रक्रिया के दौरान जानकारी लेते कुलपति।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे नामांकन प्रक्रिया के दूसरे दिन लगभग 90 प्रतिशत सीटों पर छात्रों का नामांकन हुआ। शाम तक विश्वविद्यालय में नामांकन की प्रक्रिया चल रही थी। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि इस बार विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ रैंकिंग में अच्छी रैंक हासिल की है जिसके कारण देश भर के सबसे प्रतिभाशाली बच्चों ने विश्वविद्यालय में नामांकन के लिए अपना पहला च्वाइस पूसा विश्वविद्यालय को रखा और नामांकन लिया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में 23 राज्यों के बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। विश्वविद्यालय में मिनी इंडिया की झलक मिलती है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय छात्रों में पढाई के साथ साथ राष्ट्र भक्ति और कर्तव्य परायणता का भी विकास करना चाहता है। छात्रों के व्यक्तित्व को समग्र रूप से उभारना चाहता है ताकि वे दुनिया भर में देश का नाम रौशन कर सकें। उन्होंने कहा कि इसी उद्देश्य से दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ के महत्व को देखते हुए अब भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और यूजीसी ने सभी विश्वविद्यालयों में इसे अनिवार्य कर दिया गया है। कुलपति ने नवांगतुक छात्रों और उनके अभिभावकों से भी बातचीत की और नामांकन प्रक्रिया को लेकर उनके फीडबैक लिये। कुलसचिव डॉ. पी के प्रणव ने कहा कि नामांकन के दौरान छात्रों और अभिभावकों को किसी भी प्रकार की कोई समस्या न हो इसका पूरा ख्याल रखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय और पंजाब नेशनल बैंक की तरफ से शिक्षा लोन को लेकर भी काउंटर लगाए गए हैं ताकि यदि किसी छात्र को आर्थिक सहायता की आवश्यकता हो तो उसे तत्काल ही उपलब्ध करवा दिया जाये। उन्होंने कहा नामांकन के उपरांत लगभग 15 दिनों के दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत 24 नवंबर से होगी जिसमें देश भर से विभिन्न विषयों के प्रख्यात और विद्वान लोगों को आमंत्रित किया जा रहा है।

कृषि विश्वविद्यालय में नामांकन के दौरान निरीक्षण करते कुलपति • जागरण

विश्वविद्यालय में दूसरे दिन भी जारी रही नामांकन की प्रक्रिया

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में नामांकन के दूसरे दिन लगभग 90 प्रतिशत सीट पर नामांकन की प्रक्रिया पूरी हो गई। समाचार लिखे जाने तक विश्वविद्यालय में नामांकन की प्रक्रिया चल रही थी। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि इस बार विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ रैंकिंग में अच्छी रैंक हासिल की है। जिसके कारण देश भर के सबसे प्रतिभाशाली बच्चों ने विश्वविद्यालय में नामांकन के लिए अपना पहला च्वाइस पूसा विश्वविद्यालय को रखा और नामांकन लिया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में 23 राज्यों के बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। विश्वविद्यालय में मिनी इंडिया की झलक मिलती है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय छात्रों में पढ़ाई के साथ-साथ राष्ट्र भक्ति और कर्तव्य परायणता का भी विकास करना चाहता है। उनके पूरे व्यक्तित्व को समग्र रूप से उभारना चाहता है ताकि वे दुनिया भर में देश का नाम रौशन कर सके। उन्होंने कहा कि इसी उद्देश्य से दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ के महत्व को देखते हुए अब भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और यूजीसी ने सभी विश्वविद्यालयों में अनिवार्य कर दिया गया है। कुलपति ने नवांगतुक छात्रों और उनके अभिभावकों से भी बातचीत की और नामांकन प्रक्रिया को लेकर उनके फीडबैक लिया। कुलसचिव डा. पीके प्रणव ने कहा कि नामांकन के दौरान छात्रों और अभिभावकों को किसी भी प्रकार की कोई समस्या न हो इसका पूरा ख्याल रखा जा रहा है। नामांकन के बाद लगभग 15 दिनों के दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत 24 नवंबर से होगी।

Dainik Jagran 23-11-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 26 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा . ए . सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 25-27 डिग्री सएवं न्यूनतम तापमान 15 से 17 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
23 नवंबर	29.0	15.0
24 नवंबर	29.5	15.0
	दरभंगा	
23 नवंबर	29.5	15.0
24 नवंबर	29.5	15.5
	पटना	
23 नवंबर	30.8	16.3
24 नवंबर	30.8	16.3

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 23-11-2025

किसान संगोष्ठी में वैज्ञानिकों ने दी उन्नत कृषि की जानकारी

किसान संगोष्ठी का उद्घाटन करते कृषि वैज्ञानिक एवं अतिथिगण।

समस्तीपुर : कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में इंडियन पोटाश लिमिटेड, पटना के सौजन्य से किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें इंडियन पोटैटो एसोसिएशन रीजन पाँच (शिमला) एवं ऑल इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट डॉ जनार्दन ने आलू की उन्नतशील प्रजातियों, उसके खपत तथा उससे बनने वाले उत्पादों से किसानों कक होने वाले लाभ की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। क्षेत्रीय पदाधिकारी कामेश्वर नाथ व उप प्रबंधक आशीष शर्मा व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आरके तिवारी एवं डॉ धीरू तिवारी ने किसानों को कई जानकारी दी । मानवाधिकार आयोग के डॉ अनिल कुमार प्रसाद ने मौके पर सभी किसानों को शपथ दिलाया।

Hindustan 23-11-2025

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में यूजी, पीजी एवं पीएचडी में दूसरे दिन भी नामांकन जारी

कृषि विवि में 90 प्रतिशत से अधिक सीटों पर छात्रों ने कराया नामांकन

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में यूजी, पीजी एवं पीएचडी में नामांकन के दूसरे दिन शनिवार को करीब 90 प्रतिशत सीटों पर छात्रों ने नामांकन की प्रक्रिया पूरी कर ली। समाचार लिखे जाने तक नामांकन का कार्य चल रहा था।

इस दौरान विवि के कुलपति डॉ.पीएस पांडेय ने कहा कि विवि की बेहतर एनआईआरएफ रैंकिंग के कारण देश भर के प्रतिभाशाली बच्चों की पहली पसंद पूसा स्थित विवि रही है। उन्होंने कहा कि विवि में 23 राज्यों के बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। जिसके कारण विवि में मिनी इंडिया की झलक दिखती है। उन्होंने कहा कि विवि छात्रों में पढाई के साथ देशभक्ति और कर्तव्य परायणता का विकास कर उनके पूरे व्यक्तित्व में समग्र निखार लाने की दिशा में कार्य कर रही है। जिससे वे दुनिया भर में देश का नाम रौशन कर सकें। दीक्षारंभ कार्यक्रम इसी कड़ी का हिस्सा है। इस दौरान वीसी ने नव आगंतुक छात्रों और उनके अभिभावकों से बातचीत की और नामांकन प्रक्रिया को लेकर उनके फीडबैक लिये। कुलसचिव डॉ.पीके प्रणव ने बताया कि नामांकन प्रक्रिया सरल बनाने के लिए विवि ने कई कदम उठाये है। उन्होंने कहा कि विवि और पंजाब नेशनल बैंक की तरफ से शिक्षा लोन को लेकर भी काउंटर लगाए गए हैं। जिससे आर्थिक सहायता वाले छात्रों को तत्काल व्यवस्था उपलब्ध कराया जा सके।

कृषि विवि में नामांकन प्रक्रिया को लेकर पूछताछ करते वीसी, रजिस्ट्रार व अन्य।

- विवि में 23 राज्यों के बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं: कुलपति
- नामांकन प्रक्रिया में 20 से ज्यादा समिति बनाई गई

उन्होंने कहा नामांकन के बाद 24 नवम्बर से शुरू हो रहा दंीक्षारंभ कार्यक्रम में देश भर से चर्चित व विद्वान लोगों को आमंत्रित किया जा रहा है। नामांकन प्रक्रिया में 20 से ज्यादा समिति बनाई गई। जिसमें करीब दो सौ से अधिक शिक्षक, वैज्ञानिक, पदाधिकारी अपने दायित्वों को निर्वहन कर रहे है।

Hindustan 23-11-2025

नामांकन के दूसरे दिन 90 प्रतिशत सीटें पर नामांकन की प्रक्रिया पूरी

प्रतिभाशालियों ने नामांकन को पहला च्वॉइस दिया आरपीसीयू : कुलपति

अच्छी रैंक मिली

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय से नामांकन के दूसरे दिन लगभग 90 प्रतिशत सीटें पर नामांकन की प्रक्रिया पूरी हो गई. कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि इस बार विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ रैंकिंग में अच्छी रैंक हासिल की है. जिसके कारण देश भर के सबसे प्रतिभाशाली बच्चों ने विश्वविद्यालय में नामांकन के लिए अपना पहला च्वाइस पूसा विश्वविद्यालय को रखा. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में 23 राज्यों के बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं. विश्वविद्यालय में मिनी इंडिया की झलक मिलती है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय छात्रों में पढाई के साथ साथ राष्ट्र भक्ति और कर्तव्य परायणता का भी विकास करना चाहता है. उनके पूरे व्यक्तित्व को समग्र रूप से उभारना चाहता है ताकि वे दुनिया भर में देश का नाम रौशन कर सकें. उन्होंने कहा कि इसी उद्देश्य से दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत की गई है. कुलसचिव डॉ पीके प्रणव ने कहा कि नामांकन के दौरान छात्रों और अभिभावकों को किसी भी प्रकार की कोई समस्या न हो इसका पूरा ख्याल रखा जा रहा है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय और पंजाब नेशनल बैंक की तरफ से शिक्षा लोन को लेकर भी काउंटर लगाये गये हैं ताकि यदि किसी छात्र को आर्थिक सहायता की आवश्यकता हो तो उसे तत्काल ही उपलब्ध करवा दिया जाये.

नामांकन का मॉनिटरिंग करते कुलपति व रजिस्ट्रार.

Hindustan 23-11-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 26 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 25-27 डिग्री सएवं न्यूनतम तापमान 15 से 17 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
24 नवंबर	27.0	13.0
25 नवंबर	27.5	13.0
	दरभंगा	
24 नवंबर	27.5	13.0
25 नवंबर	27.5	14.0
	पटना	
24 नवंबर	29.8	15.3
25 नवंबर	29.8	15.3

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 24-11-2025

भास्कर 25/11/25 पेज 16

शिक्षा • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नवांगतुक छात्रों के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम

पूसा विवि डिजिटल एग्री व प्राकृतिक खेती में कोर्स शुरू करने वाला पहला विवि बना

भास्कर न्यूज | पूसा

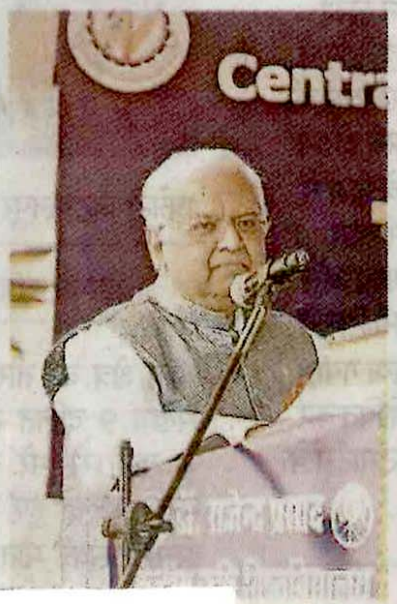

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नवांगतुक छात्रों के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ.संजय कुमार सिंह ने कहा कि पूसा विश्वविद्यालय देश का गौरव है। उन्होंने कहा कि छात्रों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि उनका नामांकन देश के ऐसे विश्वविद्यालय में हुआ है जहां से कृषि शिक्षा और अनुसंधान की शुरुआत हुई है। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त डिजिटल एग्रीकल्चर, और प्राकृतिक खेती में भी कोर्स शुरू करने वाला यह पहला

त करते मुख्य अतिथि व मौजूद नए छात्र।

ालय के छात्र-छात्राओं के लिए ीं कोई कमी नहीं, बढ़ाया उत्साह

छात्रों के लिए नौकरी की कही कोई कमी
कि विश्वविद्यालय के छात्रों को नौकरी
बारे में भी सोचना चाहिए। कार्यक्रम के
ग स्कूल आफ़ एग्री-बिजनेस एंड रूरल
क डॉ.रामदत्त ने दिया। उन्होंने छात्रों में जोश
दुनिया का हर काम तब तक मुश्किल होता
रू नहीं किया जाता। जब आप ठान लेते हैं
भव हो जाता है। कार्यक्रम के आयोजन
ने बताया कि दीक्षारंभ कार्यक्रम 21 दिनों
विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होंगे और
द करेंगे। विश्वविद्यालय में उन पूर्ववर्ती
आमंत्रित किया गया है जो यूपीएस सी मो
वे छात्रों के साथ अपने अनुभव साझा कर
पीजीसी डॉ.मयंक राय , डीन बेसिक
चंद्रा, डीन फिशरीज डॉ पी श्रीवास्तव,
डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ शिवपूजन सिंह,
न आदि मौजूद थे।

सीपीआईएम ने धान खरीद में देरी पर बीडीओ को सौंपा ज्ञापन, व्यापारी कम कीमत पर खरीद रहे

विभूतिपुर | प्रखंड क्षेत्र में सरकारी क्रय केंद्रों के निष्क्रिय रहने से किसानों में भारी रोष है। धान की तैयार फसल घरों पर पड़ी है, लेकिन पैक्स और व्यापार मंडल क्रय करने को तैयार नहीं हैं। सीपीआई (एम) कार्यकारी लोकल सचिव विभूतिपुर दक्षिण के महेश कुमार ने सोमवार को बीडीओ को एक ज्ञापन सौंपकर किसानों के धान को अविलंब सरकारी दर पर खरीदने की व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही क्रय केंद्र सक्रिय नहीं हुए तो किसान आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। ज्ञापन में महेश कुमार ने कहा है कि पूरे विभूतिपुर प्रखंड की सभी पंचायतों में किसानों का धान कटकर तैयार हो चुका है और उनके घरों पर पड़ा है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर धान क्रय करने के लिए पैक्स या व्यापार मंडल जैसे कोई भी निर्धारित केंद्र सक्रिय नहीं हैं। इस वजह से किसानों को उनकी उपज का सरकारी घोषित समर्थन मूल्य नहीं मिल पा रहा है। किसान अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए औने-पौने दाम में धान बेचने को मजबूर हैं। सीपीआई (एम) नेता ने आगे बताया कि रबी फसल की बुआई का यह सही समय है।

भास्कर
25/11/25

प्रिय अन्नदाता

पेज 15

जीरो टिलेज तकनीकः कम लागत में अधिक पैदावार

प्रिय अन्यदाता,

जीरो टिलेज (शून्य जुताई) तकनीक किसानों की आय बढ़ाने और खेती की लागत कम करने का एक प्रभावी तरीका है। देर से पकने वाली धान की किस्मों के कारण गेहूं की समय पर बुवाई नहीं हो पाती है। जिससे पैदावार में कमी आती है। अनुमान है कि 30 नवंबर के बाद गेहूं की देर से बुवाई करने पर प्रतिदिन प्रति हेक्टेयर 25-30 किलोग्राम उत्पादन घट जाता है। जीरो टिलेज मशीन सामान्य सीडड्रिल की तरह होती है, जिसमें उल्टे "टी" आकार के फाल 18-22 सेंटीमीटर की दूरी पर मिट्टी को चीरते हैं और उसी लाइन में बीज एवं उर्वरक (डीएपी, यूरिया) डाल देते हैं। बुवाई के बाद बीज को ढकने की आवश्यकता नहीं होती।

डॉ आरपी सिंह, केवीके, नरकटियागंज।

इस तकनीक के कई फायदे

• गेहूं की बुवाई 10-15 दिन पहले हो जाती है, जिससे देर से बुवाई से होने वाला नुकसान बच जाता है।

• कम समय में अधिक क्षेत्रफल की बुवाई संभव है और पहली सिंचाई के बाद पौधे पीले नहीं पड़ते।

• 40-50% पानी की बचत होती है और उर्वरक उचित गहराई पर जाने से पौधे उन्हें बेहतर उपयोग कर पाते हैं।

• बीज का अंकुरण अच्छा होता है और पौधों की पकड़ मजबूत रहती है।

• धान के अवशेष नमी को बनाए रखते हैं और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं।

• वर्षा होने पर पपड़ी नहीं पड़ती और खरपतवार कम उगते हैं।

बीज दरः सामान्य अवस्था में 100 किग्रा/हेक्टेयर, देर से बुवाई में 125 किग्रा/हेक्टेयर तथा प्रति एकड़ 35-40 किग्रा।

आप खेती किसानी से जुड़ी किसी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो 95324 60717 पर मैसेज करें।

दैनिक जागरण 25/11/25 पेज 6

पूसा कृषि, शिक्षा और अनुसंधान की जन्मस्थली : डा. संजय कुमार

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दीक्षारंभ कार्यक्रम शुरू, 21 दिनों तक चलेगा कार्यक्रम

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के प्रशासनिक भवन परिसर में सोमवार को नवागंतुक छात्रों के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के अध्यक्ष डा. संजय कुमार सिंह ने कहा कि पूसा विश्वविद्यालय देश का गौरव है। छात्रों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि उनका नामांकन देश के ऐसे विश्वविद्यालय में हुआ है जहां से कृषि शिक्षा और अनुसंधान की शुरुआत हुई है। इसके अतिरिक्त डिजिटल एग्रीकल्चर, और प्राकृतिक खेती में भी कोर्स शुरू करने वाला यह पहला विश्वविद्यालय है। उन्होंने छात्रों के साथ कृषि की आधुनिकतम तकनीक और दुनिया भर में चल रहे विभिन्न अनुसंधान की भी चर्चा की जो आने वाले समय में देश और दुनिया की कृषि का भविष्य तय करेंगे। उन्होंने विभिन्न नोबल पुरस्कार से सम्मानित विज्ञानियों के जीवन और उनके कार्यों की चर्चा की और उनसे प्रेरणा लेकर देश को विकसित बनाने के संकल्प को लेकर पढ़ाई पूरी करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय द्वारा किया गया आविष्कार महत्वपूर्ण है लेकिन कुलपति द्वारा शुरू किया गया दीक्षारंभ अनूठी पहल है। पहले इसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने सभी कृषि विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया और अब इसे यूजीसी ने देश में के सभी विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया है।

संबोधित करते कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के अध्यक्ष डा. संजय कुमार • जागरण

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन परिसर में दीक्षारंभ कार्यक्रम में उपस्थित छात्र-छात्राएं • जागरण

कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में छात्रों को और किसानों को केंद्र में रखकर सभी निर्णय लिए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय की परिनियमों में भी छात्र हित में सुधार किये गये हैं। यहां के लगभग सौ प्रतिशत छात्रों का प्लेसमेंट होता है। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे पढ़ाई पर फोकस करे और नौकरी की चिंता न करें। विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए नौकरी की कही कोई कमी नहीं है। छात्रों को नौकरी देने वाला बनने के बारे में भी सोचना चाहिए। स्वागत भाषण स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डा. रामदत्त ने दिया। उन्होंने छात्रों में जोश भरते हुए कहा कि दुनिया का हर काम तब तक मुश्किल होता है जब तक उसे शुरू नहीं किया जाता। जब आप ठान लेते हैं तो असंभव भी संभव हो जाता है। कार्यक्रम के आयोजन प्रभारी डा. ऋतंभरा ने बताया कि दीक्षारंभ कार्यक्रम 21 दिनों तक चलेगा। इसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होंगे और छात्रों के साथ संवाद करेंगे। विश्वविद्यालय में उन पूर्ववर्ती कृषि छात्रों को भी आमंत्रित किया गया है जो यूपीएससी में सफल रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान डीन पीजीसी डा. मयंक राय , डीन बेसिक साइंस डा अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डा. पी श्रीवास्तव, पुस्तकालय अध्यक्ष डा. राकेश मणि शर्मा, डा. शिवपूजन सिंह, डा. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे ।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 26 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 25-27 डिग्री सएवं न्यूनतम तापमान 15 से 17 डिग्री रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
25 नवंबर	27.0	13.0
26 नवंबर	27.5	13.0
	दरभंगा	
25 नवंबर	27.5	13.0
26 नवंबर	27.5	14.0
	पटना	
25 नवंबर	29.8	15.3
26 नवंबर	29.8	15.3

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 25/11/25 पेज 5

कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नव नामांकित छात्रों का 21 दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम शुरू

'डिजिटल व प्राकृतिक खेती कोर्स शुरू करने वाला पूसा पहला विवि'

समारोह

पूसा, निज संवाददाता। कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के अध्यक्ष डॉ.संजय कुमार सिंह ने कहा कि कृषि शोध एवं शिक्षा जननी पूसा कृषि विवि में नामांकन कराना छात्रों के लिए गर्व का विषय है। डिजिटल एग्रीकल्चर एवं प्राकृतिक खेती में कोर्स शुरू करने वाला यह पहला विवि है। जरूरत है विवि से उत्कृष्ट ज्ञान का संचय कर देश हित में उपयोग करने की। जिससे परिवार व देश गर्वान्वित महसूस कर सके। वे सोमवार को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में नवनामांकित छात्रों के लिए आयोजित दीक्षारंभ कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

सोमवार को विवि में दीक्षारंभ कार्यक्रम का उद्घाटन करते कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के अध्यक्ष, कुलपति व अन्य।

उन्होंने छात्रों से कृषि की आधुनिकतम तकनीक व दुनिया भर में चल रहे अनुसंधान, नोबल पुरस्कारों से सम्मानित वैज्ञानिकों के जीवन और उनके कार्यों की चर्चा करते हुए प्रेरणा लेने की अपील की। उन्होंने छात्रों से संकल्पित भाव से शिक्षा ग्रहण कर देश को विकसित बनाने में कार्य करने पर बल दिया। कुलपति डॉ.पीएस पांडेय ने कहा कि विवि में छात्रों और किसानों को केंद्र में रखकर सभी निर्णय लिये जा रहे हैं। विवि के छात्र देश- दुनिया में नाम रोशन कर रहे हैं। अध्ययनरत छात्रों का शत-प्रतिशत प्लेसमेंट कराने की दिशा में विवि लगातार प्रयास कर रहा है। स्वागत करते हुए स्कूल ऑफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ.रामदत्त ने छात्रों में जोश भरते हुए कहा कि दुनिया का हर काम तब तक मुश्किल है, जब तक उसे शुरू नहीं किया जाता। जब आप ठान लेते हैं तो असंभव भी संभव हो जाता है। आयोजन प्रभारी डॉ. रितंभरा ने बताया कि दीक्षारंभ कार्यक्रम 21 दिनों तक चलेगा। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होकर छात्रों के साथ संवाद करेंगे। मौके पर डीन डॉ मयंक राय, डॉ.अमरेश चंद्रा, डॉ.पीपी श्रीवास्तव, डॉ.उषा सिंह, उपकुलसचिव डॉ.सतीश कुमार सिंह निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.रत्नेश कुमार झा आदि मौजूद थे। संचालन डॉ.कुमारी अंजनी ने किया।

एंड ऑडिटिंग,इलेक्ट्रॉनिक्स तकनीक दिए जाते हैं. इंटरमीडिएट स्तर के इन भी रुचि नहीं दिखाई.

प्रभात खबर 25/11/25 पेज 4

विश्वविद्यालय ने कई आविष्कार किये: डॉ सिंह

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में नवांगतुक छात्रों के लिए 21 दिवसीय दीक्षारंभ का आयोजन किया गया. मुख्य अतिथि कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के अध्यक्ष डॉ संजय कुमार सिंह ने कहा कि पूसा विश्वविद्यालय देश का गौरव है. उन्होंने कहा कि छात्रों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि उनका नामांकन देश के ऐसे विश्वविद्यालय में हुआ है. जहां से कृषि शिक्षा और अनुसंधान की शुरुआत हुई है. उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त डिजिटल एग्रीकल्चर और प्राकृतिक खेती में भी कोर्स शुरू करने वाला यह पहला विश्वविद्यालय है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई आविष्कार किया है जो महत्वपूर्ण है. कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में छात्रों को व किसानों को केंद्र में रखकर सभी निर्णय लिये जा रहे हैं. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के की परिनियमों में भी छात्र हित में सुधार किये गये हैं. उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय के छात्र देश व दुनिया में विश्वविद्यालय का नाम रौशन कर रहे हैं. यहां के लगभग सौ प्रतिशत छात्रों का प्लेसमेंट होता है. उन्होंने छात्रों से कहा कि वे पढ़ाई पर फोकस करें. स्वागत स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ रामदत्त ने किया. कार्यक्रम के आयोजन प्रभारी डॉ ऋतंभरा ने बताया कि दीक्षारंभ कार्यक्रम 21 दिनों तक चलेगा. जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होंगे. संचालन वैज्ञानिक डॉ कुमारी अंजनी एवं धन्यवाद ज्ञापन डिप्टी रजिस्ट्रार डॉ सतीश कुमार सिंह ने किया. डीन पीजीसी डॉ मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि थे.

दीप जलाकर दीक्षारम्भ का उद्घाटन करते अतिथि.

राष्ट्रीय सहारा - 25/11/25

नौकरी की फिक्र छोड़ कर अध्ययन पर करें ध्यान केन्द्रित : वीसी

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर में नवांगतुक छात्रों के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित .षि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के अध्यक्ष डॉ संजय कुमार सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने ने कहा कि पूसा विश्वविद्यालय देश का गौरव है। उन्होंने कहा कि छात्रों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि उनका नामांकन देश के ऐसे विश्वविद्यालय में हुआ है जहां से .षि शिक्षा एवं शोध की शुरुआत हुई है। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त डिजिटल एग्रीकल्चर, और प्र.तिक खेती में भी कोर्स शुरू करने वाला यह पहला विश्वविद्यालय है। उन्होंने छात्रों के साथ .षि की आधुनिकतम तकनीक और दुनिया भर में चल रहे विभिन्न अनुसंधान की भी चर्चा की जो आने वाले समय में देश और दुनिया की .षि का भविष्य तय करेंगे। उन्होंने विभिन्न नोबल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिकों के जीवन और उनके कार्यो की चर्चा की और उनसे प्रेरणा लेकर देश को विकसित बनाने के संकल्प को लेकर कार्य करने की सलाह दिया। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने दीक्षारंभ की जो शुरूआत की है, वो इतनी अनूठी पहल है कि पहले इसे भारतीय .षि अनुसंधान परिषद ने सभी .षि विश्वविद्यालयो् में लागू कर दिया और अब इसे यूजीसी ने देश के सभी विश्वविद्यालयों में लागू कर दिया है। कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में छात्रों को और किसानों को केंद्र में रखकर सभी निर्णय लिये जा रहे है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के की परिनियमों में भी छात्र हित में सुधार किये गये है। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय के छात्र देश और दुनिया में विश्वविद्यालय का नाम रौशन कर रहे है। यहां के लगभग सौ प्रतिशत छात्रो् का प्लेसमेंट होता है। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे पढ़ाई पर फोकस करे और नौकरी की चिंता न करें। विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए नौकरी की कही कोई कमी नही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के छात्रों को नौकरी देने वाला बनने के बारे में भी सोचना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान स्वागत भाषण स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ रामदत्त ने किया। उन्होंने छात्रों में जोश भरते हुए कहा कि दुनिया का हर काम तब तक मुश्किल होता है जब तक उसे शुरू नहीं किया जाता। जब आप ठान लेते है तो असंभव भी संभव हो जाता है। कार्यक्रम के आयोजन प्रभारी डॉ रितंभरा ने बताया कि दीक्षारंभ कार्यक्रम 21 दिनों तक चलेगा। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होंगे और छात्रों के साथ संवाद करेंगे। संचालन डॉ कुमारी अंजनी ने किया। इस दौरान डीन पीजीसी डॉ मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा अमरेश चंद्रा, डीन फिशरीज डॉ पी श्रीवास्तव, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक

The Times of India 25/11/25

RPCAU students urged to embrace agri technologies

B K Mishra | TNN

TOI

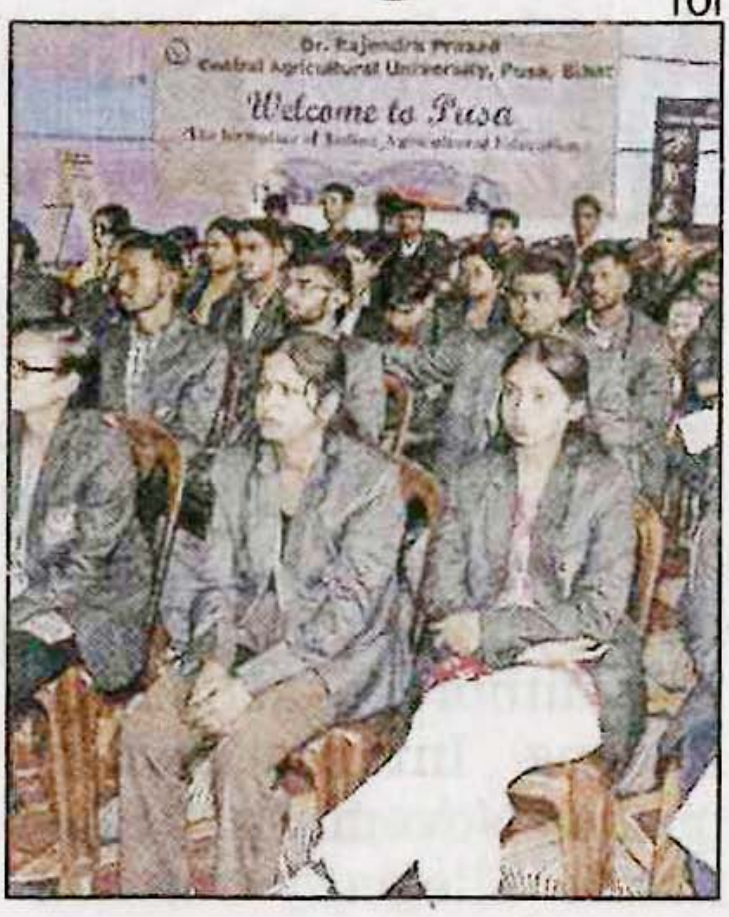

RPCAU students at an orientation programme on Monday

Patna: Agricultural Scientists Recruitment Board (ASRB) chairman Sanjay Kumar Singh on Monday urged students to familiarise themselves with the latest technologies and research advancements in agriculture and contribute meaningfully to the country's prosperity.

Inaugurating the 21-day 'Deeksharambh' (orientation programme) for newly admitted students of the 2025-26 academic session at

BRIGHT BIHAR
EDUCATION IS POWER

Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU), Pusa (Samastipur), Singh praised the university's distinguished history and said students must live up to its reputation. He highlighted RPCAU's pioneering role in digital agriculture and natural farming.

The chairman appreciated the university's initiative in launching the 'Deeksharambh' programme, which was later adopted by the Indian Council of Agricultural Research and the UGC and implemented across universities nationwide. RPCAU vice-chancellor P S Pandey said the university involves its students and local farmers in all its decision-making bodies and prioritises their views in the smooth conduct of classroom and field activities. He added that the university's rules and regulations have recently been amended in the larger interest of students.

Highlighting the university's strong placement record, the VC encouraged students to remain focused on their studies and assured them of ample job opportunities.

Director of the School of Agri-Business and Rural Management, Ramdatt, welcomed participants and outlined the orientation programme. Deans, faculty members and officials, including Mayank Rai, Amaresh Chandra, P Srivastava and Kumar Rajyavardhan, attended the event.

भास्कर 26/11/25 पेज 15

वैज्ञानिक सलाह • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

लाल चीटियों के प्रकोप से पेड़-पौधों को पहुंचता है व्यापक स्तर पर नुकसान, नियंत्रण के लिए घरेलू उपाए करें : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज | पूसा

लाल चींटी आम के पेड़ों के साथ-साथ कई अन्य तरह के फल के पेड़ों पर लगभग सालों भर देखने को मिलती है। ये लाल चींटियां आम व अन्य फल के पेड़ों की पत्तियों को मोड़ कर उसमें अपना घर बना लेती है। इससे पेड़ की पत्तियों द्वारा फोटोसिंथेसिस यानी भोजन बनाने की प्रक्रिया बंद हो जाती है और पेड़ों को नुकसान पहुंचना शुरू हो जाता है। पौधों को नुकसान पहुंचाने के अलावे ये चींटियां फलों की तुड़ाई करते समय इंसानों पर भी हमले कर उन्हें काटकर नुकसान पहुंचाने का काम करती हैं। बिहार के फल उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर इन चीटियों का ससमय प्रबंधन करते हुए अपने पेड़- पौधों को इन चींटियों के प्रकोप और दुष्प्रभाव से बचा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह ने दी है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि बिहार के फल उत्पादक किसान पेड़ों पर लाल चींटियों को नियंत्रित करने के लिए मोनोक्रोटोफॉस कीटनाशक दवाई का 2 एमल मात्रा प्रति लीटर पानी या डीडीपीवी 100 ईसी दवाई का 1 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पेड़ों पर छिड़काव कर सकते हैं। इसके अलावे किसान खासकर पेड़ों से चींटियों के द्वारा बनाये गए घोंसलों को हटा दें तथा उसे बाग से बाहर ले जाकर पूरी तरह नष्ट कर दें।

चीटियों को भगाने के लिए विनिगर का प्रयोग भी लाभदायक

आम के पत्तियों पर घर बनाकर रह रही लाल चींटियां।

आटा व नमक देखकर भी भागती है चीटियां

हालांकि इस मिश्रण को छोटे बच्चे और पालतू जानवर की पहुँच से दूर रखें अन्यथा उनको नुकसान पहुंच सकता है। चीटियो को भगाने का एक और घरेलू उपाय है जहां चीटियां हों वहां खीरा, नींबू और संतरे के छिलके रख दें। ये छिलके चीटियां नहीं पसंद करती है और वहां से भाग जाती है। चीटियों को भगाने के लिए आटा व नमक का भी बुरकाव किया जाता है। चीटियां आटा व नमक देखकर भी भागती है।

उन्होंने बताया कि अगर इन लाल व काले किसी भी रंग के चीटियों का आतंक घर के अंदर हो जाएं तो किसान व कोई अन्य व्यक्ति उपरोक्त रसायनों में से किसी भी रसायन का प्रयोग घर में हरगिज न करें। उन्होंने कहा कि घर के अंदर की चीटियों को मारना भी नहीं चाहिए। कई घरेलू उपाय है जिनकी मदद से चींटियों की समस्या से निजात पाया जा सकता है। चींटियों को भगाने के लिए विनिगर (सिरका) का प्रयोग किया जा सकता है। विनिगर एवं पानी को बराबर मात्रा में मिलाकर ऐसी जगह पर रखे जहां चीटियां बहुतायत संख्या में हो खासकर वहां इसके घोल का पोंछा लगा दें। इसे दिन में कई बार दोहराएं। चीटियों को विनिगर की महक अच्छी नहीं लगती है। इसके अलावे लाल चींटी को भगाने का दूसरा उपाय है बोरैक्स का प्रयोग। बोरैक्स और चीनी मिलाकर ऐसी जगह रख दें जहां चीटिंया मौजूद हो।

भास्कर 26/11/25 पेज 14

दीक्षारंभ • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में सभी नवांगतुक छात्रों के साथ संवाद किया

सफलता अपने आप चलकर नहीं आती है हमें उसके पास जाना पड़ता है : एसडीएम

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में दीक्षारंभ के दूसरे दिन आईएएस सह कटिहार की एसडीएम डॉ. आकांक्षा आनंद ने सभी नवांगतुक छात्रों के साथ संवाद किया और छात्रों में सक्रिय लर्निंग के विकास को लेकर अपनी प्रस्तुति दी।

उन्होंने छात्रों से कहा कि यदि छात्र अपने जीवन में कुछ मुकाम हासिल करने की ठान ले तो वे मुकाम हासिल करके ही रहते हैं। उन्होंने कहा कि मेहनत ही वह तरीका है जिससे हम अपने सपनों और लक्ष्यों तक पहुँच सकते हैं। सफलता अपने आप चलकर नहीं आती हमें उसके पास जाना पड़ता हैं। उन्होंने कहा कि मेहनत करने वाले अपनी क्षमताओं को विकसित करते हैं और मुश्किलों का सामना कर मजबूत बनते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे लोग केवल खुद सफल ही बनते हैं बल्कि अपनी मेहनत और संघर्ष से दूसरों के लिए भी प्रेरणा बनते हैं। अंततः उन्होंने कहा कि मेहनत से हासिल की गई सफलता हमेशा स्थायी और संतोषजनक होती है। बता दें की डॉ. आकांक्षा बिहार वेटनरी कालेज की 2016-21 बैच की छात्रा रही है। उन्होंने 2022 में यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण की और उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा के तहत बिहार कैडर का आवंटन किया गया। छात्रों ने उनसे प्रशासनिक सेवा में जाने के लिए तैयारी को लेकर सवाल पूछे और उनके अनुभवों के बारे में जाना। इसके अतिरिक्त दूसरे सत्र में पुसा विवि के स्कूल आफ़ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ. रामदत्त ने संचार कौशल पर अपना व्याख्यान दिया और छात्रों को कुशल संचार के गुर सिखाए। दीक्षारंभ कार्यक्रम की प्रभारी डॉ. रितंभरा ने कहा कि दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 6.30 बजे योग क्लास से होती है। उन्होंने कहा कि दीक्षारंभ कार्यक्रम के तकनीकी सत्रों में देश के प्रख्यात लोगों को बुलाकर छात्रों से सीधे संवाद कराएं जा रहे हैं ताकि छात्र उनसे प्रेरणा ले सके। दीक्षारंभ कार्यक्रम का समापन 21 दिनों बाद प्रदक्षिणा कार्यक्रम के साथ होगा।

कार्यक्रम में शामिल छात्र-छात्राएं।

प्रतियोगिता में 'गिव मी जस्टिस' थीम पर बनाई गई रंगोली आकर्षित की

हसनपुर| प्रखंड के पीसी हाई स्कूल पटसा में आयोजित वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता बाल-उत्सव के तहत बुधवार को रंगोली व पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने अलग-अलग थीमों पर एक से बढ़कर एक रंगोलियां बनाई। छात्राओं द्वारा \'गिव मी जस्टिस\' थीम पर बनाई गई रंगोली आकर्षण का केंद्र रही। इसके अलावा अन्य प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए भारत के मानचित्र, कृष्ण बाल वाली, राधा-कृष्ण की रंगोलियों की भी सराहना की गई। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। माधुरी कुमारी, श्वेता कुमारी, करीना कुमारी, युबिका, वैष्णवी सिंह, सुरेश सिंह, पलक, आभार, अनुश्री, मीनाक्षी कुमारी, नव्या भारती, रोशन कुमार, शुभम कुमार, प्रियांशु कुमार, अंकित कुमार, यशराज कुमार ने अपनी

बनाई गई रंगोली को दिखाती प्रतिभागी छात्राएं।

अपनी टीम में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं द्वितीय स्थान स्तुति कुमारी, राखी कुमारी, रिद्धि प्रिया, आदित्य राज, प्रिंस कुमार, शैलेश, निशा, मनीषा, अनुप्रिया, अर्पिता, सुषमा, साक्षी, टिंकी आनंद, पूजा कुमारी, चंदा कुमारी ने प्राप्त किया। विद्यालय के निदेशक अमित किशोर राय ने उत्साह बढ़ाया।

दैनिक जागरण 26/11/25 पेज 6

दीक्षारंभ के दूसरे दिन नये छात्रों से संवाद करतीं आइएस डा. आकांक्षा आनंद • जागरण

दीक्षारंभ के दूसरे दिन आईएएस आकांक्षा आनंद ने किया संवाद

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में दीक्षारंभ के दूसरे दिन आइएस डा. आकांक्षा आनंद ने सभी नवागंतुक छात्रों के साथ संवाद किया और छात्रों में सक्रिय लर्निंग के विकास को लेकर अपनी प्रस्तुति दी। डा. आकांक्षा बिहार वेटनरी कालेज की 2016-21 बैच की छात्रा रही है। उन्होंने 2022 में यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण की और उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा के तहत बिहार कैडर का आवंटन किया गया। छात्रों ने उनसे प्रशासनिक सेवा में जाने के लिए तैयारी को लेकर सवाल पूछे और उनके अनुभवों के बारे में जाना। इसके अतिरिक्त दूसरे सत्र में स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डा. रामदत्त ने संचार कौशल पर अपना व्याख्यान दिया और छात्रों को कुशल संचार के गुर सिखाए। दीक्षारंभ कार्यक्रम की प्रभारी डा. ऋतंभरा ने कहा कि दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 6.30 बजे योग क्लास से होती है। और तकनीकी सत्रों में देश के प्रख्यात लोगों को बुलाया जा रहा है ताकि छात्र उनसे सीधे संवाद कर प्रेरणा ले सके। दीक्षारंभ कार्यक्रम का समापन 21 दिनों बाद प्रदक्षिणा कार्यक्रम के साथ होगा।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से अगले चार दिनों तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
26 नवंबर	23.0	11.0
27 नवंबर	23.5	11.0
	दरभंगा	
26 नवंबर	23.5	11.0
27 नवंबर	23.5	12.0
	पटना	
26 नवंबर	25.2	13.8
27 नवंबर	25.2	13.8

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 26/11/25 पेज 6

आईएएस डॉ. आकांक्षा ने सक्रिय लर्निंग के दिये टिप्स

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि,पूसा में दीक्षारंभ के दूसरे दिन आइएएस डॉ. आकांक्षा आनंद ने सभी नवांगतुक छात्रों के साथ संवाद किया। इस दौरान छात्रों में सक्रिय लर्निंग के विकास को लेकर अपनी प्रस्तुति दी। डॉ. आकांक्षा बिहार वेटनरी कालेज की 2016-21 बैच की छात्रा रही है। उन्होंने 2022 में यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा के तहत बिहार कैडर का आवंटन किया गया।

छात्रों ने उनसे प्रशासनिक सेवा में जाने के लिए तैयारी को लेकर सवाल पूछे और उनके अनुभवों के बारे में जाना। दूसरे सत्र में स्कूल ऑफ़ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ. रामदत्त ने संचार कौशल पर अपना व्याख्यान दिया और छात्रों को कुशल संचार के गुर सिखाए। दीक्षारंभ

विवि में आयोजित दीक्षारंभ कार्यक्रम में नये नामांकित छात्रों को संबोधित करतीं आईएएस डॉ .आकांक्षा आनंद।

कार्यक्रम की प्रभारी डॉ रितंभरा ने कहा कि दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 6.30 बजे योग क्लास से होती है। तकनीकी सत्र में देश के प्रख्यात लोगों को बुलाया जा रहा है। छात्र उनसे सीधे संवाद कर प्रेरणा ले सकें। दीक्षारंभ कार्यक्रम का समापन 21 दिनों बाद प्रदक्षिणा कार्यक्रम के साथ होगा।

प्रभात खबर 26/11/25 पेज 4

फूड फ्रॉड व फूड सेफ्टी पर स्कूली बच्चों में बढ़ायी जागरूकता, भविष्य में मिलेंगे लाभ

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के तत्वावधान में निफ्टेम कुंडली की टीम अपने ग्राम अंगीकरण कार्यक्रम के छठे दिन पीएम श्री स्कूल, जवाहर नवोदय विद्यालय, बिरौली पहुची. स्कूली बच्चों को फूड फ्रॉड, मिसलेबलिंग, मिसब्रांडिंग, व्यक्तिगत स्वच्छता और फूड सेफ्टी के महत्व के प्रति जागरूक किया. कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. नितिन कुमार और डॉ. शेखर अग्निहोत्री ने किया. टीम ने बच्चों को बताया कि फूड फ्रॉड जैसे मिलावट, नकली ब्रांड या भ्रामक दावे स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा हो सकते हैं. साथ ही बच्चों को यह भी समझाया गया कि बाजार में अक्सर गलत लेबलिंग, गलत पोषण मूल्य, नकली पैकिंग और झूठे दावों का उपयोग किया जाता है. उन्हें लोगो, सामग्री सूची और एक्सपायरी डेट देखकर सही उत्पाद चुनने की जानकारी दी गई. अंत में टीम ने फूड फ्रॉड, मिसलेबलिंग, मिस ब्रांडिंग और फूड सेफ्टी पर स्कूली बच्चों के लिए क्विज़ प्रतियोगिता आयोजित की. जिससे बच्चों की रुचि और समझ दोनों बढ़ी. कार्यक्रम में विद्यालय के उपप्राचार्य आरएस झा भी उपस्थित रहे. उन्होंने निफ्टेम टीम के प्रयासों की सराहना की. कहा कि ऐसे जागरूकता कार्यक्रम स्कूली बच्चों के स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है.

राष्ट्रीय सहारा 26/11/25 पेज 2

दीक्षारंभ 2025 : डॉ आकांक्षा आनंद ने छात्रों से किया संवाद

संबोधित करती डॉ आकांक्षा आनन्द।

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नव आगंतुक छात्रों के लिए आयोजित 20 दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम के दूसरे दिन डॉ आकांक्षा आनंद आइएएस ने सभी नवांगतुक छात्रों के साथ संवाद किया और छात्रों में सक्रिय लर्निंग के विकास को लेकर विस्तार से चर्चा की। डॉ आकांक्षा बिहार वेटनरी कालेज की 2016-21 बैच की छात्रा रही है। उन्होंने 2022 में यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण की और उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा के तहत बिहार कैडर का आवंटन किया गया। इस दौरान छात्रों ने उनसे प्रशासनिक सेवा में जाने के लिए तैयारी को लेकर सवाल पूछे और उनके अनुभवों के बारे में जाना। इसके अतिरिक्त दूसरे सत्र में स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ रामदत्त ने संचार कौशल पर चर्चा करते हुए छात्रों को कुशल संचार तकनीक के गुर सिखाए। इस बाबत जानकारी देते हुए दीक्षारंभ कार्यक्रम की प्रभारी डॉ रितंभरा ने बताया कि दीक्षारंभ कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 6.30 बजे योग क्लास से होती है। तकनीकी सत्र में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के प्रख्यात लोगों को बुलाया जा रहा है ताकि छात्र उनसे सीधे संवाद कर ज्ञानवर्धन करें और उनसे प्रेरणा ले सके।

भास्कर 27.11.'25 पेज 13

जीरो टिलेज तकनीक किसानों के लिए फायदेमंद, उपज व आमदनी में वृद्धि

जीरो टिलेज से की गई खेती में पानी, श्रम और उर्वरकों की होती है बचत

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के परिसर में प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए जीरो टिलेज विधि द्वारा गेहूं की खेती के विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन केवीके के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ.रविन्द्र कुमार तिवारी एवं प्रशिक्षण से जुड़ी विशेषज्ञ इंजीनियर विनीता कश्यप ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस प्रशिक्षण में डॉ. रेड्डी फाउंडेशन से जुड़े तमाम कम्युनिटी फैसिलिटेटरो ने भाग लिया। इस अवसर पर इंजीनियर विनीता कश्यप ने प्रशिक्षण में मौजूद सभी प्रतिभागियों को जीरो टिलेज मशीन के द्वारा की जाने वाली गेहूं की बुआई के बारे में तकनीकी जानकारी दी। उन्होंने जीरो टिलेज मशीन के विभिन्न भागों एवं खासकर जीरो टिलेज मशीन से बीज एवं खाद निकलने वाले छोटे छोटे गेयर व यंत्रों को चलाने के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को विस्तार से बताया। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा इस तकनीक पर किए गए कार्यों एवं अनुभवों को भी प्रशिक्षणार्थियों के साथ साझा किया। केवीके हेड डॉ. तिवारी ने कहा की जीरो टिलेज तकनीक किसानों के लिए बेहद जरूरी तकनीक है। इस तकनीक के जरिये खेतों की जुताई न करके खेतों में सीधे मशीन से उर्वरक और बीज डाल दिये जाते हैं।

प्रसार कार्यकर्ताओं को जीरो टिलेज के बारे में जानकारी देती विशेषज्ञ।

दैनिक भास्कर 27.11.25 पेज 1

॥ समाज-संस्था ब्रीफ ॥

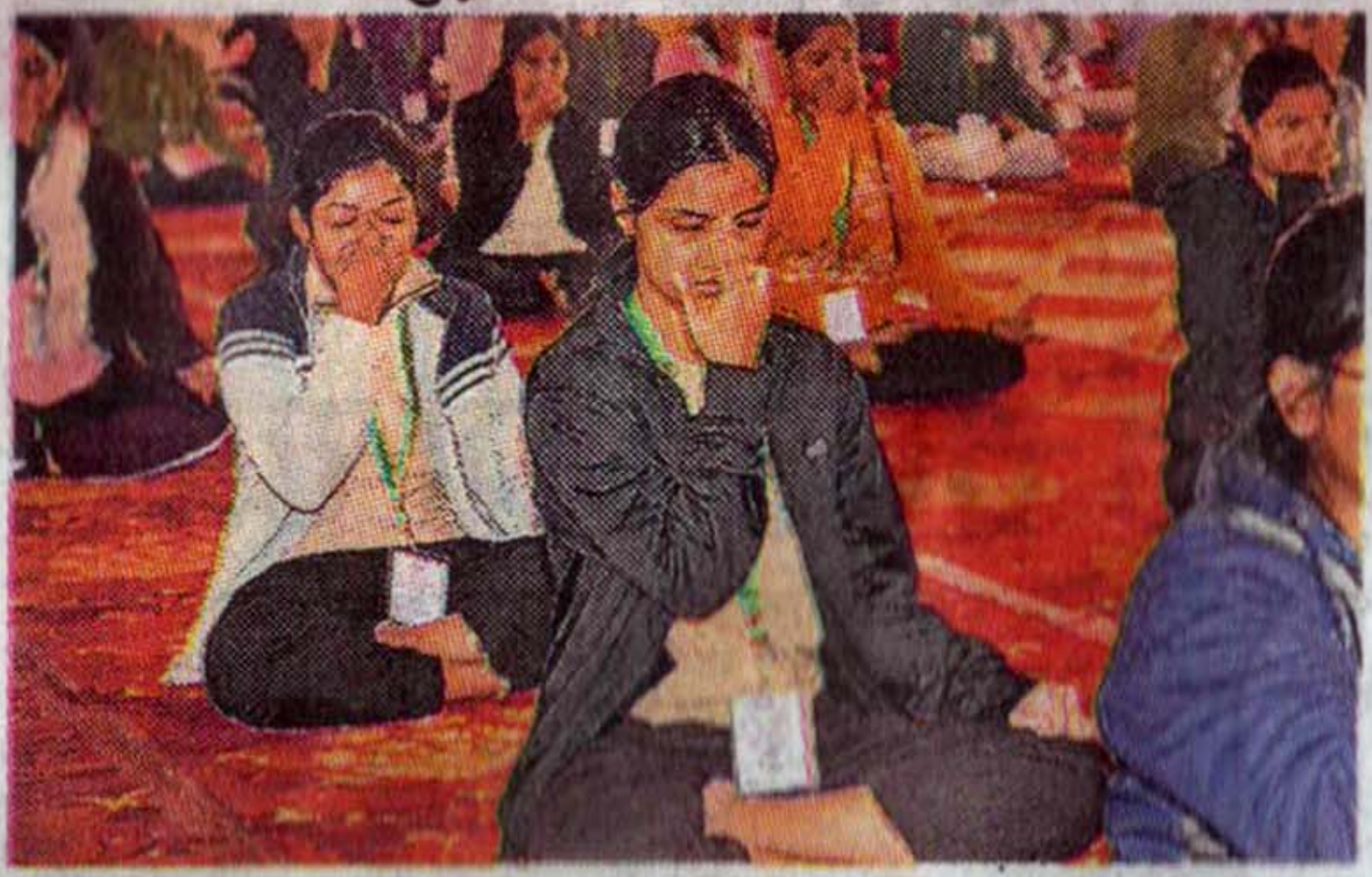

दीक्षारंभ कार्यक्रम के तीसरे दिन इंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट से जुड़े विषयों पर दी गई जानकारी

पूसा | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे दीक्षारंभ कार्यक्रम के तीसरे दिन विवि में नामांकन लेने वाले नये छात्रों को डॉ. मोहित शर्मा और डॉ. संजीत कुमार समीर ने इंटरप्रैन्योरशिप डेवलपमेंट और कागनिटिव इंटेलिजेंस से जुड़े विविध आयामों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। दोनों ने छात्रों के साथ इन विषयों पर चर्चा भी की। कई छात्र छात्राओं ने विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी दिये। दीक्षारंभ की शुरुआत में छात्रों को 6.30 से लगभग एक घंटे तक योग के विभिन्न आसनों की वैज्ञानिक जानकारी देकर योग कराया गया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. रितंभरा और डॉ. अंजनी कुमारी ने बताया कि छात्रों के समग्र विकास को लेकर कुलपति डॉ. पी एस पांडेय के मार्गदर्शन में दीक्षारंभ का कोर्स क्यूरिकुलम तैयार किया गया है। इसे इस तरह से तैयार किया गया है कि छात्रों में राष्ट्र के प्रति प्रेम, आत्मविश्वास, जिम्मेदारी सहित अन्य तरह की भावनाओं का विकास हो। दीक्षारंभ कार्यक्रम के तहत होने वाले विभिन्न कार्यकलापों से छात्रों का मन लगा रहता है और उनमें खुशी की भावना भी विकसित होती है।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से अगले चार दिनों तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय : साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में हल्की कमी होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
27 नवंबर	26.0	13.0
28 नवंबर	26.5	13.0
	दरभंगा	
27 नवंबर	26.5	13.0
28 नवंबर	26.5	14.0
	पटना	
27 नवंबर	28.2	15.8
28 नवंबर	28.2	15.8

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 27-11-2025

हिन्दुस्तान 27.11.25 पेज 5

गेहूं की खेती में जीरो टिलेज बेहतर विकल्प : ई. विनीता

- कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में प्रशिक्षण कार्यक्रम
- खेती की तकनीक व लाभ की दी जानकारी

पूसा, निज संवाददाता। कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली में बुधवार को प्रसार कार्यकर्ताओं का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें जीरो टिलेज विधि से गेहूं की खेती के तकनीकों व उससे होने वाले लाभ पर विस्तार से जानकारी दी गई।

केन्द्र की एसएमएस ई. विनीत कश्यप ने सामुदायिक प्रसार कार्यकर्ताओं से जीरो टिलेज से बुआई में खाद व बीज की मात्रा, गहराई आदि को लेकर प्रायोगिक तरीके से बताया। मौके पर वक्ताओं ने कहा कि के बदलते परिवेश में जीरो टिलेज विधि किसानों के लिए बेहतर विकल्प है। यह खेती की लागत को कम करने के साथ ही मिट्टी की प्राकृतिक संरचना बनाये रखती है। इसके उपयोग से समय और ईंधन दोनों की बचत होती है। जुताई नहीं होने के कारण खरपतवारों के नियंत्रण में सहायक

हिन्दुस्तान 27.11.25 पेज 4

भ्रमण | निफ्टेम कुंडली की टीम ने राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र, मुशहरी का भ्रमण किया

लीची के रसगुल्ले व स्क्वैश लोगों को पसंद

पूसा, निज संवाददाता। निफ्टेम कुंडली की टीम ने लीची के मूल्य संवर्धन और ग्रामीण उद्यमिता को प्रोत्साहित करने को लेकर बुधवार को राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र, मुशहरी का भ्रमण किया। नेतृत्व डॉ. नितिन कुमार व डॉ. शेखर अग्निहोत्री ने किया। मौके पर विशेषज्ञों ने बताया कि लीची काफी कम समय में नष्ट होने वाला फल है। ऐसे में इसका प्रसंस्करण कर किसान फसल को बर्बादी के साथ अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकता हैं। इस दौरान केन्द्र के निदेशक डॉ. विकास दास व डॉ. अंकित कुमार ने किसानो को लीची प्रसंस्करण की आधुनिक तकनीको का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया। उन्होंने लीची रसगुल्ला, लीची स्क्वैश, सूखे लीची फ्लेक्स एवं अन्य मूल्य वर्धित उत्पादों के निर्माण प्रक्रिया प्रदर्शित करते हुए कहा कि इसके उत्पादों की लगातार मांग बढ़ रही है। जो किसानों के लिए नए आय स्रोत खोल सकती है। निफ्टेम टीम ने किसानों को बाजार उन्मुख उत्पाद विकास, स्वच्छ प्रसंस्करण प्रथा, गुणवत्ता नियंत्रण और खाद्य सुरक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी दी।

एनआरसी लीची में निदेशक को सम्मानित करते वैज्ञानिक।

विशेषज्ञों के अनुसार लीची प्रसंस्करण से फल की शेल्फ लाइफ बढ़ती है और स्थानीय स्तर पर रोजगार और उद्यमिता के अवसरों का विस्तार होता है।

हिन्दुस्तान 27.11.25 पेज 6

'विकास का बेहतर प्लेटफार्म है दीक्षारंभ'

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा परिसर में नव नामांकित छात्रों के दीक्षारंभ समारोह के तीसरे दिन बुधवार को वैज्ञानिक डॉ. मोहित शर्मा व डॉ.संजीत कुमार समीर ने इंटरप्रेनियोरशिप डेवलपमेंट और काग्निटिव इंटेलिजेंस से जुड़े विविध आयामों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

समारोह की शुरूआत योगासन से की गई। जिसमें वैज्ञानिकों व छात्रों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. ऋतंभरा और डॉ अंजनी कुमारी ने बताया कि छात्रों के समग्र विकास को लेकर कुलपति डॉ.पीएस पांडेय के मार्गदर्शन में दीक्षारंभ का कोर्स

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में योगासन करती छात्राएं।

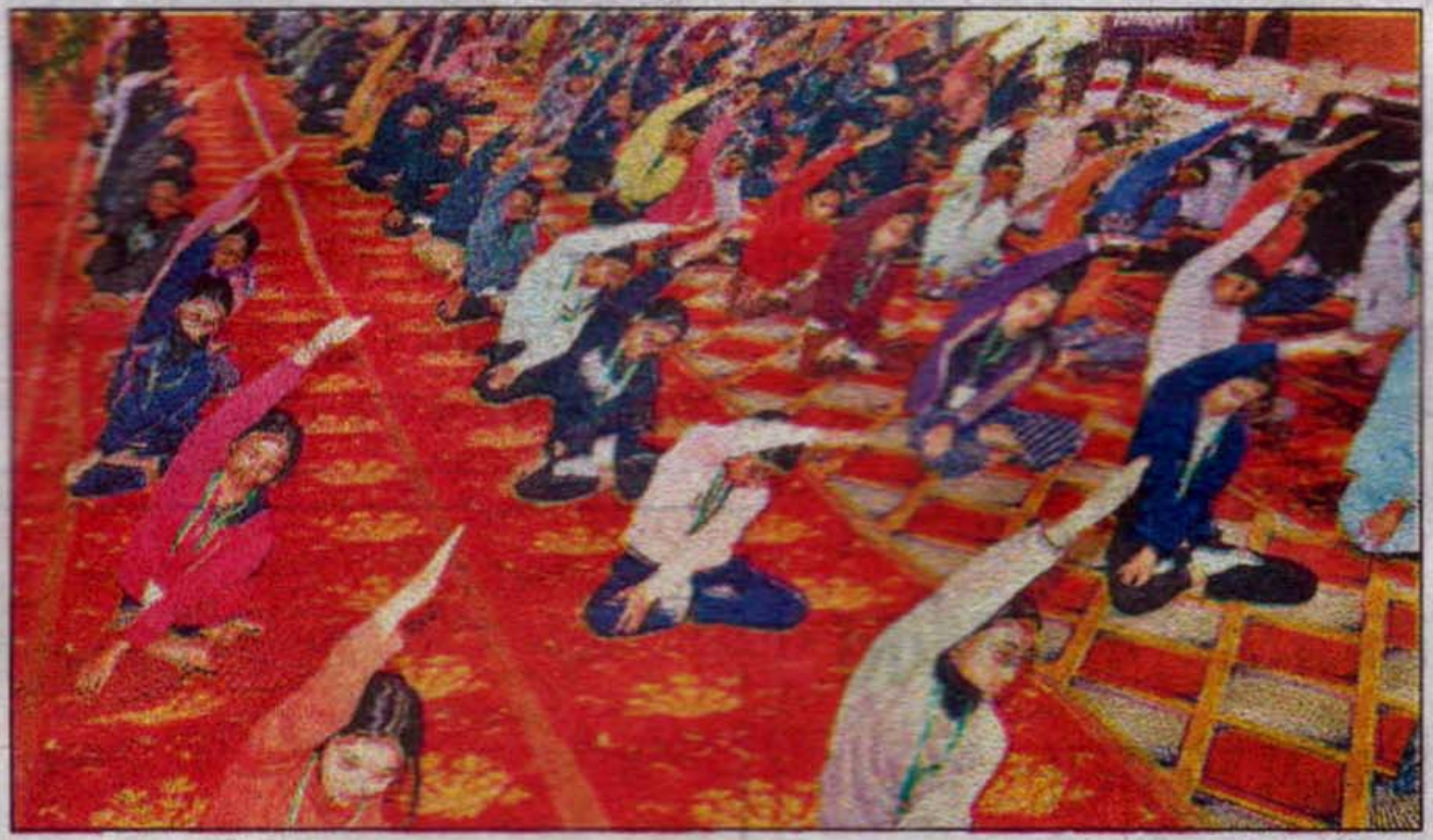

क्यूरिकुलम तैयार किया गया है। जिसमें छात्रों में स्वस्थ जीवन, राष्ट्रप्रेम, आत्मविश्वास, जिम्मेदारी आदि की भावना का विकास को प्राथमिकता दी गई। साथ ही विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाला।

हिन्दुस्तान 27.11.25 पेज 4

श्रीराम सीता विवाहोत्सव समारोह में संकीर्तन का आयोजन

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि परिसर स्थित महावीर मानस मंदिर दो दिवसीय अष्टयाम महायज्ञ सह श्रीराम सीता विवाहोत्सव संकीर्तन एवं झांकी का उत्सवी समारोह मंगलवार की देर रात संपन्न हो गया। इस दौरान कलाकारों ने अपनी कला प्रदर्शनी से राम विवाह समारोह जीवंत बना दिया। झांकी राम विवाह के दौरान गीतों की प्रस्तुती पर लोग घंटों झूमते रहे। इस दौरान दीपोत्सव एवं ध्वजारोहण समारोहण आयोजित की गई। विवि के निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमण त्रिवेदी के मार्गदर्शन में आयोजित समारोह को सफल बनाने में अरविन्द कुमार शर्मा, ओमप्रकाश सिंह, अध्यक्ष मीरा पाण्डेय, राजेन्द्र राय, श्रीराम सिंह, प्रदीप मंडल, प्रभात कुमार चौधरी, संदीप कुमार समेत दर्जनों श्रद्धालु शामिल थे। मौके पर डॉ. रमण त्रिवेदी ने विवाह पंचमी व सनातन के महत्वों पर विस्तार से चर्चा की।

कैंपस अलर्ट

दीक्षारंभ में कई अहम बिंदुओं से रुबरु हुए छात्र

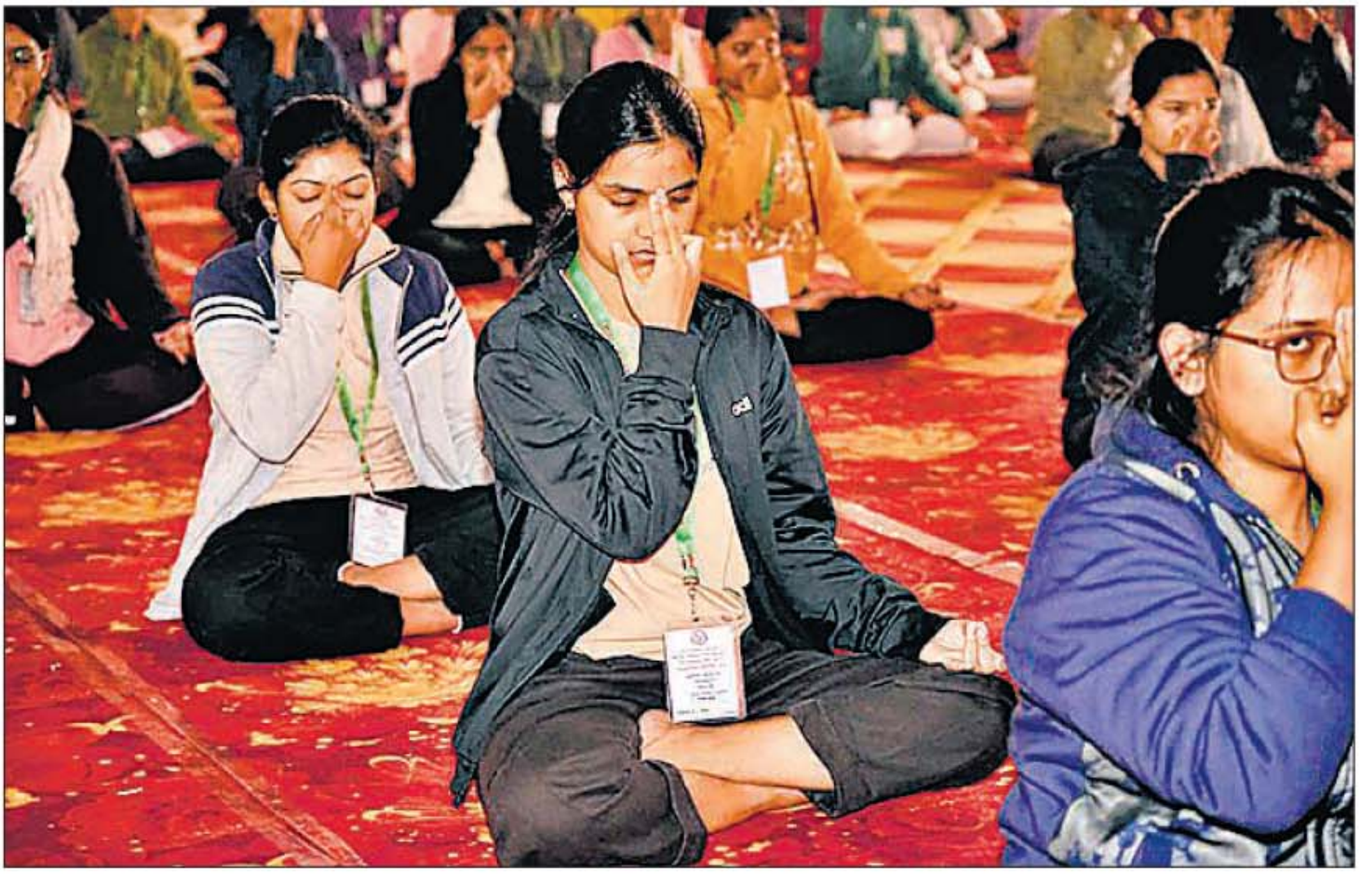

योगाभ्यास करते छात्र-छात्राएं.

पूसा. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में दीक्षारंभ के तीसरे दिन नये छात्रों को डॉ मोहित शर्मा व डॉ संजीत कुमार समीर ने इंटरप्रैन्योरशिप डेवलपमेंट व कॉगनिटिव इंटेलिजेंस से जुड़े विविध आयामों के बारे में विस्तार से जानकारी दी. इस दौरान छात्र- छात्राओं के विभिन्न प्रश्नों के भी उत्तर दिये गये. दीक्षारंभ की शुरुआत में छात्रों को 6.30 से लगभग एक घंटे तक योग के विभिन्न आसनों की वैज्ञानिक जानकारी दी गई. योग कराया भी गया. कार्यक्रम प्रभारी डॉ रितंभरा और डॉ अंजनी कुमारी ने बताया कि छात्रों के समग्र विकास को लेकर कुलपति डॉ पीएस पांडेय के मार्गदर्शन में दीक्षारंभ का कोर्स क्यूरिकुलम तैयार किया गया है. इसे इस तरह से तैयार किया गया है कि छात्रों मे राष्ट्र के प्रति प्रेम, आत्मविश्वास, जिम्मेदारी आदि की भावना का विकास हो और इन कार्यकलापों में छात्रों का मन भी लगे ताकि उनमें खुशी की भावना विकसित हो. दीक्षारंभ कार्यक्रम 13 दिसंबर तक चलेगा. प्रदक्षिणा कार्यक्रम के तहत समाप्त होगा.

Prabhat Khabar 27-11-2025

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सौजन्य से कार्यक्रम

टोफू बनाने वाली महिलाओं को किया प्रोत्साहित

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सौजन्य से निफ्टम ने राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी, उद्यमिता एवं प्रबंधन संस्थान, कुंडली की छात्र टीम ने बिहार के विभिन्न गांवों का दौरा किया. इस दौरान केवीके हेड डॉ आरके तिवारी के नेतृत्व में टीम ने एक सक्रिय स्वयं सहायता समूह से मुलाकात कर कृषि को बहुत ही बारीकी के साथ अध्ययन किया जो स्थानीय स्तर पर टोफू का उत्पादन कर रहा है. टीम के साथ आये निफ्टेम फैकल्टी सदस्यों एवं कृषि विज्ञान केंद्र के अधिकारियों ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से किये जा रहे कार्य की सराहना की.

केवीके हेड के साथ टीम की सदस्य.

उन्हें प्रशिक्षण, मूल्यवर्धन तकनीक व उत्पादन को बड़े स्तर पर बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया. विशेषज्ञों ने समूह को संरक्षित पैकेजिंग, मानक संचालन प्रक्रिया, स्वच्छता व बाजार से बेहतर जुड़ाव के संबंध में उपयोगी सुझाव भी दिये. स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने बताया कि टोफू की मांग स्थानीय बाजार में लगातार बढ़ रही है. जबकि संसाधनों की कमी के कारण वे बड़े स्तर पर उत्पादन नहीं कर पा रही हैं. निफ्टेम टीम ने उनको पंजीकरण, ब्रांडिंग, लेबलिंग व लघु उद्यम पंजीकरण जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी जानकारी दी. निफ्टेम टीम ने किसान की पहल की सराहना करते हुए कहा कि सोलर आधारित प्रौद्योगिकी और मिलेट प्रसंस्करण ग्रामीण उद्यमिता को नई दिशा देने में सक्षम हैं.

Prabhat Khabar-27-11-2025

भास्कर 28.11.25 पेज 16

कृषि • आत्मा सीतामढ़ी से पहुंचे किसानों के लिए वैज्ञानिक विधि द्वारा मशरूम की खेती पर तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण

मशरूम के विभिन्न व्यंजन बनाने में बिहार सबसे अव्वल, बाजार में भी अधिक डिमांड : डॉ. रत्नेश

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में आत्मा सीतामढ़ी से पहुंचे किसानों के लिए वैज्ञानिक विधि द्वारा मशरूम की खेती पर तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का उद्घाटन प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. रत्नेश कुमार झा सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। प्रशिक्षण सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. रत्नेश कुमार झा ने कहा की संपूर्ण भारत में भोजन करने वाले विधि विधान में बिहार सबसे अव्वल नंबर पर आता हैं। बिहार के प्रायः घरों में खास तौर से बनाएं गए तरह तरह के विभिन्न व्यंजनों का सेवन लोग करते है। इन व्यंजनों में खासकर मशरूम से जुड़े व्यंजनों की एक अलग पहचान हैं। उन्होंने कहा कि शुद्ध व शाकाहारी मशरूम की सब्जी अगर अच्छे से बनाया जाएं तो इसकी तुलना कभी भी मांसाहार नही कर सकता है। खेती बिना खेत के रूप में अपनी पहचान बना चुका मशरूम अब फाइव स्टार होटलों से लेकर गांव कस्बों में भी काफी फेमस हो चुका हैं। किसान मशरूम की खेती को अपने घर के अंदर करके भी मशरूम का सेवन आसानी से कर सकते है। उन्होंने कहा कि आजकल औसधीय मशरूम की मांग बढ़ गई हैं। किसान एक झोपड़ी में भी औसधीय मशरूम की खेती कर बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के साथ-साथ अच्छा आय भी प्राप्त कर सकते है। उन्होंने कहा की अब मशरूम के बिक्री की भी चिंता किसानों को नही करनी पड़ती हैं। किसानों का जो मशरूम नहीं बिक पाता हैं किसान उसे ड्रायर के सहयोग से सुखौता बनाकर उसका पाऊडर बना लेते हैं। इतना ही नही कई किसान इस पाउडर से मशरूम के विभिन्न उत्पादों का निर्माण कर अच्छा आय भी प्राप्त कर रहे है। इन किसानों को बाजारों की चिंता नही करनी पर रही हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ.आरके झा।

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए चल रहा काम

उन्होंने कहा कि मशरूम की खेती खासकर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को सशक्त बनाने का काम कर रही है। मंच संचालन करते हुए प्रशिक्षण के कोऑर्डिनेटर डॉ. विनीता सतपति ने कहा की मशरूम उत्पादन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका काफी आम हैं। मशरूम में काफी गुण भरे हैं जिससे इसे बहुत ही गुणकारी माना जाता है। उन्होंने कहा कि किसान इस प्रशिक्षण के माध्यम से अपना तकनीकी ज्ञान वर्धन कर अपना फार्म लगाकर मशरूम उत्पादन करते हुए अपने आप को सबल बना सकते हैं। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए वैज्ञानिक डॉ. फूलचंद ने कहा कि प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण में प्राप्त किए गए ज्ञान को हर हाल में धरातल पर उतारने का काम करें। मौके पर कई वैज्ञानिक, कर्मी, किसान आदि मौजूद थे।

कृषि विभाग अंतर्गत आत्मा समस्तीपुर के तत्वावधान में आयोजन

जन कृषि कल्याण चौपाल में रबी की वैज्ञानिक तकनीक से खेती पर जोर

भास्कर न्यूज | विभूतिपुर

कृषि विभाग अंतर्गत आत्मा समस्तीपुर के तत्वावधान में विभूतिपुर प्रखंड के गंगौली मंदा पंचायत में गुरुवार को जन कृषि कल्याण चौपाल का भव्य और सफल आयोजन किया गया। चौपाल में बड़ी संख्या में किसानों ने हिस्सा लिया और कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुखिया मनोज कुमार ने की। उन्होंने किसानों से केंद्र एवं राज्य सरकार की कृषि योजनाओं का पूर्ण लाभ उठाने की अपील की, ताकि उनकी आय में वृद्धि हो सके। चौपाल की विधिवत शुरुआत सहायक तकनीकी प्रबंधक सत्यप्रकाश सिंह ने की। उन्होंने चौपाल की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए, रबी मौसम में अपनाई जाने वाली वैज्ञानिक तकनीकों के महत्व पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला।

चौपाल कार्यक्रम में मौजूद किसान व अन्य।

चौपाल में उपस्थित विभागीय पदाधिकारियों ने किसानों को तकनीकी और योजनागत जानकारी से अवगत कराया। प्रखंड उद्यान पदाधिकारी सतेंद्र कुमार ने उद्यान निदेशालय की योजनाओं, जैसे फल एवं सब्जी उत्पादन प्रोत्साहन और पौधरोपण कार्यक्रम, की जानकारी दी। उन्होंने उद्यान क्षेत्र में उपलब्ध अनुदानों का लाभ लेने पर जोर दिया। प्रखंड तकनीकी प्रबंधक शशि रंजन ने आत्मा योजना के उद्देश्यों, किसान प्रशिक्षण कार्यक्रमों, प्रदर्शनों और तकनीकी सहयोग की विशेषताओं को विस्तार से बताया। साथ ही उन्होंने किसानों को आत्मा से जुड़ने के फायदे गिनाए। वहीं कृषि समन्वयक मुकेश रंजन ने कृषि विभाग की प्रमुख योजनाएं,कृषि यांत्रिकीकरण, बीज अनुदान, मृदा परीक्षण और फसल अवशेष प्रबंधन की जानकारी दी। उन्होंने किसानों को योजनाओं में आवेदन करने की प्रक्रिया से भी अवगत कराया।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 30 नवंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्राय: साफ रहेगा। इस दौरान मौसम शुष्क रहेगा। इस अवधि में अधिकतम तापमान 25 से 27 व न्यूनतम 12 से 14 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
28 नवंबर	26.0	13.0
29 नवंबर	26.5	13.0
	दरभंगा	
28 नवंबर	26.5	13.0
29 नवंबर	26.5	14.0
	पटना	
28 नवंबर	28.2	15.8
29 नवंबर	28.2	15.8

डिग्री सेल्सियस में

DAinik Jagran 28-11-2025

वर्तमान में मशरूम स्वरोजगार का एक बेहतर विकल्प : डा. झा

प्रशिक्षण को संबोधित करते प्रसार शिक्षा निदेशक एवं प्रशिक्षणार्थी • जागरण

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा विभाग में मशरूम उत्पादन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि निदेशक प्रसार शिक्षा डा. रत्नेश कुमार झा ने कहा कि मशरूम की खेती अन्य कार्यों के साथ-साथ आसानी से की जा सकती है। इसके उत्पादन में महिलाओं का योगदान बहुत अहम हो सकता है। आज पूरे देश में बिहार मशरूम उत्पादन में नंबर वन है। इसका पूरा श्रेय मशरूम उत्पादक किसान एवं वैज्ञानिकों की नवीनतम तकनीक पर निश्चित है। मशरूम उत्पादन व इससे जुड़ा व्यवसाय स्वरोजगार का बेहतर विकल्प है। यह कुपोषण दूर करने के साथ आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाता है। इससे जुड़े कार्यों

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा विभाग में मशरूम उत्पादन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित

को गति देने में विभाग और सरकार हर संभव सहयोग में जुटा है। जरूरत है इसके वैज्ञानिक तकनीक को सीखकर प्रायोगिक रूप से जमीन पर उतारने की। इसमें यह प्रशिक्षण काफी लाभ पहुंचाएगा। मशरूम के गुणवत्तायुक्त प्रोडक्ट निर्माण और मार्केटिंग की दिशा में निरंतर कार्य करने की जरूरत है। विज्ञानी डा. एसएन सिंह ने कहा कि मशरूम गुहेदार खाने योग्य फफूंद है। प्रशिक्षण आयोजक डा. विनीता शतपथी ने कहा कि मशरूम फार्मिंग काफी तेजी से बढ़ रहा है। धन्यवाद वैज्ञानिक डा. फूलचंद ने दिया।

Dainik Jagran 28-11-2025

वैज्ञानिक विधि से करें मशरूम की खेती

प्रशिक्षण

- विवि में वैज्ञानिक विधि से मशरूम उत्पादन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण
- मशरूम उत्पादन व इससे जुड़ा व्यवसाय स्वरोजगार का बेहतर विकल्प

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा (डीईई) डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि मशरूम उत्पादन व इससे जुड़ा व्यवसाय स्वरोजगार का बेहतर विकल्प है। यह कुपोषण दूर करने के साथ आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाता है। इसमें यह प्रशिक्षण काफी लाभ पहुंचायेगा। वे बुधवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में चयनित किसान प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था वैज्ञानिक विधि से मशरूम की खेती विषय पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का।

कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में संबोधित करते निदेशक प्रसार शिक्षा व अन्य।

वैज्ञानिक डॉ.एसएन सिंह ने कहा कि मशरूम गुद्देदार खाने योग्य फफूंद है। प्रशिक्षण आयोजक डॉ विनीता शतपथि ने कहा कि मशरूम फार्मिंग काफी तेजी से बढ़ रहा है। धन्यवाद वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने दिया।

गेहूं बुआई के लिए जीरो टिलेज वरदान : डॉ तिवारी

प्रत्यक्षण दिखाते वैज्ञानिक .

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सभागार में जीरो टिलेज से गेहूं बुआई विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया. अध्यक्षता करते हुए केंद्र के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ आरके तिवारी ने कहा कि यह प्रशिक्षण का सत्र खासतौर से प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए रखा गया है. यह प्रशिक्षण विषय वस्तु विशेषज्ञ इंजीनियर बिनीता कश्यप ने आयोजित किया. इसमें मुख्य रूप से रेड्डी फाउंडेशन के सभी कम्युनिटी फैसिलिटेटर ने भाग लिया. इस प्रशिक्षण में सभी प्रतिभागियों को जीरो टिलेज मशीन के द्वारा गेहूं की बुवाई के बारे में तकनीकी जानकारी प्रदान की गई. इसके विभिन्न भागों एवं इसके बीज एवं खाद दर का निर्धारण के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा इस तकनीक पर किये गये कार्यों एवं अनुभवों को बताया गया. यह किस प्रकार किसानों के लिए लाभकारी है इसके बारे में चर्चा की गई. जलवायु परिवर्तन की दौर में बदलते परिवेश पर असरदार होने के लिए यह तकनीकी बहुत ही महत्वपूर्ण है. वैज्ञानिकों ने बेहतर अनुसंधान के बावजूद माना कि अभी भी हमें इस विषय पर कार्य करने की आवश्यकता है.

Prabhat Khabar 28-11-2025

ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ाने की जरूरत : सिंह

वैज्ञानिकों के साथ निफ्टम के छात्र.

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सभागार में निफ्टेम कुंडली एवं कृषि विज्ञान केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में मशरूम प्रसंस्करण पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में ग्रामीण युवाओं, किसानों एवं डॉ. रेड्डी फाउंडेशन के सदस्यों ने सक्रिय भागीदारी दर्ज की. शुरुआत करते हुए मृदा वैज्ञानिक सुमित कुमार सिंह ने कहा कि ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ाने की जरूरत है. मशरूम उत्पादन में आवश्यक सावधानियों तथा गुणवत्ता संरक्षण पर विशेषज्ञ दृष्टिकोण प्रस्तुत किये. इसके उपरांत डॉ नितिन कुमार ने मशरूम प्रसंस्करण की तकनीकों, मूल्य संवर्धित उत्पादों सूखे मशरूम, मशरूम पाउडर, अचार आदि सहित कृषि आधारित उद्यमिता में इनकी संभावनाओं पर विस्तृत प्रस्तुति दी. विशेषज्ञों ने बताया कि मशरूम एक शीघ्र नष्ट होने वाला उत्पाद है. प्रसंस्करण तकनीक अपनाने से इसकी शेल्फ लाइफ बढ़ाई जा सकती है. किसानों व युवाओं के लिए नये उद्यम स्थापित किये जा सकते हैं. केवीके प्रमुख डॉ. आरके तिवारी ने निफ्टेम कुंडली की टीम एवं डॉ. रेड्डी फ़ाउंडेशन का आभार व्यक्त किया. कहा कि ऐसे कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल विकास, उद्यमिता संवर्धन व आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं.

सोनपुर मेला में स्टाल लगा उजियारपुर का नाम रौशन कर रहे किसान जितेंद्र

उजियारपुर. जैविक कॉरिडोर योजना अंतर्गत बिहार राज्य मिशन एवं किसान जागृति स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड अकहा के अध्यक्ष किसान जितेन्द्र कुमार सिंह ने सोनपुर मेला में स्टॉल लगाकर समस्तीपुर जिले के उजियारपुर का नाम रौशन किया है. सोनपुर मेला में पांच साल से स्टाल लगा रहे हैं. उन्हें कई बार पुरस्कृत भी किया गया है. पटना गांधी मैदान में आयोजित बिहार दिवस के अवसर पर प्रथम पुरस्कार दिया गया. उन्होंने बताया कि जैविक खेती से सब्जियों का उत्पादन कर समस्तीपुर, दलसिंहसराय, पटना सहित अन्य शहरों में बेचते हैं. किसानों को जैविक खेती से होने वाले फायदे से भी उन्हें अवगत कराते हैं.

सोनपुर मेला में स्टाल लगाये उजियारपुर का किसान.

किसानों को जैविक खेती करने की सलाह भी देते हैं. उन्होंने कहा कि जिला कृषि पदाधिकारी डा सुमित सौरभ, अस्सिटेंट डायरेक्टर अमित कुमार, प्रखंड कृषि पदाधिकारी जैविक पीयूष राज, किसान जगदीश सिंह, यशवंत कुमार का सहयोग भी समय समय पर मिलता रहता है.

Prabhat Khabar 28-11-2025

कैंपस अलर्ट

प्रोटीनयुक्त मशरूम सर्वोत्तम व्यंजन : डॉ झा

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

पूसा. प्रोटीनयुक्त मशरूम विभिन्न दाल व सब्जियों का विकल्प बनकर सर्वोत्तम व्यंजन के रूप में प्रख्यात हो चुका है. मशरूम का उत्पादन घर के अंदर झोला टांगकर सभी मौसम में संभव है. यह बातें डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मशरूम उत्पादन में वैज्ञानिक विधि विषय पर आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण सत्र के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कही. उन्होंने कहा कि मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में मुख्य रूप से प्रशिक्षण के दौरान सैद्धांतिक से ज्यादा लाभकारी प्रायोगिक सत्र होता है.फसल अवशेष का भरपूर उपयोग कर गेहूं के भूसा से किसान कम लागत में ज्यादा लाभ प्राप्त कर सकते हैं. वैज्ञानिक डॉ एसएन सिंह ने कहा कि खाने योग्य गुद्देदार फफूंद को ही मशरूम कहते हैं. अखाद्य मशरूम को टोड स्टूल कहते हैं. संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक सह कोर्स कॉर्डिनेटर वैज्ञानिक डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि मशरूम उत्पादन ट्राइबल क्षेत्र से शुरू होकर आज सम्पूर्ण देश में ग्रामीण महिलाओं की जीवकोपार्जन का साधन बन गया है. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने किया.

Prabhat Khabar 28-11-2025

भास्कर 29/11/25 पेज 15

कार्यक्रम • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक, वैज्ञानिकों को माडल बनाने की आवश्यकता

विवि के कई केवीके देश के टाप टेन कृषि विज्ञान केंद्रों में है शामिल : कुलपति

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में प्रसार शिक्षा परिषद की नवमी व दो दिवसीय बैठक शुक्रवार को आयोजित की गई। बैठक में प्रसार शिक्षा सलाहकार परिषद के सदस्य पद्मश्री राजकुमारी देवी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व उपमहानिदेशक प्रसार शिक्षा डा. पी दास, पूर्व सहायक महानिदेशक डॉ. रणधीर कुमार सिंह, प्रगतिशील किसान योगेन्द्र कुमार पाठक एवं प्रगतिशील किसान राघव शरण सिंह आदि ने शिरकत की। इस अवसर पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय में प्रसार

पुसा फोटो-1- किसान व वैज्ञानिकों को संबोधित करते कुलपति।

के क्षेत्र में केवीके का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कई केवीके देश के टाप टेन कृषि विज्ञान केंद्रों में शामिल हैं लेकिन वे चाहते है कि सभी सोलह केवीके देश भर के टाप 20 कृषि विज्ञान केंद्रों में शामिल हो जाएं। उन्होंने कहा कि प्रसार के क्षेत्र में वैज्ञानिकों को माडल बनाने की आवश्यकता है ताकि पूरे देश में उस प्रसार के माडल का उपयोग हो सके। उन्होंने कहा कि विकसित कृषि संकल्प अभियान के दौरान बहुत सारे किसानों से संबंधित समस्यायें उभर कर आयी है उन सब पर काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रसार के क्षेत्र में वार्षिक लक्ष्य तय करने पर भी जोर दिया और कहा कि तीन महीने में इन लक्ष्यों का मूल्यांकन वैज्ञानिक स्वयं करें और छह महीने में विश्वविद्यालय स्तर पर मूल्यांकन होना चाहिए। प्रसार शिक्षा के पूर्व उपमहानिदेशक डॉ. पी दास ने कहा कि पूसा का महत्व कृषि शिक्षा में वैसा ही है जैसा अयोध्या का है। यहीं से कृषि शिक्षा की शुरुआत हुई । उन्होंने कहा कि पूसा एक तीर्थस्थल है। उन्होंने कहा कि प्रसार शिक्षा के तौर तरीके अब काफी पुराने हो गए हैं। नये दौर में प्रसार शिक्षा को भी समावेशी बनाना होगा। उन्होंने कहा कि मल्टी डिसिप्लिनरी एप्रोच के साथ कृषि प्रसार शिक्षा को बदलना होगा।

किसानों की समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की, समाधान बताया

उन्होंने अपने जीवन का उदाहरण दिया और बताया कि कैसे वे पहले पाई पाई को तरसती थी और जब आगे बढ़ने का संकल्प लिया तो सभी बाधाओं को पार कर लिया। शिक्षा परिषद के किसान सदस्यों ने किसानों की समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश झा ने विश्वविद्यालय प्रसार के क्षेत्र में चल रहे नवोन्मेषी कार्यक्रमों की जानकारी दी और अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ सौरव त्रिवेदी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ विनिता सत्पथी ने किया। कार्यक्रम के दौरान डीन पीजीसीए डा. मयंक राय, स्कूल आफ़ एग्री-बिजनेस एंड रुरल मैनेजमेंट के निदेशक डॉ. रामदत्त, डॉ. महेश कुमार, डॉ. कुमार राज्यवर्धन, अटारी पटना के प्रतिनिधि, केवीके के वैज्ञानिक, शिक्षक एवं पदाधिकारी मौजूद थे।

अत्याधुनिक तकनीक के बारे में किसानों को जागरूक करना होगा

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अनुसंधान के स्तर पर काफी अच्छा कार्य किया है। उन सबको किसानों तक इस तरह से पहुंचाने की आवश्यकता है कि किसान उसका उपयोग कर लाभ कमा सके। उन्होंने कहा कि कम पानी के इस्तेमाल और कार्बन फ्री कृषि जैसे अत्याधुनिक तकनीक के बारे में भी विस्तार शिक्षा के माध्यम से किसानों को जागरूक करना होगा। उन्होंने कहा कि पर्यावरण , पानी और मिट्टी की सुरक्षा आवश्यक है तभी सस्टेनेबल कृषि का विकास हो सकेगा। पद्म श्री राजकुमारी देवी उर्फ किसान चाची ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को वे गुरूजन की तरह से समझती है। यहीं से सीखकर उन्होंने अपने कारोबार का विस्तार किया। उन्होंने कहा कि गरीबी के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार हमारी सोच है। यदि हम ठान ले तो कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 3 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ एवं मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 25-27 डिग्री एवं न्यूनतम 12 से 14 डिग्री के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
29 नवंबर	27.4	13.0
30 नवंबर	28.0	13.0
	दरभंगा	
29 नवंबर	28.0	13.0
30 नवंबर	28.0	14.0
	पटना	
29 नवंबर	29.2	15.8
30 नवंबर	29.2	15.8

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 29/11/25 पेज 4

प्रसार के क्षेत्र में विज्ञानियों को माडल बनाने की जरूरत, वार्षिक लक्ष्य तय करने पर जोर

प्रसार शिक्षा परिषद की दो दिवसीय नवमी बैठक में किसानों की समस्या उभर कर सामने आई

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में प्रसार शिक्षा परिषद की नवमी बैठक शुक्रवार से शुरू हुई। दो दिनों तक चलने वाली बैठक के पहले दिन प्रसार शिक्षा सलाहकार परिषद की सदस्य पद्मश्री राजकुमारी देवी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व उपमहानिदेशक प्रसार शिक्षा डा. पी दास, पूर्व सहायक महानिदेशक डा. रणधीर कुमार सिंह, प्रगतिशील किसान योगेन्द्र कुमार पाठक एवं प्रगतिशील किसान राघव शरण सिंह ने भाग लिया। अध्यक्षीय भाषण में कुलपति डा. पी एस पांडेय ने कहा कि प्रसार के क्षेत्र में केवीके का महत्वपूर्ण योगदान है। विश्वविद्यालय के कई केवीके देश के टाप टेन कृषि विज्ञान केन्द्र में शामिल हैं लेकिन वे चाहते है कि सभी केवीके का देश भर में और विकास हो और बेहतर कृषि विज्ञान केन्द्र में शामिल हों। उन्होंने कहा कि प्रसार के क्षेत्र में विज्ञानियों को माडल बनाने की आवश्यकता है ताकि पूरे देश में उस प्रसार के माडल का उपयोग हो सके। उन्होंने कहा कि विकसित कृषि संकल्प अभियान के दौरान बहुत सारे किसानों से संबंधित समस्याएं उभर कर आयी है उन सब पर काम करने की आवश्यकता है।

- छह केवीके देश भर के टाप 20 कृषि विज्ञान केन्द्र में शामिल हों
- अनुसंधान के स्तर पर विश्वविद्यालय ने किया बेहतर

कार्यक्रम संबोधित करते अतिथि • जागरण

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति, मुख्य अतिथि डॉक्टर दास एवं वैज्ञानिकगन • जागरण

उन्होंने प्रसार के क्षेत्र में वार्षिक लक्ष्य तय करने पर भी जोर दिया और कहा कि तीन महीने में इन लक्ष्यों का मूल्यांकन स्वयं करें और छह महीने में विश्वविद्यालय स्तर पर मूल्यांकन होना चाहिए। प्रसार शिक्षा के पूर्व उपमहानिदेशक डा. पी दास ने कहा कि पूसा का महत्व कृषि शिक्षा में वैसा ही है जैसा अयोध्या का है। यहीं से कृषि शिक्षा की शुरूआत हुई। पूसा एक तीर्थस्थल है। कहा कि प्रसार शिक्षा के तौर तरीके अब काफी पुराने हो गए हैं। नए दौर में प्रसार शिक्षा को भी समावेशी बनाना होगा। कहा कि मल्टी डिसिप्लीनरि एप्रोच के साथ कृषि प्रसार शिक्षा को बदलना होगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अनुसंधान के स्तर पर काफी अच्छा कार्य किया है। उन सबकों किसानों तक इस तरह से पहुंचाने की आवश्यकता है कि किसान उसका उपयोग कर लाभ कमा सके। उन्होंने कहा कि कम पानी के इस्तेमाल और कार्बन फ्री कृषि जैसे अत्याधुनिक तकनीक के बारे में भी विस्तार शिक्षा के माध्यम से किसानों को जागरूक करना होगा। उन्होंने कहा कि पर्यावरण, पानी और मिट्टी की सुरक्षा आवश्यक है तभी सस्टेनेबल कृषि का विकास हो सकेगा। पद्म श्री राजकुमारी देवी उर्फ किसान चाची ने कहा कि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों को वे गुरूजन की तरह से समझती है। यहीं से सीखकर उन्होंने अपने कारोबार का विस्तार किया। कहा कि गरीबी के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार हमारी सोच है। यदि हम ठान लें तो कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने अपने जीवन का उदाहरण दिया और बताया कि कैसे वे पहले पाई पाई को तरसती थी और जब आगे बढ़ने का संकल्प लिया तो सभी बाधाओं को पार कर लिया। प्रसार शिक्षा परिषद के किसान सदस्यों ने किसानों की समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम के दौरान प्रसार शिक्षा निदेशक डा. रत्नेश झा ने विश्वविद्यालय प्रसार के क्षेत्र में चल रहे नवोन्मेषी कार्यक्रमों की जानकारी दी और अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डा. सौरव त्रिवेदी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. विनिता सत्पथी ने किया। डीन पीजीसीए डा. मयंक राय, स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रुरल मैनेजमेंट के निदेशक डा. रामदत्त, डा. महेश कुमार, डा. कुमार राज्यवर्धन, अटारी पटना प्रतिनिधि, केवीके के वैज्ञानिक, शिक्षक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान 29/11/25 पेज 6

केवीके के मॉडल का राष्ट्रीय स्तर पर बनाये पहचान : वीसी

कार्यक्रम

- बहु विषयक दृष्टिकोण अपनाना समय की मांग : पूर्व डीडीजी
- विवि में दो दिवसीय प्रसार शिक्षा परिषद की 9वीं बैठक शुरू

कृषि विवि के विद्यापति सभागार में दीप प्रज्वालीत कर बैठक का उद्घाटन करते वीसी, पूर्व डीडीजी व एडीजी।

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि विवि से जुड़े सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों को टॉप 16 में शामिल कराना लक्ष्य है। इसके लिए केन्द्रों को उसकी खास विशेषताओं के लिए मॉडल के रूप में विकसित करने की जरूरत है। ताकि राष्ट्रीय स्तर पर उसकी एक खास पहचान हो। इसके लिए टीम का सामूहिक प्रयास जरूरी है।

इसकी मोनिटरिंग 3 व 6 महीने पर की जायेगी। वे शुक्रवार को विवि के विद्यापति सभागार में आयोजित दो दिवसीय प्रसार शिक्षा परिषद की 9वीं बैठक के उद्घाटन सत्र में बोल रहे थे। वीसी ने कहा कि अब वन टीम वन टास्क के रूप में कार्य कर चुनौतियों को दूर करने का समय है। वहीं भारत सरकार के मिशन मोड परियोजनाओं को किसानों के साथ मिलकर कार्यों को गति देने एवं केन्द्र के कृषि विकास क्षेत्रों में किये गये कार्यों से सामाजिक परिवर्तन के आकलन करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जिले के कृषि से जुड़े इन्फॉरमेशन एवं केन्द्रों से जुड़े प्रत्येक चीजों का डेटा सेट संग्रह जरूरी है। पूर्व उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ.पीके दास ने कहा कि कृषि शोध शिक्षा की जननी पूसा तीर्थस्थल के रूप में है। कृषि के बदलते समय में प्रसार शिक्षा को समावेशी बनाने की जरूरत है। इसके लिए बहु विषयक दृष्टिकोण अपनाना समय की मांग है। पूर्व एडीजी डॉ.रंधीर सिंह ने कहा कि विवि, सरकार व किसानों की बीच की अहम कड़ी केवीके है।

अटारी के प्रधान वैज्ञानिक ने कहा कि केवीके किसानों के लिए पीलर के रूप में कार्य करता है। जरूरत है आपसी समन्वय को सशक्त करने का। पदमश्री राजकुमारी देवी उर्फ किसान चाची ने कहा कि किसानों को खेती के साथ प्रोडक्ट के विकास पर भी कार्य करने व संगठित होकर (एफपीओ) कार्य करना समय की मांग है। मौके पर किसान प्रतिनिधि योगेन्द्र कुमार पाठक व राघव शरण दास ने भी अपने विचार व्यक्त किये। स्वागत निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. रत्नेश कुमार झा, संचालन डॉ. सौरभ तिवारी एवं धन्यवाद डॉ. विनिता सत्यपथी ने किया। मौके पर डीन-डायरेक्टर व वैज्ञानिक मौजूद थे।

प्रभात खबर 29/11/25 पेज 4

कृषि परियोजना के नियमित मूल्यांकन की जरूरत : वीसी

संबोधित करते कुलपति डॉ पीएस पांडेय.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में दो दिवसीय प्रसार शिक्षा परिषद की नौ वीं बैठक हुई. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि किसी भी कृषि परियोजना का नियमित मूल्यांकन एवं निगरानी करने की जरूरत होती है. यह दोनों प्रक्रियाएं मिलकर किसी परियोजना या कार्यक्रम के प्रदर्शन व परिणामों की प्रगति को मापने व सुधारने के लिए व्यवस्थित रूप से डेटा एकत्र करने के लिए उपयोग की जाती है. विवि एवं केवीके के वैज्ञानिकों को जिम्मेदारी से किसानों के साथ कार्य करने की जरूरत है. कुछ केवीके को छोड़ कर बाकी सभी केवीके में वैज्ञानिकों की कठिन मेहनत से अव्वल तरीके के साथ तकनीकों का प्रचार-प्रसार करते हुए किसानों के खेत में शोध की जा रही है. कुलपति डॉ पांडेय ने केवीके के अध्यक्षों एवं उनके वैज्ञानिकों की टीम के कार्यों की सराहना की. कहा कि हमारे वैज्ञानिक कृषि विज्ञान को भलीभांति समझते हैं. जरूरत है सिर्फ बेहतर रूप से मॉनिटरिंग करने की. मेहनत सभी केवीके एक समान ही करते पर परिणाम में अंतर आ जाता है. उसे दूर करने की जरूरत है.

प्रभात खबर 29/11/25 पेज 4

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में बैठक

केंद्रीय कृषि विवि पूसा किसानों के लिए तीर्थ स्थल जैसा : डॉ दास

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित विद्यापति सभागार में प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक शुरु हुई. प्रसार शिक्षा सलाहकार परिषद के सदस्य पद्मश्री राज कुमारी देवी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व उप महानिदेशक प्रसार शिक्षा डा पी. दास, पूर्व सहायक महानिदेशक डॉ रणधीर कुमार सिंह, प्रगतिशील किसान योगेन्द्र कुमार पाठक एवं राघव शरण सिंह ने शिरकत की. मुख्य अतिथि डॉ दास ने कहा कि पूसा का महत्व कृषि शिक्षा में वैसा ही है जैसा अयोध्या का है. यहीं से कृषि शिक्षा की शुरुआत हुई. पूसा किसानों के लिए एक तीर्थस्थल जैसा है. उन्होंने कहा कि प्रसार शिक्षा के तौर-तरीके अब काफी पुराने हो गये हैं. नये दौर में प्रसार शिक्षा को भी समावेशी बनाना होगा. उन्होंने कहा कि मल्टी डिसिप्लिनरी एप्रोच के साथ कृषि प्रसार शिक्षा को बदलना होगा. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अनुसंधान के स्तर पर काफी अच्छा कार्य किया है. उन सबको किसानों तक इस तरह से पहुंचाने की आवश्यकता है कि किसान उसका उपयोग कर लाभ कमा सके. उन्होंने कहा कि कम पानी के इस्तेमाल और कार्बन फ्री कृषि जैसे अत्याधुनिक तकनीक के बारे में भी विस्तार शिक्षा के माध्यम से किसानों को जागरूक करना होगा. पद्म श्री किसान चाची ने कहा कि विश्वविद्यालय से सीखकर उन्होंने कारोबार का विस्तार किया. प्रसार शिक्षा परिषद के किसान सदस्यों ने किसानों की समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की. प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने विश्वविद्यालय प्रसार के क्षेत्र में चल रहे नवोन्मेषी कार्यक्रमों की जानकारी दी. संचालन डॉ सौरव त्रिवेदी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ विनिता सतपथी ने किया. डीन पीजीसीए डा मयंक राय, स्कूल आफ एग्री-बिजनेस एंड रुरल मैनेज़मेंट के निदेशक डॉ रामदत्त, डॉ महेश कुमार, डॉ सत्यप्रकाश, डॉ कुमार राज्यवर्धन थे.

दीप जलाकर उद्घाटन करते डॉ पी. दास.

भास्कर 30/11/25 पेज 16

शिक्षा • छात्रों को औद्योगिक स्तर पर अनाज भंडारण की तकनीकी बताई गई

शैक्षणिक-प्रायोगिक भ्रमण पर निकले विवि के छात्रों ने गुणवत्ता नियंत्रण की ली जानकारी

भास्कर न्यूज | पूसा

अडानी एग्री लॉजिस्टिक के परिसर में पहुँचकर जानकारी लेते छात्र।

केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के बीटेक (कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी) से जुड़े पांचवें सेमेस्टर के कुल 36 छात्र शैक्षणिक-प्रायोगिक क्षेत्र भ्रमण पर निकले। छात्रों के इस शैक्षणिक-प्रायोगिक भ्रमण का आयोजन प्रसंस्करण एवं खाद्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा किया गया था। छात्रों के भ्रमण कार्यक्रम का मार्गदर्शन व नेतृत्व विभागाध्यक्ष एवं संकाय सदस्यों ने किया। भ्रमण पर निकले छात्रों को खाद्य भंडारण, प्रसंस्करण एवं गुणवत्ता नियंत्रण के अलावे वास्तविक औद्योगिक प्रक्रियाओं से अवगत कराया गया। सबसे पहले छात्र पुसा के श्रीरामपुर गाँव में अवस्थित अडानी एग्री लॉजिस्टिक के परिसर में पहुंचकर वहां आधुनिक साइलो यानी अन्न भंडारण प्रणाली को गंभीरता से देखा व जाना। अडानी एग्री लॉजिस्टिक के मैनेजर ई. दीपक झा ने अन्न भंडारण के दौरान टेम्परेचर मेंटेन रखने सहित अन्य बिंदुओं पर छात्रों को जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को आधुनिक साइलो भंडारण प्रणाली से संबंधित प्रत्येक चरण की विस्तृत जानकारी प्रदान की जिनमें प्रमुखत: रेल एवं ट्रक से अनाज की अनलोडिंग प्रक्रिया, अनाज को साइलो तक ले जाने वाली कन्वेयर प्रणाली, क्लीनिंग, ग्रेडिंग एवं लिफ्टिंग तकनीक, अनाज की नमी मापने की विधि, फ्यूमिगेशन प्रक्रिया एवं क्वालिटी कंट्रोल की विधियाँ आदि शामिल हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को उपरोक्त सभी प्रक्रियाओं का ऑन-साइट डेमो भी करके दिखाया जिससे छात्रों को औद्योगिक स्तर पर अनाज भंडारण की तकनीकी कार्यप्रणालियों का वास्तविक अनुभव प्राप्त हुआ। इसके बाद छात्र लक्ष्मी फ्लोर मिल समस्तीपुर के परिसर में पहुँचे। यहां छात्रों ने प्लांट में चल रहे गेहूँ आधारित उत्पादों का निर्माण की जानकारी ली। लक्ष्मी फ्लोर मिल के कर्मचारी रौशन कुमार द्वारा छात्रों को प्रोक्योरमेंट एवं लिफ्टिंग की प्रक्रिया के साथ-साथ गेहूं से बनने वाले विभिन्न उत्पाद जैसे आटा, मैदा, सूजी एवं चोकर के उत्पादन चरण, उत्पादों की गुणवत्ता परीक्षण एवं मानक और उत्पादों की ग्रेडिंग एवं पैकेजिंग प्रक्रिया के बारे में जानकारी ली।

भास्कर 30/11/25 पेज 14

कार्यक्रम • प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक, किसानों की आशा के अनुरूप वैज्ञानिकों को कार्य करने की जरूरत

पूसा विवि से किसानों को अधिक अपेक्षा

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में चल रहे प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक के दूसरे दिन विश्वविद्यालय से जुड़े 16 कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रधान वैज्ञानिकों ने अपने अपने केंद्र में किये जा रहे अनुसंधान कार्यो पर विस्तार से चर्चा की। सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के हेड ने बीज उत्पादन, किसानों को दिए जा रहे प्रशिक्षण, ऑन फार्म ट्रायल के साथ- साथ विश्वविद्यालय के तकनीकों का किसानों के खेतों में और कृषि विज्ञान केंद्र में परिसर में किये जा रहे प्रदर्शन के बारे में डाटा सहित जानकारी दी। इसके अतिरिक्त सभी प्रधान वैज्ञानिकों ने अपने अपने केंद्र के सक्सेस स्टोरी, रिसर्च पब्लिकेशन और भविष्य के प्लान के बारे में भी वरीय वैज्ञानिक और किसानों को बताया। कार्यक्रम के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ.पीएस पांडेय ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े वैज्ञानिक एवं कर्मचारी अच्छा कार्य कर रहे हैं लेकिन विश्वविद्यालय से किसानों की बहुत ज्यादा आशा और अपेक्षा है। हमें उनकी आशाओं के अनुरूप कार्य करने के लिए और अधिक तेजी से और अपनी पूरी शक्ति के साथ कार्य को करना होगा। उन्होंने विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों की प्रस्तुति के दौरान विभिन्न सुझाव भी दिये। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में शामिल हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व उपमहानिदेशक प्रसार शिक्षा डा.पी दास ने सभी प्रधान वैज्ञानिकों से उनकी प्रस्तुति के दौरान डाटा को लेकर विभिन्न सवाल पूछे और डाटा को नियंत्रित तरीके से इकट्ठा करने और नोट करने को लेकर विभिन्न सुझाव भी दिये। उन्होंने पानी के मात्रात्मक उपयोग और कार्बन उत्सर्जन से संबंधित डाटा की जानकारी इकट्ठा करने की भी सलाह दी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व सहायक महानिदेशक डॉ. रणधीर सिंह ने कहा कि सभी कृषि विज्ञान केंद्रों की कुछ न कुछ सफलता की कहानी होती है। उन सफलता की कहानियों को प्रकाशित करना चाहिए ताकि उससे दूसरे कृषि वैज्ञानिक और किसानों को प्रेरणा मिल सके। उन्होंने कहा कि इन्ही सक्सेस स्टोरी से प्रसार के नये माडल भी बन सकते हैं। निदेशक प्रसार शिक्षा ने विश्वविद्यालय के शाट टर्म , मिड टर्म और लांग टर्म लक्ष्यों के बारे में विस्तार से वैज्ञानिकों को जानकारी दी और कहा कि किसानों को मूल में रखकर इन लक्ष्यों को पूरा करने का अथक प्रयास करने की जरूरत है। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डा. सौरभ त्रिवेदी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संजीव कुमार ने किया। मौके पर डीन एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग डॉ.राम सुरेश वर्मा, डीन कम्युनिटी साइंस डा. उषा सिंह, डॉ.महेश कुमार, डॉ.सुधीर पासवान समेत विभिन्न वैज्ञानिक, शिक्षक एवं पदाधिकारी व प्रगतिशील किसान मौजूद थे।

वैज्ञानिक व किसानों को संबोधित करते कुलपति व कार्यक्रम में मौजूद वैज्ञानिक व किसान।

आईएएस ने विवि के नए छात्रों का बढ़ाया उत्साह

भास्कर न्यूज|पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में दीक्षारंभ के तीसरे एवं चौथे दिन विश्वविद्यालय के छात्रों को कृषि उद्गम से जुड़े एवं कृषि से पढाई के बाद आईएएस बने अधिकारियों ने संबोधित किया। आईएएस अधिकारियों ने छात्रों के साथ कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा भी की। सिंजेंटा से जुड़े विशेषज्ञ मनोज कुमार, रवि कुमार एवं अंकिता ने छात्रों के साथ इंडस्ट्री की जरूरतों के विषय में विस्तार से चर्चा की। इसके बाद डा.रामदत्त, डॉ.मयंक राय एव डॉ.राकेश मणि शर्मा ने विभिन्न विषयों पर छात्रों के साथ संवाद किया। डॉ.राकेश मणि शर्मा ने शिक्षा एवं कृषि से संबद्ध विषयों जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता एवं अनुसंधान में उसके नैतिक उपयोग पर विस्तृत चर्चा की। इसके अलावा उन्होंने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं माई लाइब्रेरी आन फिंगर टिप्स के बारे में भी नए छात्रों को जानकारी दी। मोतिहारी के पूर्व डीएम एवं वर्तमान में सड़क निर्माण के प्रबंध निदेशक शीर्षत कपिल (आइएएस) ने विद्यार्थियों के साथ यूपीएससी में अपनी सफलता की कहानी छात्रों के साथ साझा की। उन्होंने छात्रों के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी दिये। इसके अलावे डॉ. पीपी सिंह, डॉ.पी पी श्रीवास्तव एवं कानून के विशेषज्ञ अभिनव श्रीवास्तव ने विद्यार्थियों के साथ संवाद किया।

दैनिक जागरण 30/11/25 पेज 4

कार्बन उत्सर्जन से संबंधित जानकारियां जुटाएं वैज्ञानिक

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में प्रसार शिक्षा परिषद की ओर से आयोजित दो दिवसीय बैठक का हुआ समापन

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में प्रसार शिक्षा परिषद की दो दिवसीय बैठक शनिवार को संपन्न हुई। बैठक में विश्वविद्यालय से जुड़े 16 कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिकों ने अपने-अपने केंद्र में किये जा रहे कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इसमें बीज उत्पादन, किसानों को प्रशिक्षण, आन फार्म ट्रायल के साथ-साथ विश्वविद्यालय की तकनीक के बारे में बताया। इसके अतिरिक्त सभी प्रधान वैज्ञानिकों ने अपने-अपने केंद्र के सक्सेस स्टोरी, रिसर्च पब्लिकेशन और भविष्य के प्लान के बारे में भी जानकारी दी। समापन समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय से किसानों की बहुत ज्यादा आशा और अपेक्षा है। हमें उनकी आशाओं के अनुरूप कार्य करने के लिए और अधिक तेजी से अपनी पूरी शक्ति के साथ कार्य करना होगा। उन्होंने विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों की प्रस्तुति के दौरान विभिन्न सुझाव दिए। बाह्य विशेषज्ञ के रूप में शामिल हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व उप महानिदेशक प्रसार शिक्षा डा. पी दास ने सभी प्रधान वैज्ञानिकों से उनकी प्रस्तुति के दौरान डाटा को लेकर विभिन्न सवाल पूछे और डाटा को नियंत्रित तरीके से इकट्ठा करने को लेकर विभिन्न सुझाव दिए।

उन्होंने पानी के मात्रात्मक उपयोग और कार्बन उत्सर्जन से संबंधित डाटा की जानकारी इकट्ठा करने की भी सलाह दी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व सहायक महानिदेशक डा. रणधीर सिंह ने कहा कि सभी कृषि विज्ञान केन्द्र की कुछ न कुछ सफलता की कहानी होती है, उन सफलता की कहानियों को प्रकाशित करना चाहिए ताकि उससे दूसरे किसानों को प्रेरणा मिल सके। उन्होंने कहा कि इन्हीं सक्सेस स्टोरी से प्रसार के नए मॉडल भी बन सकते हैं। निदेशक प्रसार शिक्षा ने विश्वविद्यालय के शार्ट टर्म, मिड टर्म और लांग टर्म लक्ष्यों के बारे में विस्तार से वैज्ञानिकों को जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसानों को मूल में रखकर इन लक्ष्यों को पूरा करने का अथक प्रयास करने की जरूरत है। मंच संचालन डा. सौरभ त्रिवेदी ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डा. संजीव कुमार ने किया। मौके पर डीन एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग डा. राम सुरेश वर्मा, डीन कम्युनिटी साइंस डा. उषा सिंह, डा. महेश कुमार, डा. सुधीर पासवान आदि उपस्थित रहे।

बैठक को संबोधित करते अतिथि • जागरण

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के मौसम विभाग की ओर से 3 दिसंबर तक का मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ एवं मौसम शुष्क रहेगा। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 25-27 डिग्री एवं न्यूनतम 12 से 14 डिग्री के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
30 नवंबर	27.4	13.0
01 दिसंबर	28.0	13.0
	दरभंगा	
30 नवंबर	28.0	13.0
01 दिसंबर	28.0	14.0
	पटना	
30 नवंबर	29.2	15.8
01 दिसंबर	29.2	15.8

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 30/11/25 पेज 6

दीक्षांत समारोह | **कृषि विवि में मोतिहारी के पूर्व डीएम व वर्तमान में सड़क निर्माण के प्रबंध निदेशक शीर्षत कपिल ने छात्रों से किया संवाद**

छात्रों को आईएएस ने सीखाए लक्ष्य प्राप्ति के गुर

पूसा, निसं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में जारी दीक्षारंभ समारोह के दौरान शनिवार को मोतिहारी के पूर्व डीएम व वर्तमान में सड़क निर्माण के प्रबंध निदेशक शीर्षत कपिल ने छात्रों को यूपीएससी में अपनी सफलता की कहानी साझा किया। इस दौरान उन्होंने छात्रों से सीधा संवाद भी किया। मौके पर सिंजेंटा से जुड़े विशेषज्ञ मनोज कुमार, रवि कुमार एवं सुश्री अंकिता ने छात्रों के साथ इंडस्ट्री की जरूरतों पर विस्तार से जानकारी दी। बाद में विवि के निदेशक डॉ.रामदत्त, डॉ मयंक राय, डॉ. पीपी सिंह, डॉ. पीपी श्रीवास्तव एवं कानून के विशेषज्ञ अभिनव श्रीवास्तव ने विभिन्न विषयों पर छात्रों के साथ संवाद किया। डॉ. राकेश मणि शर्मा ने शिक्षा एवं कृषि से संबद्ध विषयों व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता, अनुसंधान में उसके नैतिक उपयोग पर विस्तृत चर्चा की। इसके अलावा उन्होंने विवि के पुस्तकालय एवं माई लाइब्रेरी आन फिंगर टिप्स के बारे में जानकारी दी।

शनिवार को कृषि विवि में दीक्षारंभ समारोह के दौरान मौजूद छात्र व अन्य वक्ता।

छात्रों ने सीखे गेहूं के उत्पाद निर्माण व प्रबंधन के गुर

पूसा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि अभियंत्रण एवं प्रौधौगिकी महाविद्यालय, पूसा के छात्रों ने लक्ष्मी फ्लोर मिल, समस्तीपुर का भ्रमण किया। इस दौरान मिल के रौशन कुमार ने छात्रों को गेहूं से बनने वाले उत्पादों के निर्माण एवं प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी। इनमें मुख्य प्रोक्योरमेंट एवं लिफ्टिंग की प्रक्रिया, आटा, मैदा, सूजी एवं चोकर के उत्पादन, गुणवत्ता परीक्षण, मानक, उत्पादों की ग्रेडिंग एवं पैकेजिंग प्रक्रिया के बारे व्यावहारिक जानकारी दी गई।

प्रभात खबर

कैंपस अलर्ट

30/11/25
पेज 4

सात नये क्लोन को जोनल वैरायटी ट्रायल में शामिल

एसआरआइ के निदेशक के साथ वैज्ञानिक.

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित ईख अनुसंधान संस्थान में विकसित सात नये क्लोन को एआईसीआरपी जोनल वैरायटी ट्रायल में शामिल करने का प्रस्ताव दिया गया था. जहां सभी क्लोन स्वीकार कर लिये गये हैं. यह संस्थान व यूनिवर्सिटी के लिए खुशी की बात है. हमारे सात अर्ली 04 और मिडलेट 03 क्लोन का राष्ट्रीय स्तर पर ज्यादा पैदावार, ज्यादा सुक्रोज कंटेंट व बायोटिक रेजिस्टेंस के लिए परीक्षण किया जायेगा. ताकि उन्हें गन्ने पर के उत्तर मध्य और उत्तर पूर्वी क्षेत्र में रिलीज और खेती के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा. यह जानकारी संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने दी.

शिक्षित होने व शिक्षा ग्रहण करने में अंतर : कपिल

मौजूद पदाधिकारी व छात्र- छात्राएं.

पूसा. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में दीक्षारंभ के क्रम में छात्रों को कृषि उद्यम व पढाई के बाद आइएएस बने अधिकारियों ने संबोधित किया. सिंजेंटा से जुड़े विशेषज्ञ मनोज कुमार, रवि कुमार एवं अंकिता ने छात्रों के साथ इंडस्ट्री की जरूरतों पर चर्चा की. डा रामदत्त , डॉ मयंक राय व डॉ राकेश मणि शर्मा ने विभिन्न विषयों पर छात्रों के साथ संवाद किया. मोतिहारी के पूर्व डीएम शीर्षत कपिल ने विद्यार्थियों के साथ यूपीएससी में अपनी सफलता की कहानी साझा की. उनके विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिये. उन्होंने छात्र-छात्राओं से कहा कि शिक्षित होना व शिक्षा को ग्रहण करने में बहुत बड़ा अंतर है. डॉ पीपी सिंह, डॉ पीपी श्रीवास्तव एवं कानून के विशेषज्ञ अभिनव श्रीवास्तव ने भी विद्यार्थियों के साथ संवाद किया.

प्रभात खबर 30/11/25

अनुसंधान के लक्ष्यों को पूरा करने की जरूरत : डॉ सिंह

संबोधित करते पूर्व महा निदेशक डॉ रणधीर सिंह.

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में प्रसार शिक्षा परिषद की नौ वीं बैठक में कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिकों ने केंद्र में किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी. बीज उत्पादन, किसान प्रशिक्षण, ऑनफार्म ट्रायल के साथ तकनीकों का किसानों के खेत में व कृषि विज्ञान केन्द्रों में प्रदर्शन के बारे में डाटा दिया. संबोधित करते हुए कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि किसानों की अपेक्षा के अनुरूप कार्य करने के लिए पूरी शक्ति से काम करना होगा. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व उप महानिदेशक प्रसार शिक्षा डा पी. दास ने पानी के मात्रात्मक उपयोग व कार्बन उत्सर्जन से संबंधित डाटा की जानकारी इकट्ठा करने की सलाह दी. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व सहायक महानिदेशक डॉ रणधीर सिंह ने कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र की कुछ न कुछ सफलता की कहानी होती है. उसे प्रकाशित करना चाहिए. ताकि उससे दूसरे किसानों को प्रेरणा मिल सके. निदेशक प्रसार शिक्षा ने विश्वविद्यालय के शाट, मिड व लांग टर्म लक्ष्यों के बारे में वैज्ञानिकों को जानकारी दी. कहा कि किसानों को मूल में रखकर लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास करने की जरूरत है. संचालन डा सौरभ त्रिवेदी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ संजीव कुमार ने किया. डीन एग्रीकल्चर इं. डॉ रामसुरेश, डीन कम्युनिटी साइंस डा उषा सिंह, डॉ महेश कुमार, डॉ सुधीर पासवान आदि मौजूद थे.

औद्योगिक प्रक्रिया से अवगत कराने पर जोर

गंगापुर स्थित अडानी ग्रुप में विवि के छात्र-छात्राएं. प्रभात खबर 30/11/25 पेज 4

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के बीटेक छात्र-छात्राओं को गंगापुर के श्रीरामपुर अयोध्या में अवस्थित अडानी ग्रुप का क्षेत्र भ्रमण कराया गया. विभागाध्यक्ष एवं संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को खाद्य भंडारण, प्रसंस्करण एवं गुणवत्ता नियंत्रण की वास्तविक औद्योगिक प्रक्रियाओं से अवगत कराने के लिए आयोजित किया गया. अडानी एग्री लॉजिस्टिक, श्रीरामपुर अयोध्या आधुनिक साइलो भंडारण प्रणाली यह भ्रमण ई. दीपक झा (मैनेजर) के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ. उन्होंने छात्रों को आधुनिक साइलो भंडारण प्रणाली से संबंधित प्रत्येक चरण की विस्तृत जानकारी दी. लक्ष्मी फ्लोर मिल में गेहूं आधारित उत्पादों का निर्माण लक्ष्मी फ्लोर मिल में रौशन द्वारा विभिन्न उत्पादों के निर्माण एवं प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी गई. एफसीआई में दीप प्रकाश ने पारंपरिक वेयरहाउसिंग प्रणाली की विस्तृत जानकारी दी. संचालन डॉ. विनोद कुमार यादव एवं डॉ. दिनेश रजक के मार्गदर्शन में हुआ.